Written by
Vipul Chauhan
Published by
CoolMitra

Follow writer on Instagram:
@indian_entrepreneur

55 Stubborn People and their Craziness

55 ज़िद्दी महान लोग और उनका हद पार पागलपन

INDEX

#1: Oprah Winfrey	07
#2: Eminem	11
#3: Dwayne Johnson	18
#4: APJ Abdul Kalam Sir	25
#5: Steve Jobs	31
#6: Michael Jackson	38
#7: Bruce Lee	46
#8: Michael Jordan	52
#9: Charlie Chaplin	65
#10. Muhammad Ali	72
#11. Albert Einstein	77
#12. Robert Downey Junior	82
#13. Elon Musk	89
#14. Cristiano Ronaldo	97

#15. Bill Gates 102
#16. Walt Disney 109
#17: Warren Buffett 117
#18. J.K. Rowling 123
#19. Mother Teresa 130
#20. Abraham Lincoln 136
#21. Stephen Hawking 143
#22. Stan Lee 149
#23. Ratan Tata 156
#24. Jeff Bezos 162
#25. Henry Ford 168
#26. Barack Obama 177
#27. Rowan Atkinson (Mr. Bean) 184
#28. Richard Branson 192
#29. Pablo Picasso 199

#30. Colonel Sanders 206

#31. Leonardo Da Vinci 214

#32. Aryabhatta 222

#33. Thomas Alva Edison 229

#34. Nelson Mandela 236

#35. Arnold Schwarzenegger 242

#36. Nikola Tesla 251

#37. Isaac Newton 160

#38. Napoleon Hill 168

#39. Lionel Messi 178

#40. Dalai Lama (14th) 186

#41. Winston Churchill 293

#42. Martin Luther King Junior 301

#43. Pelé 309

#44. Rabindranath Tagore 316

#45. Chandrasekhara Venkata Raman 323

#46. Jack Ma 331

#47. Nick vujicic 337

#48. Mark Zuckerberg 344

#49. Andrew Carnegie 351

#50. Dhiru Bhai Ambani 359

#51. Amancio Ortega 366

#52. Carl Benz 371

#53. Usain Bolt 377

#54. Che Guevara 383

#55. Neil Armstrong 389

#1: Oprah Winfrey

दुनिया की सबसे ताकतवर महिलाओं में से एक Oprah Winfrey का जन्म 1954 में मिसिसिप्पी में एक अविवाहित महिला के घर हुआ। उनकी माँ ने उन्हें बचपन में अपनी नानी के घर छोड़ दिया और उनसे दूर चली गई, जहाँ Oprah का उनके रिश्तेदारों ने Rape किया जिसकी

वजह से Oprah 14 वर्ष की उम्र में ही प्रेग्नेंट हो गयी और कुछ समय बाद बच्चे की मौत गर्भ में ही हो गई।

हाई स्कूल के दौरान उन्होंने एक रेडियो कंपनी में काम किया और 19 वर्ष की उम्र में एक स्थानीय इवनिंग शो में को-एंकर बन गई, उसके बाद वह दिन में प्रसारित होने वाले एक लोकल चैनल के शो से जुड़ गई।

कुछ समय बाद उन्हें एक न्यूज़ चैनल में न्यूज़ एंकर की नौकरी मिली और 1978 में दी पीपल टॉक शो को होस्ट करने का मौका मिला। इसी शो में काम करने के दौरान उन्हें अपने जीवन के असली मक़सद का अहसास हुआ और वो अपने सपनों को पूरा करने शिकागो चली गई।

कुछ सालों की मेहनत के बाद आखिरकार 1986 में उन्होंने "The Oprah Winfrey Show" की शुरुआत की, ये वही Show था जिसने Oprah की जिंदगी बदल दी। Oprah ने इस शो में पहले महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर बात

की और फिर सामाजिक, चिकित्सा, राजनीतिक, मैडिटेशन और फ़िल्मी जगत के विषय भी इसमें शामिल किए।

इस शो में दुनिया की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ शामिल हुई और Oprah का जीवन सक्सेस की बुलंदियों को छू गया, इसी के साथ उन्होंने हार्पो प्रोडक्शन नाम की कंपनी की शुरुआत की। 2013 में उन्हें Presidential Medal Of Freedom (अमेरिका का सर्वोच्च नागरिक सम्मान) से सम्मानित किया गया। 2020 में फ़ोर्ब्स के अनुसार उनकी कुल संपत्ति $2.6 बिलियन है।

Oprah ने जीवन के बुरे दौर से निकलकर खुद को प्रभावशाली बनाया और अपने दुख और अपने साथ बीती हुई बुरी घटनाओं पर ध्यान न देकर, अपने सपनों को पूरा करने में लगी रही और खुद को एक प्रभावशाली व्यक्तित्व

बनाया और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाकर सफलता की बुलंदियों तक पहुँची।

“Be thankful for what you have; you'll end up having more. If you concentrate on what you don't have, you will never, ever have enough.”
- Oprah Winfrey

#2: Eminem

Marshall Bruce Mathers III यानी Eminem को सारी दुनिया Rap God के नाम से जानती हैं। उनका जन्म संत Joseph Missouri में सिंगल मदर के घर हुआ, जब उनका जन्म हुआ तब उनकी माँ की उम्र केवल 17 साल थी।

Eminem ने अपने पिता को कभी नहीं देखा, पैसों की कमी के कारण बचपन मे ही उनकी माँ को कई घर बदलने पड़े जिसकी वजह से वो ठीक तरह से लोगों से मिल नही सके इसलिए उनके कोई दोस्त नहीं बन पाए और उनका बचपन अकेले ही बीता, आखिर में कई शहरों की ठोकर खाने के बाद वो डेट्रॉइट मिशिगन चले गए।

कुछ साल पहले तक अमेरिका में रंग-भेद का मसला कुछ ज़्यादा ही था, वहाँ काले लोगों के साथ बहुत भेद-भाव किया जाता था और Eminem जहाँ गए थे वहाँ काले लोगो की पॉपुलेशन ज़्यादा थी इसलिए जैसा काले लोगों के साथ होता था वैसा ही Eminem के साथ भी हुआ।

उनके साथ बहुत बार मारपीट भी हुई, एक बार Angelina Belly नाम की एक लड़की ने उनके साथ इतनी मारपीट की कि Eminem को सिर में बहुत चोट आई और वो कुछ दिनों तक कॉमा में चले गए।

ऐसे इंसिडेंट्स की वजह से काफ़ी कम उम्र में वो डिप्रेशन में चले गए और 9th क्लास में 3 बार फ़ैल हो गए अंत मे उन्होंने पढ़ाई छोड़कर नौकरी करना शुरू कर दी। अपनी कंडीशन के कारण हार मानने से पहले ये बात याद रखना कि पैसों की कमी के कारण Rap God अपने बचपन में Gilbert's Lodge मिशिगन में बर्तन धोने और लोगों की कार वॉश करने का काम भी कर चुके हैं।

जब Eminem टीनएजर थे तो काफ़ी नेगेटिव माहौल, माँ को पैसों को लेकर परेशान देखकर और काले-गोरों से परेशान होने के दौरान उनके अंकल ने उन्हें रैप सोंग्स गाने के लिए मोटिवेट किया जिनका नाम Ronny था। उन्होंने Eminem को एक रैप सॉन्ग का कैसेट गिफ़्ट किया, जिससे उन्हें काफी इंस्पिरेशन मिली लेकिन 1991 में अंकल Ronny ने भी सुसाइड कर लिया जिससे Eminem फिर से टूट गए।

अंकल के जाने के बाद Eminem ने उनकी दी गयी इंस्पिरेशन और मोटिवेशन की आग को अपने दिल में जगाये रखा और काफ़ी सालों की मेहनत के बाद 1996 में उनकी पहली एल्बम Infinite रिलीज़ हुई जो फ्लॉप साबित हुई और उसकी वजह से Eminem ड्रग्स और ऐल्कोहॉल के आदी हो गए और आत्महत्या करने की भी कोशिश की।

उसके ठीक एक साल बाद 1997 में Rap Olympic नाम का एक कंपटीशन हुआ जिसमें उन्होंने परफॉर्म करके 2nd पोजीशन हासिल की और इसी कम्पटीशन की वजह से उन्हें काफ़ी लोग जानने लग गए।

इसी कंपटीशन के बाद Eminem को Dr. Dre की प्रोड्यूस की गई एल्बम बनाने का चांस मिला जिसका नाम Slim Shedy था, जो 1999 में रिलीज़ हुई, जो उस साल

की सबसे हिट Rap एल्बम साबित हुई और वहीं से Eminem ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

बचपन मे Angelina Belly नाम की लड़की ने Eminem के साथ जो मारपीट की उस पर उन्होंने ब्रेन डैमेज नाम का सॉन्ग भी बनाया।

2001 में Eminem ने एक्टर के रूप में "The Wash" नाम की मूवी में भी काम किया और एक्टिंग की दुनिया में भी कदम रखा। फिर 2002 में "8 Mile" में काम किया और आज तक वो 17 फ़िल्म में एक्टर के रूप में काम कर चुके हैं।

उनके ऊपर "The Way I Am" नाम की फ़िल्म भी बनी जो उनकी लाइफ़ पर बेस्ड है जिसमें उनकी ग़रीबी, स्ट्रगल और लाइफ़ में ऊँच- नीच के बारे में बताया हैं।

जिस इंसान ने अपने पिता को कभी नहीं देखा, जिसका बचपन अकेले में बिना दोस्तों के गुज़रा, रेस्टॉरेंट में बर्तन

धोने से लेकर अपनी इंस्पिरेशन की डेथ (Uncle Ronny) तक, कॉमा में जाने से लेकर के drug एडिक्ट तक Eminem की लाइफ़ बहुत चैलेंजेज़ से भरी थी लेकिन, स्ट्रगल और गोल को अचीव करने की चाहत ने आज उन्हें इस लेवल पर पहुँचा दिया कि दुनिया उन्हें उनके फील्ड का God, Rap God कहती हैं।

जिनके नाम पर 15 Grammy अवार्ड्स और 1 Oscar अवार्ड है, जो फ़िल्म और म्युज़िक का सबसे बड़ा अवार्ड है। Eminem आज तक 364 अवार्ड्स के लिए नॉमिनेट हुए है जिसमें से 255 अवार्ड्स उनके नाम पर हैं। Eminem ने 2013 में Rap God सॉन्ग में 6 मिनट 4 सेकंड में 1560 वर्डस गाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।

दोस्तों अगर आपको गोल्स अचीव करने का भूत सवार हो तो जीवन की सारी मुश्किलें एक तरफ़ होती जाती है और आपकी लाइफ़ का असली गोल आपके सामने होता है,

अगर आप बिना शिकायत किये उसकी तरफ़ आगे बढ़ते चले जायें।

"Why Be A King When You Can Be God?"
- Eminem

#3: Dwayne Johnson

एक्टिंग और रेसलिंग की दुनिया मे Dwayne Johnson 'The Rock' ने अपने नाम को कड़ी मेहनत से बनाया हैं। उनके स्ट्रगल की कहानी से आपको बहुत कुछ सीखने को मिलेगा कि कैसी भी मुश्किल सिचुएशन हो अगर आप मेहनत और पेशेंस के साथ किसी काम या प्रोफेशन को

करते हो तो सक्सेस ज़रूर मिलता हैं, शुरुआत में भलेही लोग साथ दे या न दे।

कैसे The Rock खाली जेब से दुनिया के टॉप मोस्ट पेड एक्टर बने?

The Rock का जन्म 2 मई 1972 को कैलिफ़ोर्निया में एक रेसलर फ़ैमिली में हुआ, उनके पिताजी एक प्रोफेशनल रेसलर थे, उनकी फ़ैमिली से काफ़ी सारे लोग रेसलिंग में आ चुके थे, The Rock का जन्म हवाई और न्यूज़ीलैंड में बीता, उसके बाद वो वापस अमेरिका आ गए।

हाई स्कूल के टाइम वो Pennsylvania में फुटबॉल खेलते थे, वो फुटबॉल खेलने में काफ़ी अच्छे थे जिसके चलते उन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ मिआमि में स्कॉलरशिप भी मिली थी।

एक इंटरव्यू में The Rock ने बताया था कि जब वो 14 साल के थे तब तक वो 8 से 9 बार अरेस्ट हो चुके थे

क्योंकि जब वो हवाई में रहते थे तो वहाँ पर आने वाले टूरिस्ट की गोल्ड ज्वेलरी और एक्सपेंसिव बैग चुरा कर भाग जाते थे।

उसी समय के दौरान उन्हें अपना घर भी छोड़ना पड़ा क्योंकि जिस घर मे वो रहते थे उस घर का रेंट ना भरने की वजह से उन्हें घर खाली करने का नोटिस मिला था।

जब Rock 15 साल के थे तब फाइनेंसियल प्रॉब्लम की वजह से उनकी माँ ने नैशविल नाम के हाईवे पर गाड़ियों के आगे कूदकर जान देने की कोशिश की लेकिन जैसे-तैसे Rock वहाँ पहुँच गए और अपनी माँ की जान बचा ली।

1991 में वो यूनिवर्सिटी ऑफ मिआमि के नेशनल चैंपियनशिप टीम में थे, बाद में उन्होंने कैनेडियन फुटबॉल लीग की तरफ़ से खेला, कुछ समय बाद इंजरी के कारण उन्हें फुटबॉल के करियर को भी छोड़ना पड़ा।

उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया कि 1995 में जब इंजरी के कारण उन्हें फुटबॉल के करियर को छोड़ना पड़ा तब उनके पॉकेट में सिर्फ़ 7 डॉलर थे।

बढ़ती मुश्किलों के कारण उन्होने ठान लिया कि एक दिन वो सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँच कर दिखायेंगे और उन्होने ऐसा किया भी आज उनकी प्रोडक्शन कंपनी के नाम 7 bucks एंटरटेनमेंट हैं और वो उसी दिन के गुस्से या ज़िद्द के कारण है जिस दिन उनके जेब मे सिर्फ़ 7 डॉलर थे।

फिर The Rock ने रेसलिंग में जाने का सोचा लेकिन उनके पिता नहीं चाहते थे कि वो रेसलिंग में जाए लेकिन The Rock की रेसलिंग में जाने की इच्छा को देखते हुए उनके पिता ने उनको ट्रैन किया।

लंबे टाइम की कड़ी मेहनत के बाद आखिर 4 नवंबर 1996 को The Rock ने WWE का कॉन्ट्रैक्ट साइन किया और डेब्यू किया, स्टार्टिंग में उनका नाम Rock Maivia था।

WWE में जब उन्होंने शुरुआत की थी तो लोग उस टाइम Dwayne को पसंद नहीं करते थे लेकिन 14 फरवरी 1997 को Rock ने जब Triple-H को इंटरकॉन्टिनेंटल चैंपियनशिप में हराया तब से उनका नाम टॉप प्लेयर्स में आने लग चुका था लेकिन फिर से 28 अप्रैल 1997 को एक इंजरी के कारण उन्हें काफ़ी समय तक रेस्ट लेना पड़ा, लेकिन हार ना मानते हुए और तकलीफों को अनदेखा करते हुए 2000 में Royal Rumble जीत कर WWE में वापसी की।

1999 में फर्स्ट टाइम उन्होंने "That 70's Show" में उनके ही पिता का रोल करके एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा।

हॉलीवुड में The Rock की एंट्री 2004 में "The Scorpion King" नाम की मूवी से हुई जिसमें काम करने के लिए उन्हें 5.5 मिलियन डॉलर मिले, जो किसी

दडेब्यू एक्टर के द्वारा सबसे ज़्यादा चार्ज किया गया था । उसके बाद 'The Mummy Returns, The Rundown, Be Cool, The Game Plan और Fast and Furious' जैसी फ़िल्म्स में काम करके अपने नाम को बड़ा किया।

ऐसा नहीं है कि जिसे बचपन से ही अपने ड्रीम का पता हो वही सक्सेस की ऊँचाई तक पहुँचता है, The Rock को पता तक नहीं था कि उन्हें करना क्या है, वो बस अपने काम को इतना हार्ड वर्क और डेडिकेशन के साथ करते थे कि सक्सेस झक मारकर उनके पास आ गयी।

The Rock बचपन से डिसाइड नहीं कर पा रहे थे कि आखिर उन्हें करना क्या है क्योंकि उनका इंटरेस्ट पहले फुटबॉल में था, लेकिन बाद में वो FBI/CBI जॉइन करना चाहते थे इसलिए उन्होंने फिजियोलॉजी और क्रिमिनोलॉजी

में पढ़ाई की, उसके बाद उन्होंने रेसलिंग की दुनिया मे कदम रखा और अभी वो जाने-माने एक्टर हैं।

The Rock 2016 के हाईएस्ट पेड एक्टर भी रहे हैं और 2016 में दुनिया के सबसे प्रभावशाली लोगों की लिस्ट में भी The Rock का नाम है। हार्ड वर्क की बात करे तो The Rock सुबह 4 बजे उठकर जिम जाकर अपने दिन की शुरुआत करते हैं, उनके अकोर्डिंग सक्सेस का एक ही मंत्र है बहुत सारा हार्ड वर्क, बिना रुके एक दिन की छुट्टी लिए बिना हार्ड वर्क करना।

“Success isn't always about 'Greatness', it's about consistency. Consistent, hard work gains success. Greatness will come.”
- Dwayne Johnson

#4: APJ Abdul Kalam Sir

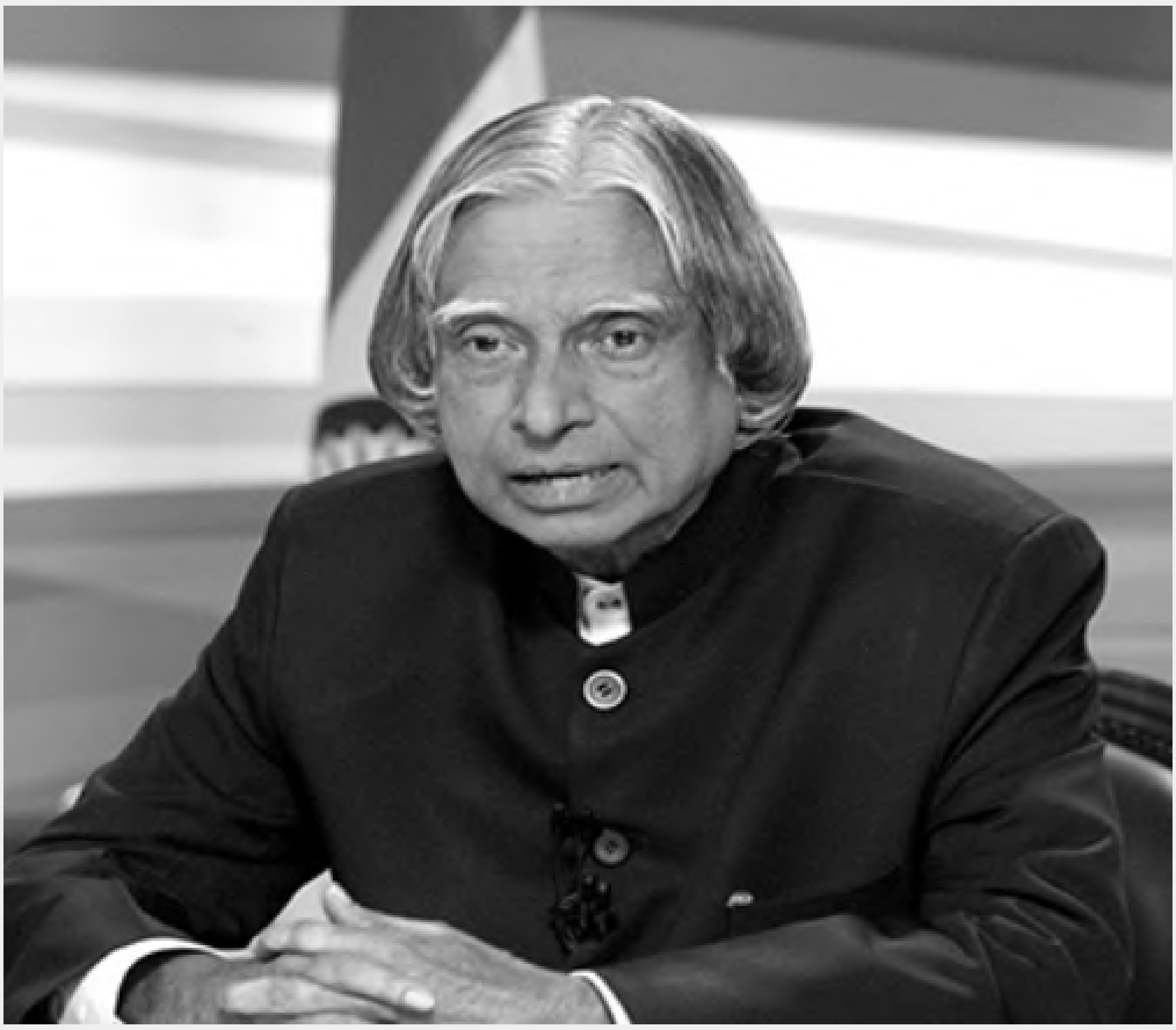

इंडिया को न्यूक्लियर पॉवर बनाने में अगर किसी का रोल है तो वो हैं इंडिया के 11th प्रेज़िडेंट Dr. APJ Abdul Kalam, जो 'The Missile Man Of India' के नाम से भी जाने जाते हैं। ग़रीब और अनपढ़ परिवार में पैदा होना किसी को महान बनने से नहीं रोक सकता यह हमें Dr. APJ Abdul Kalam से सीखने को मिलता है और इसी

के साथ उनकी लाइफ़ स्टोरी से हमें और भी बहुत कुछ सीखने को मिलता हैं।

सिम्पलीसिटी, हार्डवर्क, देशप्रेम की भावना आपको किस मुक़ाम तक पहुँचा सकती हैं, एक महान देश का प्रेज़िडेंट तक बना सकती हैं। महान बनने के बाद भी उस सिम्पलीसिटी को बनाये रखना हमें कलाम साहब से सीखने को मिलता हैं। उन्होंने कभी अपने पद का एक परसेंट भी फ़ायदा नहीं उठाया और अपनी पूरी ज़िंदगी देश को मज़बूत बनाने में दे दी।

उन्होंने जितनी पॉवरफुल और आक्रामक मिसाइल बनाई वो खुद पर्सनली बहुत शांत और सरल स्वभाव के इंसान थे। Dr. APJ Abdul Kalam का जन्म एक बहुत ग़रीब परिवार में हुआ, जहाँ 5 भाई-बहन में से एक कलाम साहब भी थे।

उनके पिता नाव चलाते थे जिससे उनका घर चलता था, वो पढ़ाई में ज़्यादा ख़ास नहीं थे लेकिन सपने बहुत बड़े थे और देश के लिए कुछ करने की आग उनके अंदर बचपन से ही थी, उनमें नई चीज़ों को जानने की भूख बचपन से थी।

ग़रीबी की वजह से वो अपनी पढ़ाई का खर्चा अख़बार बाट कर उसमें से पैसे जोड़कर उठाते थे, उन्होंने अपनी प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई अपने गाँव की सरकारी स्कूल से की और हाई स्कूल की पढ़ाई श्वाट्र्ज हायर सेकेंडरी स्कूल से की जो उनके पड़ोस के गाँव में थी।

1954 में उन्होंने St. Joseph कॉलेज से फिजिक्स में ग्रेजुएशन की फिर मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एयरोस्पेस की पढ़ाई करने के लिए पहुँच गए, जहाँ पढ़ाई के लिए उनके पास फीस नहीं थी।

तब उन्हें स्कोलरशिप के लिए कॉलेज से एक प्रोजेक्ट दिया गया लेकिन किसी रीज़न की वजह से वो उसे पूरा नहीं कर

सके, लेकिन Kalam की ज़रूरत और उनके फ़ाइटर जेट को लेकर इंटरेस्ट को देखते हुए प्रोफ़ेसर ने उन्हें 3 दिन का एक्स्ट्रा टाइम दिया जिसे उन्होंने 3 दिनों की दिन-रात की मेहनत से पूरा कर दिया।

इतनी मेहनत के बाद उन्हें स्कॉलरशिप मिल गयी और 1960 में उन्होंने वहाँ से इंजीनियरिंग पूरी की। उनकी लाइफ़ के हर मोड़ पर मुश्किलें थी जिसे उन्होंने डेडिकेशन और मेहनत से हल किया।

उसके बाद उन्हें हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड में नौकरी मिल गयी, कुछ टाइम नौकरी करने के बाद वो पायलट बनने की चाहत लिए देहरादून चले गए, जहाँ 22 लोगों में सिर्फ़ 8 लोगो को चुना गया था और वहाँ उनका एडमिशन नहीं हो सका। फिर वो दिल्ली चले गए जहाँ वो DRDO में साइंटिस्ट की पोजीशन पर जुड़े और हेलिकॉप्टर्स डिज़ाइनिंग का काम किया।

1969 में उन्हें वहाँ से ISRO भेज दिया गया, जहाँ वो प्रोजेक्ट डायरेक्टर के पद पर रहे।

1980 में सरकार का एडवांस मिसाइल प्रोग्राम शुरू हुआ जहाँ उन्होंने "अग्नि" और "पृथ्वी" जैसी मिसाइल बनाई।

1998 में पोखरण न्यूक्लियर टेस्ट में कलाम साहब का मैन रोल था, इसके बाद वो स्पेस प्रोग्राम और मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम से जुड़े और वहीं से उन्हें 'Missile Man Of India' के नाम से जाना जाने लगा।

APJ Abdul Kalam कभी राजनीति से नहीं जुड़े लेकिन फिर भी वो 18 जुलाई 2002 को देश के सबसे बड़े पद पर पहुँचे।

उन्होंने India 2020 (A Vision For The New Millennium) नाम की बुक भी लिखी, जिसके अनुसार वो इंडिया को जिस रूप में नए डिकेड में देखना चाहते थे उस बारे में लिखा है।

कलाम साहब हमेशा देश के युवा और उनके बेहतर फ़्यूचर के अलावा कोई बात नहीं करते थे, प्रेज़िडेंट के पद से रिटायर होने के बाद वो IIT हैदराबाद में प्रोफेसर के रूप में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में रहे।

इसके बाद प्रेज़िडेंट और भारत रत्न से सम्मानित होने के बाद अपनी लाइफ़ के अंत तक पूरा समय स्टूडेंट्स के बेहतर फ़्यूचर के लिए दे दिया, उनकी मौत भी बच्चों को लेक्चर देने के दौरान (IIM शिलांग) में हुई थी।

"You have to dream before your dreams can come true." - APJ Abdul Kalam

#5: Steve Jobs

जब भी दुनिया के महान इंटरप्रेन्योर का नाम लिया जाता है, तो Steve Jobs का नाम शीर्ष श्रेणी में आता है, आज वो हमारे बीच में नहीं है लेकिन उनकी प्रभावशाली सोच के नतीजे आज भी हमारे बीच उन्हें ज़िंदा रखे हुए है।

Steve Jobs का जन्म एक अविवाहित दंपति के घर हुआ जो पढ़े-लिखे नही थे, उनकी माँ चाहती थी कि Steve को पढ़े-लिखे माँ-बाप मिले जो Steve को भी पढ़ा लिखा सके लेकिन Steve को Paul और Kalra Jobs ने गोद ले लिया जो खुद पढ़े-लिखे नही थे और ग़रीब भी थे। जब Steve बड़े हुए तो उन्होंने Reed कॉलेज में दाखिला लिया और समय पर फ़ीस न देने के कारण उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया और कुछ समय के लिए वो घर भी छोड़कर चले गए।

उसी दौरान वो अपने दोस्तों के घर सोते थे और काँच की बोतल बेच कर और मंदिर के लंगर का खाना खाकर अपनी ज़िंदगी गुज़ार रहे थे।

उसी दौरान वो उनके कॉलेज के दोस्त Daniel Kottke के कहने पर अध्यात्म की खोज के लिए भारत में नीब करौरी बाबा के आश्रम (कैंची धाम, नैनीताल) गए और 7

महीने भारत में रहकर फिर से अमेरिका चले गए। अमेरिका जाकर वो Atari नाम की गेमिंग कंपनी में जॉब पर लग गए और उसी दौरान उनकी प्रेमिका से उन्हें लड़की हुई जिसका नाम Lisa है जिनके नाम पर बाद में कंप्यूटर भी बना।

काफ़ी समय डिप्रेशन और ग़रीबी से जुझने के दौरान वो एक दिन उनके दोस्त Steve Wozniak के घर पहुँचे, जहाँ उन्हें एक कंप्यूटर दिखाई दिया और Steve उस कंप्यूटर से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने अपनी कंपनी बनाने की ठान ली और 1 अप्रेल 1976 को Steve Jobs, Steve Wozniak और उनके साथियों ने मिलके Jobs के घर के गेराज में कंप्यूटर बनाने स्टार्ट किये और पहले कंप्यूटर का नाम Apple One रखा गया।

Apple One की सफलता के बाद उन्होंने 1977 में Apple 2 का निर्माण किया जो इतना सफल साबित हुआ

कि 1993 तक बिका और तब तक 50 लाख से ज़्यादा कंप्यूटर बिक गए थे और उन्होंने सफलता की ऊँचाइयों को छू लिया।

1979 में उन्होंने Mouse बनाया और ग्राफ़िकल यूज़र इंटरफ़ेस का निर्माण किया, 1983 में Lisa नाम का कंप्यूटर बनाया जो असफल रहा, जिससे उन्हें काफ़ी निराशा मिली। असफलता के पीछे अहम कारण ये था कि वो मार्केटिंग पर ध्यान नही दे पा रहे थे, तभी उनकी मुलाकात John Sculley से हुई जो पेप्सिको के मार्केटिंग हेड थे।

Jobs ने Scully को Apple में हायर किया, ताकि वे मार्केटिंग का काम संभाल सके और वहीं Jobs एक विज़िनरी थे, इसी बीच 1985 मे दोनों की सोच में फ़र्क के कारण मतभेद इतने बढ़ गए कि बोर्ड मीटिंग में Jobs को Apple के प्रमुख पद से हटा दिया गया।

ऐसी निराशाजनक स्थिति में टूटने की बजाय उन्हें उसमें भी संभावनाए नज़र आई और उन्होंने Apple का एक शेयर अपने पास रखकर बाकी सारे शेयर बेच दिए और उन पैसों से NeXT नाम की कंपनी की शुरुआत की तथा Pixar Animations के आधे से ज़्यादा शेयर खरीद लिए।

करीब 11 साल बाद 1996 में Apple के पास कोई बेहतर प्रोडक्ट ना होने की वजह से उसकी मार्केट वैल्यू गिरने लगी, वहीं Jobs अपनी कंपनी NeXT में एक बेहतर कंप्यूटर बनाने में लगे हुए थे, तभी Apple ने NeXT को खरीदने का प्रस्ताव रखा और कंपनी को खरीद लिया जिससे Apple को बेहतर कंप्यूटर मिल गया और Steve को अपनी Company वापस मिल गयी।

फिर आने वाले सालो में Jobs ने Ipod, Itunes और Iphone जैसे बेहतर प्रोडक्ट लाकर Apple को दुनिया की सबसे वैल्युएबल कंपनी बना दी।

5 अक्टूबर 2011 को पैंक्रिएटिक कैंसर के चलते Steve Jobs का निधन हो गया।

मेरा व्यक्तिगत रूप से ये मानना है की Jobs के जाने के बाद Apple और उनके प्रोडक्ट्स में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है क्योंकि एक दृढ़ सोच और विज़िनरी का अंत जो हो गया था। वो कम चीज़ों का इस्तेमाल करके बेहतर ज़िन्दगी और साधनों का निर्माण करना जानते थे।

सादगी में सुंदरता देखने का उनका नज़रिया उन्हें बाकी बिज़नेसमैन से अलग करता है, जो मैडिटेशन की देन है, उन्होंने अपनी सोच, कल्पना और इच्छा शक्ति को इतना बढ़ा दिया था कि वे किसी भी चीज़ का परिणाम अपनी सोच से निकाल देते थे। उनके हिसाब से महान बनने का एक ही तरीका था Hippy बने रहो।

"Stay Hungry, Stay Foolish."
- Steve Jobs

#6: Michael Jackson

Michael Jackson ऐसी शख्शियत है जिनको इंट्रोड्यूस करने के लिए शब्द कम पड़ेंगे। शायद ही कोई ऐसा होगा जो Jackson के बारे में नहीं जानता होगा, म्युज़िक में पॉप को एक अलग लेवल पर पहुँचाने वाले Jackson एक सिंगर और एक यूनिक डांसर स्टाइल के लिए जाने जाते थे।

29 अगस्त 1958 को एक क्रेन ऑपरेटर के घर जन्मे Michael अपने भाई-बहनों में 7वें नंबर पर थे। म्युज़िक Jackson के खून में था क्योंकि उनके पिता क्रेन ऑपरेटर तो थे लेकिन वो वहाँ के एक लोकल बैंड फाल्कन में गिटार बजाते थे।

उनकी माँ भी म्युज़िक लवर थी, जिन्होंने उन्हें सिंगिंग सिखाई, Jackson ने 5 साल की उम्र से ही अपने 4 भाइयों के साथ स्टेज पर परफॉर्मेन्स देना शुरू कर दिया था। उसके बाद वो लॉस एंजेलिस में रहने चले गए, जहाँ अपने यूनिक डांस की वजह से वो कम उम्र में ही फ़ेमस हो गए थे।

बचपन की बात करे तो Michael Jackson का बचपन दूसरे बच्चों की तरह बिल्कुल नहीं था, एक किस्सा Michael ने खुद ने बताया था कि उनके पिता Michael के रेहेरसल के दौरान बेल्ट लेकर खड़े रहे थे क्योंकि वो उन्हें

ये सब करने के लिए परमिशन नहीं देते थे, इसी वजह से उनका बचपन पिता के डर के बीच गुज़रा।

Michael जब Oprah Winfrey Show में आये थे तब उन्होंने बताया कि पढ़ाई के बाद Michael जब रिकॉर्डिंग्स के लिए जाते तो पास में एक पार्क में खेलते बच्चों को देखकर वो काफ़ी परेशान हो जाते थे क्योंकि जिस उम्र में उन्हें खेलना था उस उम्र में Michael अपने करियर को बनाने में लग गए थे।

1969 में सिर्फ़ 11 साल की उम्र में Michael ने अपना पहला सॉन्ग "I Want You Back" निकाला जो बहुत हिट साबित हुआ और Michael को उस सॉन्ग से बचपन में ही शुरुआत मिल गयी थी और यही Michael की लाइफ़ का टर्निंग पॉइंट था।

इसके बाद 1970 में "The Love You Save" और "It Will Be There" रिलीज़ हुए, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया।

1975 में Michael एपिक रिकाड्र्स से जुड़ गए और अपने बैंड का नाम Jackson 5 से बदलकर Jackson कर दिया। 1979 में Michael की पहली सोलो एल्बम "Of The Wall" आयी जिसने पिछ्ले सारे रिकाड्र्स तोड़ दिए।

दुनिया भर में उस एल्बम की 7 मिलियन से ज़्यादा कॉपीज़ बिकी और Michael को किंग बनने के और भी करीब ले गयी।

फिर 1982 में Michael की थ्रिलर आयी जो आज तक कि सबसे हिट एल्बम में से एक है, जिसने 11 में से 8 ग्रैमी अवाड्र्स जीते, जो म्युज़िक का सबसे बड़ा अवार्ड है और 20 प्लैटिनम सर्टिफ़िकेट भी जीते, जिसके चलते उन्हें

King Of Pop नाम से बुलाया जाने लगा। 1991 में आई एल्बम Dangerous उस साल की नंबर 1 एल्बम रही, जिसकी वर्ल्डवाइड 20 मिलियन कॉपीज़ बिकी।

बहुत से लोग मानते है कि Michael को अपना काला रंग पसंद नहीं था इसलिए उन्होंने सर्जरी करवा कर अपना रंग बदल दिया लेकिन असल में उनको Vitiligo नाम की स्किन की एक बीमारी थी, उसकी वजह से उन्होंने ऐसा किया था।

Michael की लाइफ़ बचपन में काम करने में निकली इसलिए वो अपना खाली समय बच्चों के साथ ही बिताते थे लेकिन 1994 में उनके यहाँ रुके एक बच्चे के घर वालो ने Michael पर चाइल्ड एब्यूज़ का आरोप लगाया जिसके चलते Michael को उस बच्चें के घर वालो को केस सेटलमेंट के लिए 25 मिलियन डॉलर्स देने पड़े और उस

इंसिडेंट की वजह से Michael कर कैरेक्टर पर एक धब्बा-सा लग गया।

1993 में उन्होंने Elvis Presley की बेटी से शादी की जो 1 साल बाद टूट गयी फिर 1997 में उन्होंने फिर से दूसरी शादी की।

Michael Peter Pan नाम के एक कार्टून से इतने प्रभावित थे कि वो अपने आप को Peter Pan ही मानते थे, जो नेवरलैंड नाम की एक जगह पर रहता था इसलिए उन्होंने 2700 एकड़ की एक जगह ख़रीदी और उसका नाम नेवरलैंड रैंच रख दिया।

वो एक नेचर लवर भी थे और उन्होंने नेवरलैंड के जंगल में ही नेचर नाम का एक सॉन्ग भी लिखा जिसमें नेचर के लिए प्यार की बातें सामने आती हैं।

2006 में उनको बैंक लोन की वजह से नेवरलैंड छोड़ना पड़ा और उसी डेब्ट की वजह से उन्होंने 2009 में

दुनियाभर की 10 जगहों पर कॉन्सर्ट करने का सोचा जिससे उनको लोन चुकाने के लिए पैसे मिल जाये।

उनका पहला शो लंदन में होने वाला था लेकिन उस शो के 20 दिन पहले अचानक कार्डियक अरेस्ट की वजह से माइकल की मौत हो गयी।

वो इतने फ़ेमस थे कि उनकी मौत के बाद 7 जुलाई 2009 को Michael Jackson मेमोरियल ऑर्गनाइज़ हुआ जिसमें 16 लाख से ज़्यादा टिकट बिके।

काइंडनेस की बात की जाए तो Michael Jackson एक बार पेप्सी का विज्ञापन कर रहे थे उसी दौरान उस सेट पर आग लग गई, जिससे Michael के सिर के बाल जल गए लेकिन सिचुएशन को कंट्रोल में रखते हुए Michael ने सेट पर आग से हुए नुकसान को देने की बात की और वहाँ लोगों का दिल जीत लिया।

Michael Jackson की सिंगिंग और डांस आज भी उतना ही फ़ेमस है जितना पहले था, उनके जितना फ़ेमस सिंगर और डांसर शायद ही दुनिया में कोई हुआ होगा। उनकी लाइफ़ से हमें ये ज़रूर सीखने को मिलता है कि मुश्किलें तो हर बड़े इंसान की लाइफ़ में आती हैं, लेकिन उन मुश्किलों के बाद भी अपने लेवल को बरकरार रखने का काम Michale ने कर दिखाया था।

"The greatest education in the world is watching the masters at work."
- Michael Jackson

#7: Bruce Lee

जब भी Martial Arts की बात आती है तो सबसे पहले Bruce Lee को याद किया जाता है, Bruce Lee दुनिया के सबसे बेस्ट Martial Artist में से एक थे। Bruce Martial Artist के साथ एक्टर, प्रोड्यूसर, राइटर और फिलॉसॉफर भी थे।

Bruce की ज़िंदगी काफ़ी कम रही वो सिर्फ़ 32 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह गए लेकिन उनके दिए गए

कॉन्ट्रिब्यूशन ने आज भी उन्हें लोगों के दिलो में ज़िंदा रखा हैं।

Bruce Lee का जन्म 27 नवंबर 1940 को कैलिफ़ोर्निया में हुआ, उनके पिता एक ओपेरा सिंगर थे। Bruce Lee का बचपन होंग कॉन्ग में गुज़रा, मूवीज़ में उनकी एंट्री बचपन से ही हो गयी थी क्योंकि उनके पिता ऑलरेडी उसी लाइन में थे। Bruce Lee पहली बार 1941 में "Golden Gate Girl" मूवी में आये थे तब उनकी उम्र सिर्फ़ 3 महीने थी, 1946 तक Bruce Lee लगभग 20 फ़िल्म्स में चाइल्ड आर्टिस्ट के रूप में आ चुके थे।

Bruce ने Martial Arts की शुरुआत 1953 में की क्योंकि वो चीनी थे और ब्रिटिश लड़के उनको परेशान करते थे, बस ये वजह उनको दुनिया का बेस्ट Martial Arts बनाने के लिए काफ़ी थी, Martial Arts सिख कर वो फिर से अपनी फ़ैमिली के पास अमेरिका चले गए।

यहाँ आकर वो बच्चों को Martial Arts सिखाया करते थे और वहीं उनकी मुलाक़ात Linda Emery से हुई जिनसे बाद में उन्होंने शादी की और वाशिंगटन में उन्होंने खुद का Martial Arts स्कूल खोल दिया, जहाँ वो बच्चों को Martial Arts की ट्रेनिंग देते थे। इसके बाद उन्होंने ओकलैंड और लॉस एंजेलिस में Martial Arts स्कूल खोले।

1958 में होंगकॉन्ग में हुए Cha-Cha डांस के कम्पटीशन में Bruce Lee विनर भी रह चुके थे।

उन्होंने अपनी लाइफ़ में जितने भी काम किये वो सब काम उन्होंने परफेक्शन और मास्टरी के साथ किये और इसके पीछे का प्रमुख कारण उनके काम करने की प्रैक्टिस थी, वो किसी भी काम की हद से ज़्यादा प्रैक्टिस करते थे।

1964 में Bruce ने जब ओकलैंड में अपना कराटे स्कूल खोल तब वहाँ Long Beach International

Karate चैंपियनशिप में उन्होंने वन इंच पंच को फ़ेमस बना दिया। वन इंच पंच में वो किसी भी इंसान को सिर्फ़ एक इंच की दूरी से पंच मारकर बहुत ज़्यादा फ़ोर्स से नुकसान पहुँचा सकते थे। टू फिंगर पुश अप्स भी उन्होंने उसी कम्पटीशन में फ़ेमस किया था जो आज भी रिमार्केबल हैं।

वो रोजाना 18 घंटे की प्रैक्टिस करते थे, जिससे उन्होंने अपने आप को इतना माहिर बना दिया था कि 1962 में Bruce Lee ने एक फाइट के दौरान अपने ओप्पोनेंट को 15 पंच और 1 किक एक साथ मारकर गिरा दिया था और वो Bruce Lee ने सिर्फ़ 11 सेकंड में कर दिया था।

Bruce ने प्रैक्टिस से अपने आप को इतना फ़ास्ट बना दिया था कि "Enter The Dragon" शूटिंग के दौरान उनकी किक इतनी फ़ास्ट थी कि वीडियो को 34 फ्रेम्स स्लो करना पड़ा था, ताकि लोगों को वो किक फ़ेक ना लगे।

Bruce Lee ने बहुत कम उम्र में अपने आप को एक लीजेंड बना दिया था, उनकी मौत सिर्फ़ 32 साल की उम्र में हो गयी थी, वो उनके अंतिम दिनों में सिर दर्द से परेशान थे, उन्हें सेरेब्रल इडिमा नाम की बीमारी थी, जिससे दिमाग़ में सूजन आ जाती है और साँस लेने में तक़लीफ़ होती है।

20 जुलाई 1973 को वो हॉन्गकॉन्ग में शाम के करीब 4 बजे अपनी अपकमिंग फिल्म "Game Of Death" से रिलेटेड कुछ काम से गए, जहाँ उन्हें सिर में दर्द महसूस हुआ और उन्होंने पैन किलर ली और सो गए और उसके बाद वो कभी नहीं उठे।

Bruce Lee ने हॉलीवुड में 7 फ़िल्म्स में काम किया जिनमें से 3 फ़िल्म उनके मरने के बाद रिलीज़ हुई थी फिर भी हॉलीवुड हॉल ऑफ फेम में Bruce Lee की फ़ोटो शामिल हैं।

Bruce Lee की मौत बहुत कम उम्र में होने के बाद भी टाइम मैगज़ीन के 20वी सदी के 100 प्रभावशाली व्यक्तियों में Bruce Lee का नाम आता है।

उनकी लाइफ़ से हमें यही सीखने को मिलता है कि प्रैक्टिस और ट्रेनिंग के साथ किसी भी काम में महारत को हासिल किया जा सकता है। आपको लीजेंड बनने के लिए कोई बड़ी उम्र पाने की ज़रूरत नहीं होती, आप कितने परफेक्शन के साथ में दुनिया में अपने काम की छाप छोड़ते हो दुनिया के लिए वो ज़्यादा मैटर करता है।

"As you think, so shall you become."
- Bruce Lee

#8: Michael Jordan

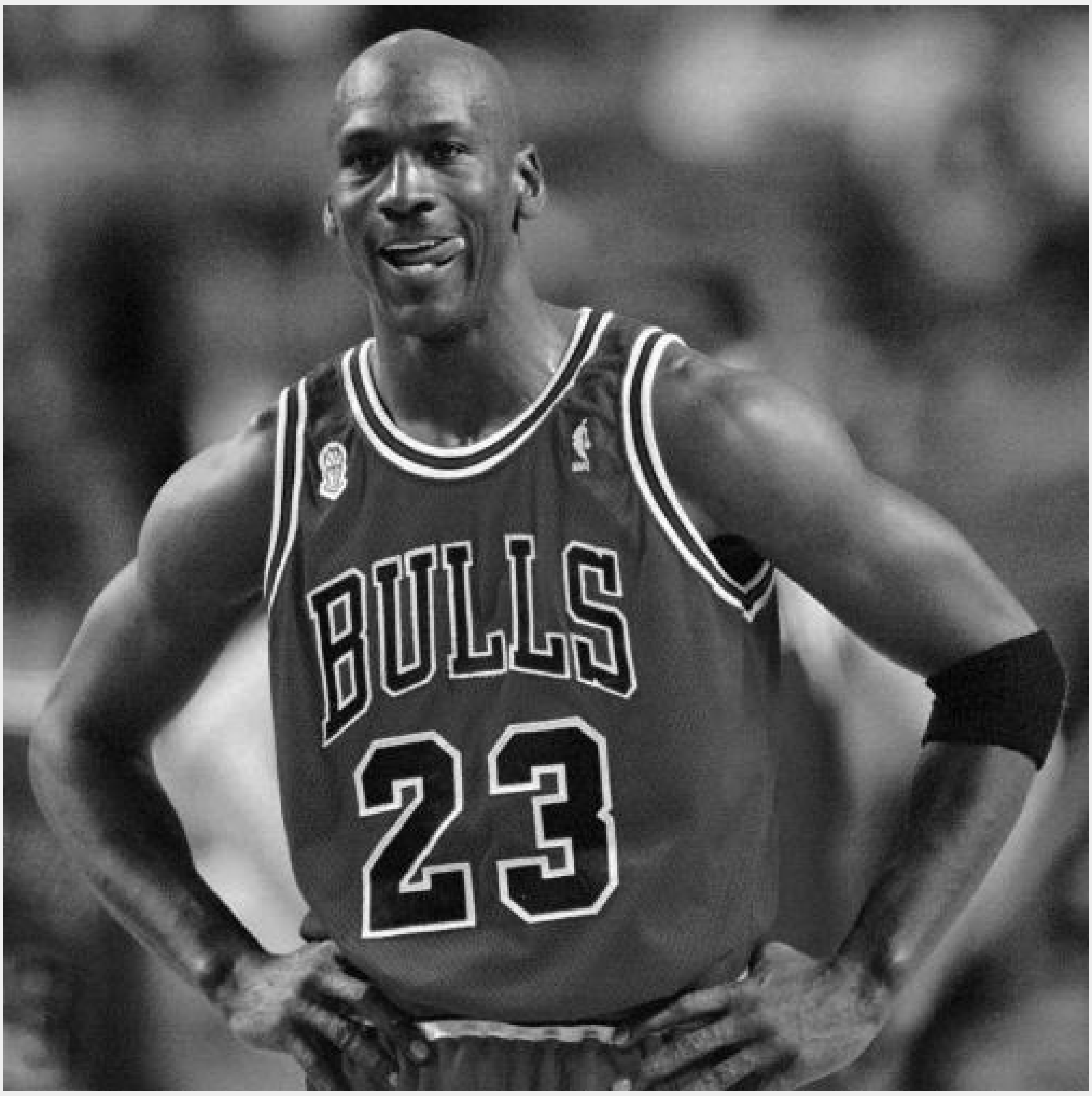

Michael Jordan को बास्केटबॉल का आज तक का सबसे बेस्ट प्लेयर माना जाता है, जिन्होंने स्टार्टिंग के फैलियर और करियर के बीच बहुत डिफिकलटीज़ को पार करके हार्डवर्क और बास्केटबॉल की तरफ डेडिकेशन से वो

मुक़ाम हासिल किया, जहाँ तक किसी भी प्लेयर का पहुँचना बहुत मुश्किल हैं।

I can accept failure, everyone fails at something. But I can't accept not trying.

ये सेंटेंस Michael की स्टोरी बयान करती है कि उनकी लाइफ़ कितने उतार चढ़ाव से भरी है। वो सक्सेसफुल हुए और अनसक्सेसफुल भी हुए, उनके पिता का मर्डर हुआ, लाइफ़ में बहुत सी कंट्रोवर्शिज़ आई लेकिन मुश्किल कंडीशन में भी खुद को संभाल कर आगे बढ़ने की तरफ ध्यान दिया और आज वो सबसे बेस्ट बास्केटबॉल प्लेयर हैं।

17 फरवरी 1963 को ब्रूकली के एक मिडिल क्लास फ़ैमिली में Michael Jordan का जन्म हुआ, वो 5 भाई-बहनों में 4th नंबर पर थे। उस समय ड्रग्स और रेसिस्म के कारण उनकी फ़ैमिली कैरोलिना के विलिंगटन

शहर में चले गए, जहाँ उन्होंने अपनी पढ़ाई कम्पलीट की। Michael के पेरेंट्स ने बचपन से ही Michael के माइंडसेट को सक्सेसफुल बनाने के लिए तैयार कर दिया था।

Michael बचपन से बास्केटबॉल में नहीं जाना चाहते थे, उनका इंटरेस्ट तो बेसबॉल में जाना था। 12 साल की उम्र तक वो बेसबॉल खेला करते थे और उसमें वो काफ़ी अच्छे प्लेयर भी थे, लेकिन बास्केटबॉल में जाने के पीछे एक अलग कहानी हैं।

एक बार बचपन मे Michael अपने भाई के साथ बास्केटबॉल खेल रहे थे तो उनके भाई Lorry ने उन्हें बास्केटबॉल में हरा दिया और वो इस अपमान को सहन नहीं कर सके और इतने छोटे इंसिडेंट की वजह से उन्होंने अपने आप को बास्केटबॉल का बेहतर प्लेयर बनाने की

ठान ली और रेगुलर इस गेम में अपने आप को बेहतर बनाने में लग गए और उन्हें इस गेम से प्यार हो गया।

Michael के बचपन की एक इंस्पायरिंग घटना जो सभी के लिए बहुत इंस्पायरिंग साबित होती है, जब Michael 13 साल के थे तब उनके पिता ने उन्हें अपने पास बुलाया और एक पुराना और इस्तेमाल हुआ टी-शर्ट देकर पूछा कि अच्छा बेटा यह बताओ इस टी-शर्ट की कीमत कितनी होगी? माइकल थोड़ा सोचने के बाद बोले यह 1 डॉलर का होगा, तो पिता ने कहा तुम्हें कुछ भी कर के बाजार में जाकर इस टी-शर्ट को 2 डॉलर में बेचना है।

माइकल ने सोचा कि ऐसा क्या किया जाये जिससे इस पुराने टी-शर्ट के 2 डॉलर मिल सके। माइकल ने उस टी-शर्ट को अच्छे से धो दिया और फिर घर पर इस्त्री न होने के कारण उसे ढेर सारे कपड़ों के नीचे सीधा करने के लिए रख दिया।

अगले दिन उन्होंने देखा टी-शर्ट पहले से बेहतर दिखाई दे रहा है, उसके बाद उन्होंने पास के रेलवे स्टेशन पर जाकर 5 घंटो की कड़ी मेहनत के बाद उसे बेच दिया और बहुत खुश होते हुए घर आये और अपने पापा को पैसे दे दिये।

15 दिनों के बाद पिता ने फिर से वैसा ही एक कपड़ा दिया और कहा कि जाओ इसे 20 डॉलर में बेच कर आओ। इस बार माइकल को थोड़ा-सा आश्चर्य हुआ कि भला इसके 20 डॉलर कौन देगा।

लेकिन पिता ने कहा एक बार कोशिश तो करो तो उन्होंने फिर से अपना दिमाग़ लगा कर सोचा और अपने दोस्त की मदद से शहर जा कर उस कपड़े पर मिकी माउस की स्टीकर लगवा लिया और ऐसे स्कूल के सामने जा कर खड़े हो गये जहाँ ज़्यादातर बच्चे अमीर घर से ही आते थे।

एक छोटे बच्चे ने अपने पापा से कह कर उसे खरीद लिया। उस छोटे बच्चे के पिता ने उस कपड़े को 5 डॉलर एक्स्ट्रा

टिप देकर ख़रीदा और इस तरह उन्होंने 1 डॉलर के उस कपडे 20 डॉलर में बेचा और 5 डॉलर टिप भी मिली, इस तरह कपड़े को पूरे 25 डॉलर में बेच कर Michael बहुत ज़्यादा खुश थे और खुशी- खुशी आकर उन्होंने अपने पिता जी को बताया।

कुछ दिनों के बाद माइकल को उनके पिता जी ने एक और कपडा दिया और बोला की जाओ इसे 200 डॉलर में बेच के आओ, इस बार माइकल को लगा की अब तो यह बहुत ही ज़्यादा है लेकिन फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी क्योंकी अभी तक Michael पिता जी के द्वारा दिए गए इस कार्य में पूर्ण रूप से सफल हो रहे थे।

आख़िरकार माइकल ने यह काम को भी करने की ठान ही ली लेकिन उन्होंने इस बार इस काम के बारे में 2-3 दिन तक सोचा कि आखिर वह कैसे इस पुराने से कपड़े को जिसका मूल्य मात्र 1 डॉलर है उसे 200 डालर में कैसे बेचे?

जैसा कि हम जानते है कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती, ठीक उसी तरह Michael ने हार नहीं मानी और उस पुराने कपड़े की कीमत बढ़ाने का उपाय खोज ही लिया Michael उस कपड़े को लेकर शहर गए।

उन्होंने देखा कि उस दिन शहर में कोई बहुत ही बड़ी पापुलर एक्ट्रेस आई है Michael पुलिस के द्वारा बनाये गये सुरक्षा घेरे को तोड़कर कपड़े पर उस एक्ट्रेस का ऑटोग्राफ लेने में कामयाब हो गये।

बच्चे की मासूमियत देख एक्ट्रेस भी मना नहीं कर पाई, अगले ही दिन Michael उस ऑटोग्राफ वाले कपड़े को लेकर बाजार निकल गये। वहाँ बहुत भीड़ जमा हो गई जो उसे खरीदना चाहती है और उस कपड़े की बोली लगाईं जा रही थी, आख़िरकार Michael ने वो कपड़ा 2000 डॉलर में बेचा।

इस घटना के बाद से Michael के पिता को इस बात का अहसास हो गया कि उनका बेटा अब जीवन में कुछ भी कर सकता है। Michael एक ऐसे व्यक्ति हैं जो आज की युवा पीढ़ी के लिए एक मिसाल हैं।

Michael की लाइफ़ में हर उस बड़े आदमी की लाइफ़ के जैसे बहुत मुश्किलें आयी, जब वो 10th क्लास में थे तो गर्मियों की छुट्टी के दौरान उन्होंने जूनियर बास्केटबॉल टीम को जॉइन किया, जहाँ उनका परफॉर्मेन्स बाकी प्लेयर से काफ़ी अच्छा था, लेकिन फाइनल टीम के लिए उनको सेलेक्ट नहीं किया गया क्योंकि उनकी हाइट बाकी खिलाड़ियों के मुकाबले काफ़ी कम थी।

ये इंसिडेंट उनके करियर की पहली निराशा थी, इस घटना के बाद उन्होंने खुद को और बेहतर बनाने की सोची और जब भी वो प्रैक्टिस करने जाते तो सबसे पहले जाते और सबके जाने के बाद तक पूरे डेडिकेशन के साथ प्रैक्टिस

करते और फाइनली हार्डवर्क की वजह से नेक्स्ट ईयर अपनी हाई स्कूल टीम में सेलेक्ट हो गए और अपनी टीम के स्टार प्लेयर बन गए।

कॉलेज में भी उन्होंने अपने बास्केटबॉल के करियर को स्टार्ट रखा, Michael अपनी कॉलेज यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थ कैरोलिना की टीम के प्रमुख प्लेयर थे।

1982 में National Collegiate Athletic Association Championship में अपनी टीम को जीत दिलाने में Michael का प्रमुख रोल था, 1984 में लॉस एंजेलिस समर ओलंपिक में US बास्केटबॉल टीम के कप्तान थे जिसमें Michael ने टीम को विनर बनाया।

1984 में Michael ने ग्रेजुएशन के दौरान ही शिकागो बुल्स टीम को जॉइन कर लिया, Michael के आने से पहले शिकागो टीम एक हारी हुई टीम थी लेकिन

Michael कर आते ही टीम ने अपनी परफॉर्मेंस दिखानी शुरू कर दी।

वहाँ उनकी परफॉर्मेंस इतनी जबरदस्त थी कि 1984-1985 में उन्होंने हर मैच में 28 पॉइंट के एवरेज स्कोर बना कर स्टार प्लेयर बन गए।

लेकिन उसके अगले साल Michael के पैर में चोट लगने की वजह से वो अगला सीज़न नहीं खेल पाए।

उसके अगले सीज़न में वो और भी जोश और मेहनत से टीम में वापस आये और पूरी सीज़न में 3000 पॉइंट करने वाले प्लेयर बन गए। 1987-88 में Michael मोस्ट वैल्युएबल प्लेयर बन गए थे और डिफेंसिव प्लेयर ऑफ दी ईयर का ख़िताब भी जीता।

Michael अपनी शानदार परफॉर्मेन्स से सक्सेस की सीढ़ियों पर चढ़ते जा रहे थे, उन्होंने अपनी टीम को 1990-1991, 1991-1992, 1992-1993 का विनर

बनाने में सबसे मैन रोल निभाया। 1992 में वो गोल्ड मेडल टीम का हिस्सा रहे।

Michael की लाइफ़ मुश्किलों से भरी रही क्योंकि 1993 में Michael को गैंबलिंग करते देखा गया और उन्हें बास्केटबॉल से सन्यास लेना पड़ा जिससे वो काफ़ी टूट चुके थे, फिर उनके पिता की हत्या हुई उसका रीज़न भी गैंबलिंग के कारण हुई दुश्मनी ही पता चलती है। बास्केटबॉल से सन्यास के बाद उन्होंने शिकागो लीग बेसबॉल का कॉन्ट्रैक्ट भी साइन किया था मतलब अगर बास्केटबॉल नहीं तो बेसबॉल ही सही लेकिन वो रुकना तो चाहते ही नहीं थे।

1993-1994 में शिकागो बुल्स का बास्केटबॉल में परफॉर्मेंस अच्छा नहीं रहा क्योंकि Michael उस टीम में नहीं थे, लेकिन कुछ समय बाद Michael ने फिर से

बास्केटबॉल में एंट्री की और 1997 तक शिकागो बुल्स को अपने लेवल से कभी नीचे नहीं आने दिया।

Michael पहले एथेलेटिक्स बिलेनियर हैं, Michael के नाम पर सबसे बड़ी स्पोर्ट्स अपैरल कंपनी Nike के Air Jordan नाम के शूज़ भी आते हैं, वो Nike, Cocacola, Mcdonalds जैसी बड़ी ब्रांड को प्रमोट भी कर चुके हैं और 2010 की फ़ोर्ब्स 20 सेलेब्रिटीज़ में भी उनका नाम आ चुका है।

जैसे क्रिकेट का भगवान सचिन को माना जाता है वैसे ही Michael Jordan को बास्केटबॉल का भगवान माना जाता हैं।

अगर उनके अचीवमेंट्स की बात करे तो उन्होंने जिस भी रीज़न से फूटबैक किया था तो अगली बार वो उससे डबल जोश और मेहनत के साथ वापस आते और अपने काम से लोगों का दिल जीत लेते।

“Some people want it to happen, some wish it would happen, others make it happen.” - Michael Jordan

#9: Charlie Chaplin

Charlie Chaplin एक कॉमिक एक्टर, फ़िल्म डायरेक्टर और म्युज़िक डायरेक्टर थे, जो "Silent Era" (जब मूवीज़ में आवाज़ नहीं होती थी) के सबसे फ़ेमस कैरेक्टर में से एक थे, वो 20th सेंचुरी के सबसे बड़े कलाकारों में से एक थे। वो अपनी कॉमेडी के लिए बहुत फ़ेमस थे, जो बिना कुछ बोले लोगों के चेहरे पर हँसी लाने की काबिलियत रखते थे।

Charlie के एक्टिंग करियर की शुरुआत तब हुई जब वो 5 साल के थे तब उनकी माँ की स्टेज पर गाना गाते हुए आवाज़ अचानक चली गयी तो दर्शकों को कंट्रोल और एंटरटेन करने के लिए 5 साल के Charlie को स्टेज पर जाना पड़ा जो कि Charlie की एक्टिंग की स्टार्टिंग थी।

जहाँ लोगों ने पहली बार Charlie को देखा था और उस इंसिडेंट के बाद Charlie की माँ की आवाज़ कभी वापस नहीं आयी।

Charlie Chaplin का जन्म 16 अप्रैल 1889 को लंदन में हुआ, उनका पूरा नाम Charles Spencer Chaplin था। उनके पिता एक सिंगर और एक एक्टर थे और उनकी माँ भी एक सिंगर थी, Charlie के पिता को शराब पीने की लत थी और उनकी माँ की दिमाग़ी हालत सही नहीं थी, इसलिए उन्हें उनकी माँ को एक मेन्टल हॉस्पिटल में एडमिट करवाना पड़ा।

इसकी वजह से Charlie और उनके भाई को उनके पिता के साथ रहना पड़ा लेकिन उनके पिता की शराब पीने की लत से Chaplin जब 10 साल के थे तभी उनके पिता की मौत हो गयी और वहाँ से मुश्किलें शुरू हो गयी।

जब उनकी माँ की आवाज़ चली गयी तो उनकी माँ के परफॉर्मेन्स के कॉन्ट्रैक्ट पर Charlie परफॉर्मेन्स दिया करते थे, जिससे वो कुछ ज़्यादा नहीं कमा पाते थे जिसकी वजह से उनका बचपन दुख, ग़रीबी और अकेलेपन में गुज़रा और यही वजह थी कि उनकी बाद की सब परफॉर्मेन्स में इन सब चीज़ों की झलक सामने नज़र आती थी।

जब Charlie 12 साल के हुए तब उन्हें एक हाई क्वालिटी थिअटर में परफॉर्मेन्स देने का मौक़ा मिला और उन्होंने Sherlock Holmes के नाटक में बिल्ली का कैरेक्टर

निभाया। उसके बाद उन्होंने Vaudeville नाम की कंपनी के थ्रू अपने एक्टिंग करियर की शुरआत की।

1914 में पहली बार Charlie Chaplin को मूवी में आने का मौक़ा मिला लेकिन दूसरे सब एक्टर को एक जैसी एक्टिंग करते देख उन्होंने एक अलग कैरेक्टर को बिल्ड करने की शुरआत की और तभी ट्रम्प वॉक करने वाले बच्चे का जन्म हुआ। लोगों को उनका ये कैरेक्टर इतना पसंद आया कि अगले ही साल उन्होंने 35 फिल्म्स साइन की, क्योंकि उन्होंने फ़िल्म्स में कुछ नयापन लाया था।

25 की उम्र होते-होते Charlie एक सुपरस्टार बन चुके थे और बहुत अमीर भी हो गए थे और आने वाले कई सालों तक वो सुपरस्टार रहे, उनकी एक्टिंग की स्टाइल और उनके कैरेक्टर ने उन्हें एक अलग मुक़ाम पर बनाये रखा था लेकिन हर एक व्यक्ति की तरह Charlie की लाइफ़ में परेशानियाँ अभी आनी बाकी थी।

उनकी पर्सनल लाइफ़ में उनका कई औरतों के साथ रिलेशनशिप रहा, 1918 में Charlie ने 16 साल की Mildred Harris से शादी की जो 2 साल में ही टूट गयी फिर 1924 में उन्होंने फिर से उनके साथ काम करने वाली एक्ट्रेस Lita Gray से शादी की और वो शादी भी 3 साल बाद टूट गयी।

1936 में Charlie ने फिर से तीसरी शादी की, 1942 में उनके संबंध Joan Bery नाम की एक्ट्रेस के साथ थे, फिर 1943 में उनकी शादी 18 साल की Un O Nil नाम की लड़की से हुई जो फाइनली सफल रही।

Charlie Chaplin ने अपनी लाइफ़ के 40 साल अमेरिका में गुज़ारे लेकिन उन्हें वहाँ की सिटीज़नशीप नहीं मिल सकी क्योंकि उनकी फ़िल्म की वजह से उन्हें कम्युनिस्ट ठहरा दिया गया और 1952 में उनकी फ़िल्म LimeLight रिलीज़ हुई जिसे अमेरिका में बेन कर दिया

गया और वहाँ के अटॉर्नी जनरल ने उनके खिलाफ कुछ स्टेटमेंट दिया जिससे नाराज़ होकर Charlie स्विट्ज़रलैंड चले गए।

1972 में आखिरी बार वो अमेरिका गए क्योंकि उन्हें Honorary Academy Award मिलना था, 1973 में Charlie को Oscar Award (best original score) से नवाज़ा गया और इतिहास की सबसे लंबी स्टैंडिंग ओवशन (12 मिनट्स) से Charlie का सम्मान हुआ। 1977 को क्रिसमस के दिन Charlie का Corsier-sur-vevey, स्विट्ज़रलैंड में Chaplin का निधन हो गया।

Charlie Chaplin ने एक बार ये भी कन्फेस किया था कि उनका सेक्सुअल रिलेशन 2000 महिलाओं के साथ हो चुका है और जब उनकी मौत हुई तो उसके तीन महीने बाद

उनकी डेड बॉडी कब्र से चोरी हो गयी थी जो उसके 5 हफ़्ते बाद पुलिस को मिल गई थी।

Charlie Chaplin की मौत को लगभग 45 साल हो चुके हैं लेकिन आज भी वो लोगो के पसंदीदा कलाकार में से एक हैं, 1995 में "The Guardian Newspaper" ने लोगों के पसंदीदा एक्टर का सर्वे किया तो पता चला कि Charlie डेथ के 2 डिकेड बाद भी लोगो के पसंदीदा कलाकार है।

Charlie आज भी लोगों के दिलो पर अपनी कलाकारी से राज करते है और आज भी उनकी एक्टिंग और उनके कैरेक्टर की कॉपी की जाती है और वो आगे भी सभी के दिलो में ज़िंदा रहेंगे।

“Nothing is permanent in this wicked world - not even our troubles.” - Charlie Chaplin

#10. Muhammad Ali

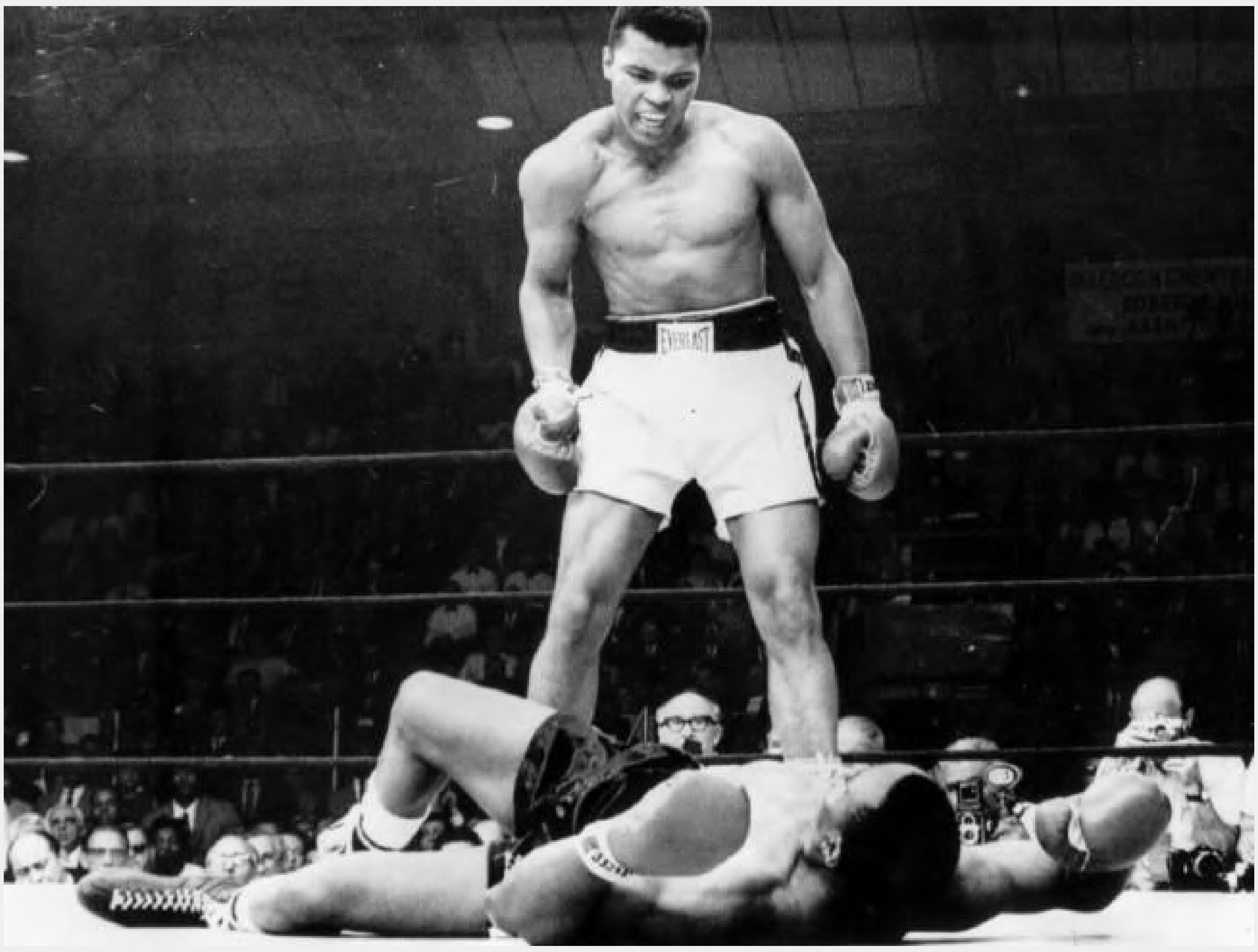

Mohammad Ali अमेरिका के प्रोफेशनल बॉक्सर थे, जिनको दुनिया का सबसे महान हैवीवेट बॉक्सर कहा जाता है। उन्होंने अपने करियर की ज़्यादातर फाइट नॉक आउट में जीती हैं, उन्होंने अपने करियर में 61 फाइट लड़ी जिसमें से उन्होंने 56 फाइट जीती और 37 फाइट्स में नॉक आउट करके जीती। वो अपने पूरे बॉक्सिंग करियर में सिर्फ़

5 बार हारे। यही उन्हें दूसरे बॉक्सर से अलग और महान बनाता है।

Mohammad Ali का जन्म 17 जनवरी 1942 को केंटकी, अमेरिका में हुआ। उनका नाम पहले Cassius Marcellus Clay Jr. था, उनके बॉक्सिंग की शुरुआत के पीछे भी एक इंटरेस्टिंग स्टोरी है। जब वो 12 साल के थे तब उनकी साइकिल चोरी हो गयी थी और जब वो पुलिस के पास गए तो उन्होंने पुलिस को कहा कि वो उस चोर को पंच मारना चाहते है, तब पुलिस वाले ने उनसे कहा कि अगर तुम्हें लोगों से लड़ना है तो तुम्हें लड़ना भी आना चाहिए।

ये शब्द Mohammad Ali के लिए मोटिवेशन बन गए और तभी से उन्होंने बॉक्सिंग की ट्रेनिंग शुरू कर दी, जिस पुलिस ऑफिसर ने उन्हें ऐसा कहा था वो बॉक्सिंग की

ट्रेनिंग भी देते थे, Mohammad Ali ने शुरुआत में उन्ही से अपनी ट्रेनिंग ली।

Mohammad Ali ने अपनी पहली फाइट 1954 में 12 साल की उम्र में जीती थी, 1956 में उन्होंने लाइट हैवीवेट टूर्नामेंट में जीत हासिल की। 1956 में Mohammad Ali ने बॉक्सिंग कोटा से रोम ओलिंपिक में क्वालीफाई किया, जहाँ अपनी परफॉर्मेन्स से लोगों के दिल जीत लिए, Ali ने अपनी तेज़ स्पीड और पॉवरफुल पंचेस से पोलैंड के नामी बॉक्सर Pietrzykowski को हराकर गोल्ड मेडल अपने नाम कर लिया।

कुछ ही टाइम बाद वो उसी गोल्ड मेडल को पहन कर अपने किसी पास के रेस्टोरेंट में गए, जहाँ से उन्हें नस्ल भेद की वजह से निकाल दिया गया और उन्होंने गुस्से में वो गोल्ड मेडल पास की ओहियो नदी में फेंक दिया और अपनी जिद्द

को बरकरार रख कर उन्होंने बॉक्सिंग करियर का डिसीज़न नहीं बदला।

1963 में उन्होंने अपने पहले प्रोफेशनल मैच में Henry Cooper नाम के बॉक्सर को हराकर दुनिया को अपना दम दिखाया और 1964 में 22 की उम्र में Ali ने Sony Listen को हराया और पहली बार हैवीवेट चैंपियनशिप को अपने नाम किया, जहाँ उनका नाम दी ग्रेटेस्ट पड़ गया और उन्हें उसी नाम से बुलाया जाने लगा।

8 मार्च 1971 को Mohammad Ali की फाइट Joseph William Fraizer के साथ हुई और फाइट 15 राउंड तक चली और Mohammad Ali को अपने 10 साल के करियर में पहली बार हार का सामना करना पड़ा, Mohammad Ali उस टाइम रेगुलर 31 मैच के विनर रह चुके थे वहीं Fraizer रेगुलर 26 मैच के विनर थे।

1990 में Saddam Husain ने 2000 होस्टेज को बंदी बना किया था जिसके चलते Mohammad Ali बिना किसी डर के Saddam Husain से बात करने बग़दाद गए और अपने साथ 15 होस्टेजेस को लेकर आये।

1984 में Ali पार्किंसन बीमारी से पीड़ित हुए थे, उसके साथ-साथ 2016 मे उनको साँस लेने में तक़लीफ़ की वजह से हॉस्पिटल में एडमिट किया गया लेकिन अगले ही दिन उनकी मौत हो चुकी थी।

उनको BBC ने स्पोर्ट्र्स पर्सनालिटी ऑफ दी सेंचुरी का सम्मान दिया।

“I hated every minute of training, but I said, 'Don't quit. Suffer now and live the rest of your life as a champion.” - Muhammad Ali

#11. Albert Einstein

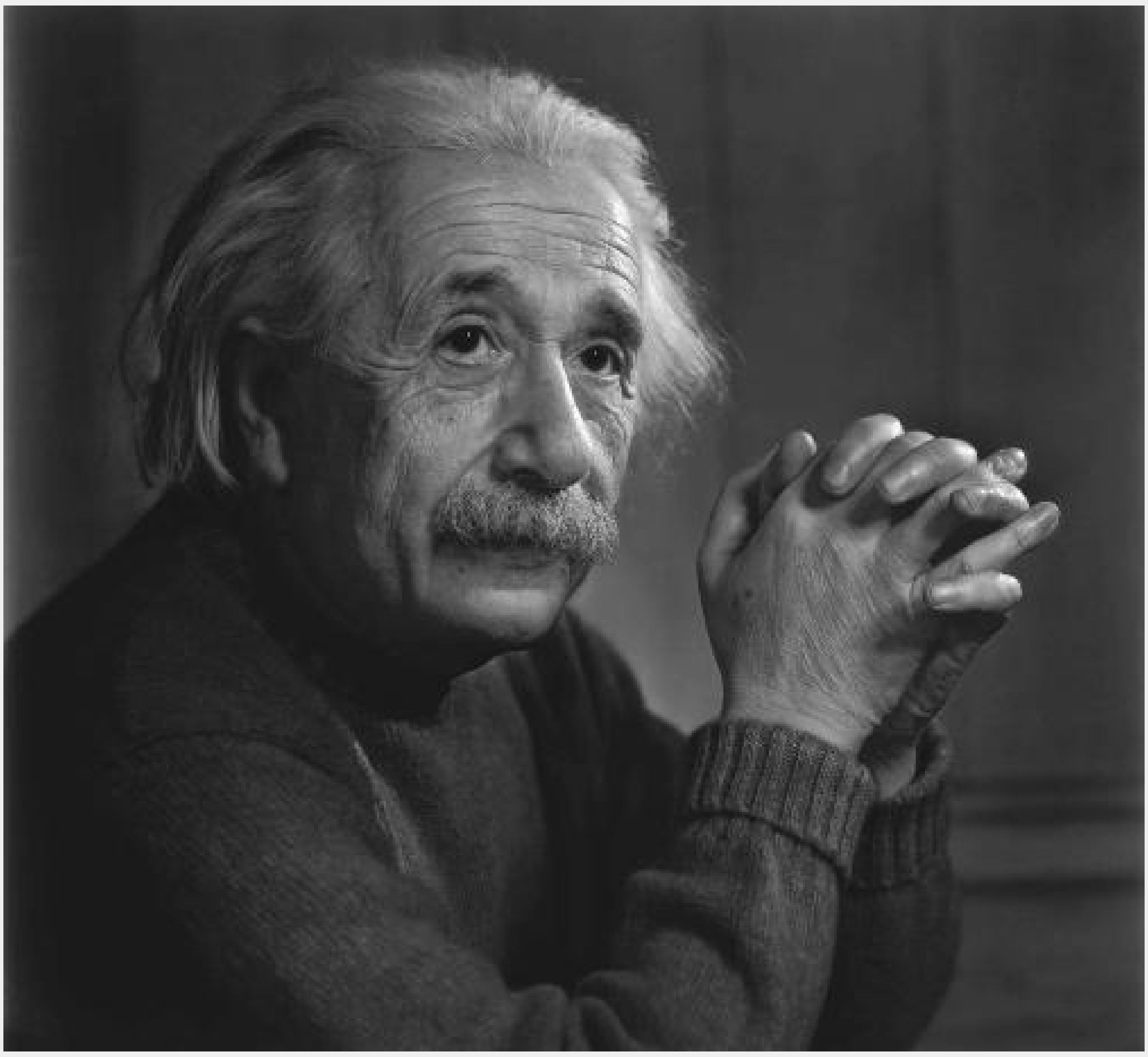

Albert Einstein जितने बड़े साइंटिस्ट थे उनका रहन-सहन और पहनावा उतना ही सिंपल और मिनिमल था। उनको देखकर ये नहीं लगता था कि वो दुनिया के इतने महान साइंटिस्ट हैं, जिन्होंने दुनिया को ऐसे रेवोल्यूशनरी फ़ॉर्मूला दिए हैं, जिन्हें पूरी दुनिया रेस्पेक्ट की

नज़र से देखती हैं, जिनके कामों की वजह से उन्हें नोबेल प्राइज़ जैसे बड़े अवार्ड से नवाज़ा गया।

Albert Einstein का जन्म 14 मार्च 1879 को जर्मनी के एक साधारण फ़ैमिली में हुआ जिनके पिता एक इलेक्ट्रॉनिक वर्कशॉप चलाते थे, Einstein बचपन से अपने अंकल के पास रहे, जिन्होंने Einstein की इंटेलिजेंस को बचपन से साइंस की और मोड़ा और उन्हें गिफ़्ट में साइंस से जुड़े इंस्ट्रूमेंट्स ही दिए ताकि उनका इंटरेस्ट साइंस में बना रहे और ऐसा ही हुआ।

Einstein (यहूदी) जेविश फ़ैमिली से बिलोंग करते थे लेकिन उन्होंने पढ़ाई एक कैथोलिक स्कूल में की क्योंकि वो यहूदी परम्पराओं को ज़्यादा महत्व नहीं देते थे इसलिए उन्होंने हाई स्कूल भी लुइटपोल्ड जिम्नेजियम (अल्बर्ट आइंस्टीन जिम्नेजियम) से की।

Einstein बचपन से साइंस में इंटरेस्ट के चलते 1909 में म्युनिक यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बन गए। उसके बाद Kaiser Wilhelm Society University के डायरेक्टर भी बने, वो बड़े साइंटिस्ट के साथ-साथ एक उदार इंसान भी थे।

वो बहुत दयालु इंसान थे, जब जर्मनी में वायलेंस हुआ तब Einstein ने उसकी बहुत निंदा की और उन्हें इसी रीज़न की वजह से जर्मनी छोड़ना पड़ा क्योंकि वो खुद को एक साइंटिस्ट और एक नॉर्मल इंसान मानते थे।

Einstein हमेशा अपने आप को एक साधारण और नॉर्मल टाइप का इंसान बनाये रखते थे, उनको फ़ेमस होना ज़रा भी पसंद नहीं था लेकिन उन्हें हमेशा रेस्पेक्ट और फेम मिलता जा रहा था क्योंकि वो ऐसा रिमार्केबल काम किये जा रहे थे कि वो छुपाए नहीं छुप रहे थे।

Albert Einstein जब नोबेल प्राइज़ लेने स्कोटहोल्म गए तो वो अपना पुराना घिसा-पीटा जैकेट पहन कर गए थे जो उनके दोस्त ने कई साल पहले दिया था ताकि वो नॉर्मल इंसान जैसे दिखे लेकिन वहाँ भी ऐसा नहीं हुआ, उन्हें बाकी लोगों से अलग और ज़्यादा रेस्पेक्ट दी गयी।

Einstein के पास जर्मनी के अलावा स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रिया और अमेरिका की भी सिटीज़नशीप थी।

Einstein ने अपनी पूरी लाइफ़ में कई फील्ड में अपना कॉन्ट्रिब्यूशन दिया जैसे The Special And General Theories Of Relativity, General Relativity, Special Relativity, Photoelectric Effect, E=mc2 (Mass-Energy Equivalence), E=hf (Planck-Einstein Relation), Theory Of Brownian Motion, Einstein Field

Equations, Bose- Einstein Statistics etc. और लगभग 300 से ज़्यादा साइंस रिसर्च लेटर्स लिखे।

"Imagination is more important than knowledge." - Albert Einstein

#12. Robert Downey Junior

Robert Downey Jr. दुनिया के बेहतरीन और फ़ेमस एक्टर्स में से एक हैं, Ironman और Sherlock Holmes जैसी मूवीज़ के लिए उन्हें पूरी दुनिया मे काफ़ी फेम मिला। Robert का नाम इस बुक में इसलिए है

क्योंकि वो मूवीज़ वाली फ़ैमिली से बिलोंग तो करते है लेकिन उनकी पर्सनल लाइफ़ काफ़ी चैलेंजिंग रही हैं, जो हम सभी के लिए काफ़ी इंस्पायरिंग हैं।

Robert Downey Jr. का जन्म 4 अप्रैल 1965 को Manhattan में हुआ, उनके पिता Robert Downey Sr. डायरेक्टर थे और उनकी माँ Asley एक एक्ट्रेस थी। फ़िल्म फ़ैमिली से बिलोंग करने की वजह से काफ़ी छोटी उम्र में उन्होंने एक्टिंग करना स्टार्ट कर दिया था, उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म सिर्फ़ 5 साल की उम्र में की थी जिसका नाम Pound था। उसके बाद उन्होंने उनके पिता की बनाई मूवीज़ में काफ़ी छोटे-मोटे रोल्स किये।

लेकिन मुश्किलें आनी अभी शुरू होने वाली थी, उनके पिता एक ड्रग एडिक्ट थे और Junior ने काफ़ी छोटी उम्र में ड्रग्स लेना सिख ली थी इसकी आदत से परेशान होकर उनकी माँ ने उनके पिता को तलाक दे दिया और Junior

अपने पिता के साथ लॉस एंजेलिस रहने चले गए, उन्होंने काफ़ी टाइम अपनी माँ के बिना ही गुज़ारा।

Robert ने 16 साल की उम्र में पढ़ाई छोड़ दी और अपनी माँ के पास चले गए क्योंकि वो ड्रग्स लाइफ़ से आगे बढ़ना चाहते थे और मूवीज़ लाइन में फिर से जाना चाहते थे। उन्होंने 1983 से 1990 तक रेगुलर मूवीज़ में काम किया ताकि वो अपने करियर को बना सके। उन्हें पहली बड़ी सक्सेस 1985 में Tuf Tuf नाम की मूवी से मिली जिसमें junior ने James Speder के को-एक्टर का किरदार निभाया था।

मूवीज़ में लीड एक्टर के तौर पर Junior ने 1987 में John Hughes की फ़िल्म The Pickup Artist से शुरुआत की, जिसमें Robert के Jeck Jerico के किरदार को लोगों ने बहुत पसंद किया। इसी करियर की

बातों के बीच उनके ड्रग्स लेने की आदत नहीं छूट रही थी, वो ड्रग्स लेने के बुरी तरह से एडिक्ट हो चुके थे।

1990 में Robert ने कई बार ड्रग्स से पीछा छुड़ाने की कोशिश की लेकिन वो उसमे असफल रहे। 1992 में Chaplin नाम की मूवी से उनका नाम बड़े-बड़े एक्टर्स में आने लग गया था और इसी मूवी से Robert ऑस्कर के लिए नॉमिनेट भी हुए थे।

उनकी लाइफ़ में एक तरफ़ तो उनकी एक्टिंग की तारीफ होती थी और दूसरी तरफ उनके ड्रग एडिक्शन की वजह से उन्हें नापसंद भी किया जाता था। 1992 में Robert ने शादी की और उसके 4 साल बाद तक मीडिया से दूर रहे लेकिन 1996 में उन्हें अचानक कोकीन, हेरोइन जैसे ड्रग्स के यूज़ करने के ज़ुर्म में 1 साल के लिए जेल जाना पड़ा, उसके बाद उन्हें नशा छुड़ाने के लिए काफ़ी जगह रखा गया लेकिन उनके ड्रग्स लेने की लत ने पीछा नहीं छोड़ा।

Robert को अपनी इस ड्रग्स की आदत की वजह से 1996 से 2001 के 5 साल के पीरियड में 6 बार जेल पड़ा, जब उन्हें आखिरी बार पकड़ा था तब वो लॉस एंजेलिस की सड़कों पर नंगे पैर घूम रहे थे और ड्रग्स के शक़ की वजह से उन्हें फिर से अरेस्ट किया गया।

Robert ने हार न मानते हुए ड्रग्स और करियर में से करियर को अपना पार्टनर चुना और 2001 में "I Want Love" नाम के सॉन्ग से कमबैक किया। ये एक तरीके से Robert की लाइफ़ का दूसरा चैप्टर था क्योंकि ड्रग्स जैसे नशे को नॉर्मल इंसान नहीं छोड़ सकता, उसके लिए बहुत डिटरमाईंड होना पड़ता है।

बहुत लोग उस पीरियड में गिव-अप कर देते और अगर Robert भी उस पीरियड में गिव-अप कर देते तो आज हम उन्हें मूवीज़ में नहीं देख पाते।

Robert की लाइफ़ का अच्छा पीरियड उनकी दूसरी शादी के बाद ही शुरू हुआ था, 2004 ने उनकी मुलाक़ात उनकी फ़्यूचर वाइफ़ Susan Levin से हुई, उन्होंने शादी की एक ही शर्त रखी कि अगर वो ड्रग्स को पूरी तरह छोड़ देंगे तो Susan उनसे शादी करेगी।

2005 में उनकी शादी Susan से हो गयी थी, Robert के करियर के दूसरे चैप्टर भी जोरों से अपनी पकड़ बनाने लग गया था, ड्रग्स के बुरे दौर के बाद उनके करियर में "The Singing Detective" जैसी मूवी आयी जिससे उन्हें फिर से काफ़ी फेम मिला, उसके बाद उन्होंने "Kiss Kiss Bang Bang" और डिज़्नी की "The Shaggy Dog" और "David Fincher" की जोडीएक में काम किया।

Robert को दुनिया मे एक रिमार्केबल रोल मिला जिसका नाम "Ironman" है, जो 2008 में रिलीज़ हुई, ये Robert के करियर की अब तक कि सबसे बेस्ट बड़ी मूवी

थी। उसके बाद Robert बॉक्स ऑफिस के स्टार बन गए थे, उनकी हर मूवी बॉक्स ऑफिस में ब्लॉकबस्टर साबित होती है फिर उन्होंने Avengers, Captain America, Sherlock Holmes जैसी मूवीज़ में काम किया और अपने आप को हॉलीवुड का एक बहुत सक्सेसफुल एक्टर बना दिया।

जिसने भी Robert के करियर को लाइव देखा है तो उसे पता होगा कि उनका करियर सन 2000 में पूरे तरीके से ख़त्म हो चुका था और अगर वो डिटेरमिनेशन के साथ हॉलीवुड में वापसी नहीं करते तो आज उन्हें कोई नहीं जान पाता।

“The lesson is that you can still make mistakes and be forgiven.” - Robert Downey Jr.

#13. Elon Musk

Elon Musk एक सक्सेसफुल बिज़नेसमैन, एक इन्वेंटर, एक इंजीनियर और डिज़ाइनर है जिनके रेवोल्यूशनरी आईडिया ने दुनिया को बदल के रख दिया है। वो इंसान की संभावनाओं से आगे की तैयारियों से जुड़े प्रोजेक्ट्स में सक्सेसफुल तरीके से लगे हुए हैं।

उनकी लाइफ़ की जर्नी एक बिज़नेसमाइंडेड पर्सन या जो अपनी लाइफ़ में कुछ अलग सोच के ज़रिए से कुछ करना चाहते है उनके लिए काफ़ी मददगार साबित होती है, वो SpaceX के फाउंडर और CEO हैं, साथ ही वो बोरिंग कंपनी और x.com के फाउंडर और नेऔरा लिंक, openAl, Zip2 में को-फाउंडर हैं और सोलरसिटी के चैयरमेन भी हैं।

Elon Musk का जन्म 28 जून 1971 को प्रीटोरिया, अफ्रीका में हुआ, उनके पिता एक इंजीनियर और पायलट थे और उनकी माँ एक मॉडल थी, जब Elon 9 साल के थे तब उनकी माँ और पिता का तलाक हो गया था और वो उनके पिता के साथ रहे जबकि उनके भाई और बहन उनकी माँ के साथ रहे।

वो बचपन से बुक्स और इंवेंशन्स के बारे में काफ़ी फोकस्ड थे क्योंकि उनका उसमे इंटरेस्ट था और जब वो पूरे फोकस

के साथ इन सब चीज़ों के बारे में पढ़ते थे तो अगर कोई उन्हें आवाज़ लगाता तो उन्हें उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी, इसी के चलते उनके पेरेंट्स ने उस इंसिडेंट के बारे में डॉक्टर्स से कंसल्ट भी किया कि कहीं वो बहरे तो नहीं हैं लेकिन ऐसा नहीं था, ये सिर्फ़ ज़्यादा फोकस के कारण था।

10 की उम्र में उनके पिता ने उन्हें एक कंप्यूटर दिलाया जिसे उन्होंने खुद से बिना किसी टीचर की हेल्प से सीखा और 12 कि उम्र में उन्होंने उस कंप्यूटर की हेल्प से Blast नाम का एक गेम बनाया और एक कंपनी को 500 डॉलर्स में बेच दिया। 17 कि उम्र में वो कनाडा अपनी माँ के रिलेटिव के पास चले गए और "Queen University" में एडमिशन लिया, उसकी मैन वजह यह थी कि उन्हें अमेरिका जाना था और उन्हें लगा कनाडा के सिटीज़न बनने से अमेरिका जाना आसान होगा।

फाइनली 1992 में Musk ने "Pennsylvania University" में फिजिक्स और इकोनॉमिक्स में एडमिशन लेने के लिए कनाडा छोड़ दिया और अमेरिका चले गए। Pennsylvania से निकलने के बाद 1995 में Musk ने Stanford university में फिजिक्स एंड मटेरियल साइंस में Phd. करने के लिए एडमिशन लिया, लेकिन 2 दिन के बाद उन्होंने वहाँ से स्टडी छोड़ दी क्योंकि वो अब बिज़नेस में जाना चाहते थे।

उसी साल 1995 में Elon ने उनके भाई Kimbal Musk के साथ मिलकर Zip2 नाम की कंपनी की शुरुआत की, जो ऑनलाइन न्यूज़पेपर इंडस्ट्री के लिए सिटी गाइड का काम करती थी। जिसे बाद में Compaq नाम की कंपनी को बेच दिया और ओवरऑल 307 मिलियन डॉलर्स मिले जिसमें से Elon Musk को 22 मिलियन डॉलर्स मिले फिर उन्होंने उसी पैसों से x.com नाम की एक वेबसाइट बनाई

जो ऑनलाइन पेमेंट ट्रांसफर की सर्विस प्रोवाइड करती थी, जो बाद में जाकर Paypal बनी।

जुलाई 2002 में Paypal को ebay.com ने ख़रीद लिया जिससे अकेले Elon Musk को 165 मिलियन डॉलर्स मिले लेकिन वो इन सब से भी सेटिस्फाइड नहीं थे, वो दुनिया मे कुछ रेवोलुशन लाना चाहते थे इसलिए उन्होंने Paypal से मिलने वाली सारी कमाई को SpaceX में लगा दिया।

वो लोगों को दुनिया से दूर स्पेस में भेजने की प्लानिंग कर रहे थे और उसी के लिए उन्होंने 2002 में "Space Exploration Technologies Corp." नाम की कंपनी बनाई, उससे पहले एयरोस्पेस के सेक्टर में कोई भी प्राइवेट कंपनी नहीं थी।

SpaceX में अपनी सारी कैपिटल लगाने के बाद Elon के पास रहने के लिए घर भी नहीं बचा था और मुश्किलों की

बात करे तो शुरुआत में उनके कंपनी के 3 रॉकेट लांच फैल हो गए थे जिसकी वजह से अब उनके पास सिर्फ़ उतना ही पैसा बचा था कि वो इस प्रोजेक्ट को बन्द कर दे या एक लास्ट रॉकेट लांच कर सके।

अगर लास्ट रॉकेट लॉन्च फ़ेल हो जाता तो Elon के पास कुछ नहीं बचता क्योंकि उन्होंने अपना सब-कुछ दाव पर लगा दिया था और लास्ट 4th रॉकेट लॉन्च सक्सेस हुआ और SpaceX के शेयर्स की रेट बढ़ने के साथ उनकी कंपनी सक्सेस की तरफ मुड़ गयी।

उन्हें रेवोल्यूशनरी आईडिया पसंद है इसलिए उन्होंने 2004 में Tesla नाम की कंपनी में पैसा इन्वेस्ट किया जो Tesla Coil के आधार पर अपनी कार बना रही थी, आज कई देशों में वो कार अपनी अच्छी परफॉर्मेंस दे रही है और वो कार एनवायरनमेंट के लिए भी अच्छी साबित हो रही है, Elon Musk इस कंपनी के CEO भी हैं।

उनका Solar City नाम से प्रोजेक्ट भी चल रहा है जो अमेरिका की दूसरी सबसे बड़ी कंपनी है, जो सोलर एनर्जी से इलेक्ट्रिसिटी जनरेट करने का काम करती है और साथ ही उनका Hyperloop नाम से प्रोजेक्ट भी चल रहा है, जो पब्लिक ट्रांसपोर्ट का बहुत अच्छा तरीका है और बहुत तेज़ भी हैं।

Elon Musk ने Iron man 2 में एक शार्ट रोल भी किया है, Elon ने बचपन से ही यकीन न हो ऐसे काम करने शुरू कर दिए थे, जिन काम के बारे में वो नहीं जानते थे उसे भी वो खुद से सीख कर अंजाम दे देते थे, उन्होंने रॉकेट साइंस की कोई स्पेशल पढ़ाई नहीं की लेकिन उन्होंने रॉकेट प्भी डिज़ाइन किये।

उनका एक ही मानना है कि अगर आप अपनी लाइफ़ में कुछ नया नहीं कर रहे हैं तो ये बहुत बुरी बात है। आपको हमेशा कुछ नया ट्राई करते रहना चाहिए।

"If you get up in the morning and think the future is going to be better, it is a bright day. Otherwise, it's not." - Elon Musk

#14. Cristiano Ronaldo

Cristiano Ronaldo दुनिया के टॉप फुटबॉल प्लेयर्स में से एक हैं, जो 2020 की फ़ोर्ब्स में हाईएस्ट पेड अथेलेट्स में 2nd नंबर पर हैं। उनकी सक्सेस कुछ इस तरह की है कि लोग उसे किस्मत का खेल समझते हैं, लेकिन उनकी

डेडिकेशन और मेहनत ने उनके गेम को परफेक्शन के एक अलग लेवल पर पहुँचा दिया।

Cristiano Ronaldo का जन्म 5 फरवरी 1985 को पुर्तगाल के मैडिएरा सिटी में एक ग़रीब फ़ैमिली में हुआ उनके पिता एक माली थे और उनकी माँ कुक थी। उनके पिता अमेरिकन प्रेज़िडेंट Ronaldo Regan के बड़े फैन थे इसलिए उन्होंने उनके नाम पर Ronaldo का नाम रखा।

Ronaldo के पिता एक ऐल्कोहॉल एडिक्ट थे और अपनी काफ़ी सैलरी वो शराब पीने में गवा देते थे इसी रीज़न से उनकी फाइनेंसियल कंडीशन बचपन से सही नहीं थी और फाइनेंसियल कंडीशन की वजह से जब Ronaldo अपनी माँ के पेट मे थे तब उनकी माँ अपने 4th बेटे को जन्म देना नहीं चाहती थी।

उन्होंने अबॉर्शन कराने की कोशिश भी की लेकिन डॉक्टर्स ने मना कर दिया क्योंकि कुदरत को शायद ये मंज़ूर था कि दुनिया को एक बेहतरीन प्लेयर देना है।

Ronaldo को बचपन से ही फुटबॉल खेलने में इंटरेस्ट था, जब वो 8 साल के थे तब पहली बार वो अपने शहर की लोकल टीम (Andorinha Football Club) से खेले थे जहाँ उन्होंने बहुत अच्छा परफॉर्म किया था। अच्छे परफॉर्मेंस की वजह से उन्हें 10 साल की उम्र में Club Deportivo Nacional में एंट्री मिल गयी थी।

वहाँ उन्होंने 2 साल तक बहुत अच्छे तरीके से परफॉर्म किया, उसके बाद वो पुर्तगाल की नेशनल टीम में शामिल हो गए और अपने बेहतर परफॉर्मेंस की वजह से Ronaldo का सिलेक्शन इंटरनेशनल टीम में हो गया और 2003 में मैनचेस्टर टीम ने रोनाल्डो को 19 मिलियन डॉलर देकर अपनी टीम में शामिल कर लिया।

अगले 6 साल तक मैनचेस्टर टीम में रहते हुए Ronaldo ने 84 गोल्स किये, फिर 2009 में स्पेन के Real Madrid ने Ronaldo को लगभग 108 मिलियन डॉलर्स देकर अपनी टीम में शामिल कर लिया।

Ronaldo गेम में बहुत अच्छे तो हैं लेकिन हर उस लड़के की तरह उन्होंने भी बचपन मे काफ़ी ऐसी हरकतें की है जिससे उन्हें बाद में शर्मिंदा होना पड़ा था, जब वो 14 साल के थे तब उन्होंने स्कूल में एक टीचर के ऊपर चेयर फेंक दी थी, जिसकी वजह से उन्हें स्कूल से निकाल दिया था, ऐसी हरकतें उन्हें हम जैसा एक नॉर्मल इंसान बनाती हैं।

उसके बाद जब वो 15 साल के थे तब उन्हें Racing Heart नाम की बीमारी का पता चला, जिसकी वजह से उनका फुटबॉल खेलना रुक भी सकता था क्योंकि इस बीमारी में अचानक धड़कन तेज़ी से धड़कने लगती है और बेहोशी छाने लगती है, लेकिन सही वक़्त पर Ronaldo

की इस बीमारी का इलाज होने की वजह से आज हम उन्हें इस जगह देख पा रहे हैं।

प्रोब्लेम्स हमारी लाइफ़ में टेम्परेरी होती है, वो आज होती है और कल नहीं इससे ज़्यादा वो नहीं टिक पाती, Ronaldo की लाइफ़ में यही देखने को मिलता है। आज वो दुनिया के सबसे फ़ेमस एथलीट हैं, शायद ही ऐसा कोई स्पोर्ट्र्स लवर होगा जो Ronaldo को नहीं जानता हो।

"Dedication, hard work all the time, and belief." - Cristiano Ronaldo

#15. Bill Gates

दोस्तों पर्सनल कंप्यूटर के दौर में Bill Gates का नाम न आये ऐसा हो ही नही सकता। जिन्होंने पर्सनल कंप्यूटर को बेहतर बनाने में अपनी पूरी लाइफ़ दे दी। बचपन से ही कंप्यूटर में इंटरेस्ट रखने वाले Bill का जन्म एक धनी परिवार में हुआ, उनके पिता एक वकील थे, उनके घर वाले

चाहते थे कि वे भी उनके पिता के जैसे वकील बने लेकिन उनका ध्यान हमेशा कंप्यूटर और प्रोग्रामिंग में ही रहता था।

सिर्फ़ 13 साल की उम्र में उन्होंने Tic Tac Toe नाम का गेम बना दिया था क्योंकि वे स्टार्टिंग से उसमें इंटरेस्ट रखते थे। वे हमेशा कंप्यूटर के मामले में उत्सुक रहते थे, वे पढ़ाई में भी इतने आगे थे कि उन्होंने SATS नाम के एग्ज़ाम में 1600 में से 1590 नंबर लाये थे। उन्होंने एक बार स्कूल में सिर्फ़ लड़कियों को इम्प्रेस करने के लिए स्कूल का कंप्यूटर नेटवर्क हैक कर लिया था।

उन्होंने सिर्फ़ 17 साल की उम्र में अपने Alen नाम के दोस्त के साथ मिलकर Traf O Data नाम का डिवाइस बनाया जो ट्रैफिक काउंटर का काम करता था। वो इतना हिट हुआ कि उन्हें अहसास हो गया कि उन्हें खुद की सॉफ़्टवेयर कंपनी बनानी चाहिए और अप्रैल 1975 में उन्होंने

Harward University छोड़ कर Paul Alen के साथ मिलकर खुद की कंपनी बना दी।

उस टाइम उन्हें अंदाज़ा नही था कि वो दुनिया की एक सबसे बड़ी कंपनी बनाने जा रहे है, वे बिज़नेस में इतने एक्सपर्ट थे कि 1981 में IBM ने एक ऑपरेटिंग सिस्टम बनाने के लिए Bill Gates को कहा तो Bill Gates ने उसको बनाने की बजाय Tim Peterson (कंप्यूटर इंजीनियर) के पास गए जिनके पास ऑलरेडी वो ऑपरेटिंग सिस्टम बना हुआ था।

Bill Gates ने उनसे उस ऑपरेटिंग सिस्टम को 50000 डॉलर में खरीद लिया और IBM को रॉयल्टी पर बेच दिया उसका नाम Ms-Dos था, जिसके पैसे 6 महीने में ही वसूल हो गए थे। वह हर मामले में बिज़नेस की खोज करते रहते है।

वो अपने काम को लेकर इतने क्यूरियस और डिवोटेड थे और साथ ही हर छोटी से छोटी चीज़ का इतना ध्यान रखते थे कि उनका कहना था कि वे वीकेंड और छुट्टियों पर जाने में विश्वास नहीं करते और उनकी कंपनी में काम करने वाले हर एक व्यक्ति की कार की नंबर प्लेट उन्हें याद थी ताकि वे ये पता कर सके कि कौन किस समय काम पर आता है और जाता है।

इसी हार्ड वर्क ने उन्हें बाउंडलेस सक्सेस दिलाई। इसी हार्ड वर्क की वजह से कुछ सालों में ही 1987, 31 साल की उम्र में दुनिया के सबसे अमीर लोगों की लिस्ट में Bill Gates का नाम आ चुका था। उन्होंने एक इंटरव्यू में भी कहा था कि उनकी इस सक्सेस के पीछे बुक्स का ही हाथ है, वे एक साल में 50 बुक्स पढ़ते हैं जिनसे उन्हें जो कुछ भी सीखने को मिलता है वो अपनी रियल लाइफ़ में करने की कोशिश करते है।

अपनी सक्सेस के पीछे का सारा क्रेडिट वे किताबे पढ़ने और नई चीज़ें सीखने को देते है। एक बार उन्होंने कहा कि उनकी लाइफ़ का सबसे बड़ा रिग्रेट ये है कि वो इंग्लिश के अलावा कोई दूसरी लैंग्वेज नही जानते , इस बात से आप अंदाज़ा लगा सकते हो उनके अंदर नई चीज़ें जानने की कितनी जिज्ञासा है।

1994 में Andrew carnegie और john D Rockefeller से इंस्पायर होकर उन्होंने अपनी कंपनी के कुछ शेयर बेचकर "William H Gates Foundation " की स्थापना की और 2000 में अपनी पत्नी के साथ मिलकर "Bill And Melinda Gates Foundation"खोला जिसके लिए उन्होंने अपनी कंपनी के 5 बिलियन डॉलर के शेयर बेच दिए, जो NGO के लिए पैसा इकट्ठा करती है।

2007 में उन्होंने अपनी नेट वर्थ का 95% पैसा दान दे दिया था। 2013 के अकॉर्डिंग उनका ये फाउंडेशन दुनिया का सबसे वैल्युएबल फाउंडेशन बन गया था। Bill 1995 से 2007 तक दुनिया के सबसे अमीर आदमी बने रहे, 2007 में डोनेशन की वजह से वो पीछे हो गए थे।

Bill ने अपने बच्चों की सक्सेस के बारे में ये भी कहा था कि वे अपने तीनों बच्चों को अपनी बिलियन डॉलर्स की संपत्ति में से सिर्फ 10-10 मिलियन देंगे क्योंकि वे अपने बच्चों को आलसी नहीं बनाना चाहते। आज वे जो भी काम कर रहे है सिर्फ़ समाज सेवा के लिए कर रहे है।

हमे Bill Gates की लाइफ़ से बहुत कुछ सीखने को मिलता है कि दुनिया में हर एक काम को डेडिकेशन और पूरी इंटेलिजेंस के साथ किया जाए तो सफलता मिलते देर नही लगती, बड़ा काम करने के लिए एजुकेशन से ज़्यादा

मायने अपने अंदर का इंटरेस्ट, हर चीज़ का नॉलेज और नया सीखने की क्यूरियोसिटी रखती है।

“It's fine to celebrate success but it is more important to heed the lessons of failure.”
- Bill Gates

#16. Walt Disney

बचपन को हैप्पीनेस से भरने में अगर किसी ने सच में कंट्रीब्यूट किया है तो वो Walt Disney थे जिनके बनाए कार्टून ने लगभग हम सब के बचपन को एंटरटेन किया है। वो 20th सेंचुरी में एंटरटेनमेंट वर्ल्ड में अपने कॉन्ट्रिब्यूशन के लिए फ़ेमस हैं।

Walt Disney का जन्म 5 सितंबर 1901 को शिकागो, अमेरिका में हुआ, बचपन से Disney को पेंटिंग का बहुत शौक था।

उनकी फाइनेंसियल कंडीशन ठीक नहीं होने की वजह से वो स्कूल जाने से पहले न्यूज़पेपर बाटते थे फिर स्कूल जाते थे। उन्होंने बचपन में न्यूज़पेपर में आने वाले पिक्चर्स को कॉपी करके पेंटिंग सीखी। वो बचपन में आर्मी जॉइन करना चाहते थे लेकिन कम उम्र की वजह से वो जॉइन नहीं कर सके।

1917 में Disney ने अपनी हाई स्कूल के दौरान एक न्यूज़पेपर में कार्टूनिस्ट के तौर पर काम किया, जिसकी इनकम से उन्होंने शिकागो फ़ाइन आर्ट्स एकेडमी से कार्टूनिस्ट का कोर्स किया।

1919 में Disney केंसास सिटी आये और उन्होंने Pesman-Rubin Commercial Art Studio में

आर्टिस्ट के तौर पर काम किया। वहाँ Pesman-Rubin के रेवेन्यू डाउन होने की वजह से उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया।

Pesman-Rubin Commercial Art Studio में उनकी मुलाक़ात Lwerks We से हुई और वहाँ से निकलकर 1920 में Disney ने Lwerks के साथ मिलकर Disney Lwerks Commercial Artist नाम की कंपनी बना दी, लेकिन वो भी सक्सेस न होने की वजह से उन्होंने वो कंपनी अपने पार्टनर को देदी और केंसास सिटी फ़िल्म एंड कंपनी जॉइन कर ली जहाँ उन्होंने कैमरा और एनीमेशन का काम सीखा।

काम सीखने की वजह से एनीमेशन की तरफ उनका इंटरेस्ट बढ़ा और उन्होंने खुद का एनीमेशन स्टूडियो ओपन किया और "Alice In Cartoonland" और "Oswald The Rabbit" सिरीज़ लॉन्च की जो हिट साबित हुई

लेकिन किसी प्रॉब्लम की वजह से वो फिर से घाटे में चले गए।

Disney को अब एक नए कार्टून कैरेक्टर की ज़रूरत थी और इस बार उनके स्टार्टिंग कंपनी के साथी Lwerks भी उनके साथ थे, फिर 1928 में दोनों ने मिलकर 'Mickey Mouse कैरेक्टर बनाया, जिसे प्लेन क्रेज़ी नाम की शार्ट मूवी में यूज़ किया गया।

प्रोड्यूसर ने उस कैरेक्टर को इतना पसंद नहीं किया क्योंकि उन्हें लगता था कि बच्चे उस बड़े से चूहें को देखकर डर जाएंगे फिर उन्होंने Gallopin Gaucho नाम की शार्ट मूवी बनाई और वो भी सक्सेस नहीं हुई।

गिव-अप करने की बजाय उन्होंने Mickey Mouse के कैरेक्टर को लेकर अपनी तीसरी मूवी "Steamboat Willie' बनाई और Pet Power नाम के बिज़नेसमैन ने उसे डिलीवर किया।

आखिरकार ये मूवी हिट साबित हुई और काफ़ी मेहनत के बाद फाइनली Disney की कंपनी ग्रो करने लगी। फिर उन्होंने Mickey के साथ Minnie Mouse, Goofy, Donald Duck और Pluto के कैरेक्टर को बनाया जो काफ़ी हिट हुए।

Disney की Mickey Mouse सिरीज़ सक्सेस तो कर रही थी लेकिन Pet Power से Disney को उनके प्रॉफ़िट का सही हिस्सा नहीं मिल रहा था और जब ये बात Disney ने Pet Power से कही तो उन्होंने Disney के साथी Lwerks को Disney से अलग करके अपने साथ ले लिया, Disney को लगा कि बिना Lwerks के Disney Studio फिर से बन्द हो जाएगा जिसकी वजह से वो डिप्रेशन में चले गए और डिप्रेशन की वजह से उनका नर्वस ब्रेकडाउन हो गया।

लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और Mickey Mouse सिरीज़ को डिस्ट्रीब्यूट करने के राइट्स कोलंबिया पिक्चर्स नाम की कंपनी को दे दिए और Mickey Mouse सिरीज़ वर्ल्ड वाइड बहुत सक्सेस होने लगी। फिर Disney ने फुल लेंथ फ़िल्म "Snow White And Seven Drafts" बनाई जो इतनी हिट साबित हुई कि Walt Disney उसकी कमाई से मिलियनर बन गए और इस मूवी को Oscar Awards भी मिले।

Disney के सपने के अनुसार उन्होंने Adventure Park Disneyland बनाने की सोची, लेकिन इस प्रोजेक्ट में इन्वेस्ट करने से सभी ने इनकार कर दिया और उन्हें अपना घर और गाड़ी तक बेचनी पढ़ी और अपनी सभी टेलीविज़न सिरीज़ के टेलीकास्ट राइट्स उन्होंने ABC टेलीविज़न नेटवर्क को 5 मिलियन डॉलर्स में बेच दिए,

लेकिन उनकी कार्टून सिरीज़ टेलीविज़न पर भी काफ़ी सक्सेस रही।

Disney का Disneyland प्रोजेक्ट को लेकर उनका काफ़ी मज़ाक बनाया गया, लेकिन वो इसके बारे में ध्यान न देते हुए अपने काम पर लगे रहे और जब उनका ये प्रोजेक्ट बन कर रेडी हुआ तो अमेरिका का सबसे बड़ा अट्रैक्शन बन गया और आज भी पूरी दुनिया से लोग Disneyland देखने जाते हैं।

15 दिसंबर 1966 को कैंसर से Walt Disney की मौत हो गयी, उनके मरने के बाद "Winnie The Pooh And The Blustery Day" को Oscar Award मिला। उनकी कंपनी और उनकी बड़ी सोच के रिज़ल्ट्स आज भी हम देख रहे हैं, अपनी लाइफ़ में रुकावट के आने के बाद भी इनोवेटिव तरीके से कमबैक करके उन्होंने वो कर दिखाया जो उन्हें करना था।

"All our dreams can come true, if we have the courage to pursue them."
- Walt Disney

#17: Warren Buffett

Warren Buffett दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों की लिस्ट में से एक हैं, जिनकी लाइफ़ जर्नी बहुत इंस्पायरिंग साबित होती है। उन्हें शेयर मार्केट की दुनिया का किंग भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने बहुत कम उम्र में पैसों को सही तरीके से इन्वेस्ट करना सीख लिया था। वो Berkshire

Hathaway Company के मालिक हैं जो अलग-अलग कंपनीज़ में पैसा इन्वेस्ट करते हैं।

Warren Buffett का जन्म 30 अगस्त 1930 को अमेरिका के ओमाहा सिटी में हुआ था, उनके पिता शेयर मार्केट में काम करते थे और उनके तीन बच्चों में से Warren Buffett दूसरे नंबर पर थे और इकलौते बेटे थे। उन्हें बचपन से ही बिज़नेस करना और बिज़नेस में पैसा इन्वेस्ट करने का खूब शौक था, इसीलिए उन्होंने सिर्फ 11 साल की उम्र में अपने शौक के लिए घर-घर मैगज़ीन डिस्ट्रीब्यूट करने का और कोकाकोला की बोतल बेचने का काम शुरू कर दिया ताकि वो उससे अपनी पॉकेट मनी निकाल सके। उन्होंने अपना पहला इनकम टैक्स सिर्फ 13 साल की उम्र में 1943 में भरा था।

जब Buffett 15 साल के थे तब उन्होंने हाई स्कूल के दौरान एक पिनबॉल मशीन खरीद कर एक बार्बर शॉप में

रख दी ताकि उनकी कमाई हो सके और कुछ ही महीनों में वो 3 मशीनों के मालिक बन गए। वो हमेशा कमाई के अलग-अलग तरीके ढूंढ कर निकाल देते थे।

ऐसा नहीं है कि उनके हाथ हमेशा सक्सेस ही लगती थी, उनकी इंवेस्टिंग जर्नी की शुरुआत में उन्होंने एक गैस स्टेशन खरीदा और उसमें उन्हें काफ़ी लॉस उठाना पड़ा, लेकिन वो हमेशा से एक ही बिज़नेस पर डिपेंड नहीं थे। उसी दौरान 22 की उम्र में Warren Buffett की शादी Susan Thompson से हुई।

Warren को अपनी इंवेस्टिंग की दुनिया मे सही मायने में हाथ आज़माने को तब मिला जब वो Benjamin Graham से मिले, Benjamin Graham शेयर मार्केट के बड़े खिलाड़ी थे और Warren Buffett उनके यहाँ 1200 डॉलर महीने की सैलरी पर काम करते थे और Warren ने इंवेस्टिंग के गुण भी Benjamin से सीखे थे।

आज भी Warren उन्ही को अपनी सक्सेस का क्रेडिट देते हैं, जब Warren ने Benjamin के साथ काम करना स्टार्ट किया उसके 2 साल बाद Benjamin Graham रिटायर हो गए थे।

Benjamin के रिटायर होने के बाद Warren ने खुद का काम स्टार्ट करने की प्लानिंग की और Buffett Partnership नाम की फ़र्म बनाई और उसी फ़र्म से जो कमाई हुई उसे Buffett ने अपना पहला घर 31500 डॉलर में खरीदा और दुनिया के सबसे रिच लोगों में से एक Warren आज भी उसी घर में रहते है जिससे उनकी सिम्पलीसिटी का पता चलता है।

उसके बाद Buffett कभी मेहनत करने से पीछे नहीं हटे और 1962 में 32 की उम्र में वो मिलियनर बन चुके थे, जब Warren 35 साल के थे तब उन्होंने Berkshire Hathaway का कंट्रोल अपने हाथ मे ले लिया क्योंकि

उस कंपनी के काफ़ी शेयर्स Warren पहले ही खरीद चुके थे। इस कंपनी से उन्हें इतनी सक्सेस मिली कि 1986 में 56 साल की उम्र में वो बिलेनियर बन गए।

75 की उम्र में Warren ने रिटायरमेंट लेने का फ़ैसला किया और अपनी नेट वर्थ का 99% हिस्सा Bill And Melinda Gates Foundation में दान दे दिया और अब तक Warren 34 बिलियन डॉलर्स का दान दे चुके हैं। 2008 में Warren दुनिया के सबसे अमीर इंसान भी रह चुके हैं। 2020 कि अकोर्डिंग Buffett की नेट वर्थ 79 बिलियन डॉलर्स है।

Warren Buffett ने दुनिया को सिखाया है कि पैसा कमाना इम्पोर्टेन्ट नहीं होता उसे सही तरीके से इन्वेस्ट करना इम्पोर्टेन्ट होता है, जब उन्होंने अपना 99% पैसा दान दिया तब उन्होंने कहा कि यह उनकी ज़िंदगी का सबसे

अच्छा अचीवमेंट है जो लाखों लोगों की ज़िंदगी बदलने के काम आएगा।

"We simply attempt to be fearful when others are greedy and to be greedy only when others are fearful".
- Warren Buffett

#18. J.K. Rowling

Harry Potter की अमेज़िंग दुनिया को सबसे पहले JK Rowling ने अपनी इमेजिनेशन में देखा था, जो सिर्फ़ बुक्स सैलिंग से बनने वाली दुनिया की पहली बिलेनियर है। Rowling का जन्म 31 जुलाई 1965 को इंग्लैंड के Yate शहर में हुआ था, उनके पिता एक इंजीनियर थे और उनकी माँ एक साइंस तकनीशियन थी।

Rowling पढ़ाई में अच्छी थी लेकिन उन्हें किसी बड़ी यूनिवर्सिटी में पढ़ने का मौका नहीं मिला, उनकी माँ हमेशा बीमार रहती थी और उनके बीच झगड़े की वजह से उनकी पढ़ाई पर बहुत प्रभाव पड़ा।

Rowling ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ना चाहती थी, उसके लिए उन्होंने एंट्रेंस एक्ज़ाम भी दिया लेकिन उनका एडमिशन किसी रीज़न की वजह से नहीं हुआ और उन्होंने अपने BA की डिग्री यूनिवर्सिटी ऑफ एक्ज़िटर से हासिल की।

BA की डिग्री के बाद उन्होंने छोटी-मोटी जॉब्स की, जिसमें उन्होंने रिसेप्शनिस्ट के तौर पर जॉब की, उनकी जॉब्स के दौरान वो एक ट्रेन में मैनचेस्टर से लंदन का सफ़र कर रही थी तब उन्हें एक छोटे बच्चें की कहानी दिमाग़ में आई जो उनके माइंड में इतना घर कर गयी कि जब वो

सफ़र करके घर पहुँची तो उन्होंने बिना देर किए उस कहानी को लिखना शुरू कर दिया।

उस वक़्त Rowling की उम्र 25 साल थी उसी टाइम पीरियड में उनकी बीमार माँ की डेथ हो गयी जिससे वो पूरी तरह से टूट गयी।

उनकी माँ की डेथ के बाद वो पुर्तगाल शिफ़्ट हो गयी वहाँ उनकी मुलाक़ात जर्नलिस्ट Jorge Arantes से हुई और उन्होंने शादी कर ली। उनकी शादी के बाद उन्हें एक बेटी हुई जिसका नाम Jessica Isabel Rowling है, Jessica से पहले उनका एक बार गर्भपात भी हो चुका था।

जब उनकी बच्ची Jessica 1 महीने की थी तब उनके पति ने उन्हें आपसी झगड़े के कारण घर से बाहर निकाल दिया था और उस इंसिडेंट की वजह से वो डिप्रेशन में आ गयी थी

क्योंकि उनके साथ उनकी 1 महीनें की बच्ची थी और वो जॉबलेस थी।

इसी रीज़न से उन्होंने सुसाइड अटेम्प्ट भी किया लेकिन वो नाक़ाम हो गयी और उन्होंने उसी डिप्रेशन से इंस्पायर होकर Harry Potter के डेमेंटर्स कैरेक्टर को बनाया।

उसके बाद Rowling अपनी बेटी को लेकर स्कॉटलैंड अपनी बहन के यहाँ चली गयी और एक स्कूल में इंग्लिश टीचर की जॉब की, वहीं से उन्होंने अपने हस्बैंड से डिवोर्स ले लिया।

Rowling के पास अपनी लिखी बुक को प्रिंट करवाने के लिए पैसा नहीं होने के कारण पब्लिशर को भेजने के लिये बुक की कॉपीज़ खुद ही टाइप करके भेजी लेकिन एक के बाद एक 12 पब्लिशर्स ने उनकी नावेल को रिजेक्ट कर दिया। इतनी प्रोब्लेम्स के बाद भी उनका कॉन्फिडेंस लेवल इतना था कि उन्हें इस बात को लेकर कोई दुख नहीं हुआ।

फाइनली जून 1997 में लंदन के एक छोटे पब्लिशिंग हाउस Bloomsbury के ओनर की बेटी को Rowling की लिखी नावेल बहुत पसंद आई और वो Harry Potter को पब्लिश करने के लिए तैयार हो गयी। जिन्होंने स्टार्टिंग में 1000 कॉपीज़ प्रिंट की जिसमें से 500 लाइब्रेरीज़ में डिस्ट्रीब्यूट की गई और आज Harry Potter की स्टार्टिंग की ओरिजिनल कॉपीज़ की वैल्यू 20000 पाउंड्स से भी ज़्यादा है।

कुछ महीनों बाद Harry Potter ने ब्रिटिश बुक अवार्ड और चिल्ड्रन बुक ऑफ दी ईयर का अवार्ड जीता और अक्टूबर 1997 में उस नावेल को पब्लिश करके, उसके राइट्स एक ऑक्शन में 105000 डॉलर्स में Scholastic Inc. के द्वारा खरीद लिए गए, उसी के साथ Rowling की सक्सेस एक अलग लेवल पर पहुँचती जा रही थी और अब

तक Harry Potter सिरीज़ की 50 करोड़ से भी ज़्यादा कॉपीज़ बिक चुकी हैं।

उनके Harry Potter सिरीज़ पर फ़िल्म बनाने के राइट्स Warner Bros. ने ख़रीद लिए और Harry Potter की 8 फ़िल्म्स का प्रोडक्शन किया जिसकी फ़र्स्ट मूवी 2001 में रिलीज़ हुई और लास्ट 2011 में जो सभी सुपरहिट साबित हुई।

Harry Potter नावेल की वजह से Rowling वर्ल्ड की फ़ेमस राइटर के अलावा दुनिया के सबसे अमीर लोगों में आने लगी। 2011 में Rowling फ़ोर्ब्स के वर्ल्ड के सबसे अमीर लोगों में 1140वी पोजीशन पर थी और 2011 में Rowling ने दूसरी शादी कर ली।

वो अभी स्कॉटलैंड में रहती हैं, Rowling की लाइफ़ में आये उतार-चढ़ाव में भी उन्होंने अपने काम को कंटिन्यू

रखा और अपने आप को एक सक्सेसफुल राइटर के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया।

“Happiness can be found, even in the darkest of times, if one only remembers to turn on the light.”
- J.K. Rowling

#19. Mother Teresa

दुनिया में बहुत से लोग हैं जो अपने लिए जीते हैं लेकिन सिर्फ़ कुछ ही ऐसे लोग होते हैं जो दूसरों के लिए अपनी पूरी लाइफ़ लगा देते हैं, Mother Teresa उसी पर्सनालिटी का नाम है। Mother Teresa ने अपनी पूरी लाइफ़ ग़रीब,अनाथ, बेघर और बीमार लोगों की सेवा में दे दी।

Mother Teresa का रियल नाम Agnes Gonxha Bojaxhiu था, उनका जन्म 26 अगस्त 1910 को Skopje, North Macedonia में हुआ था, जब उनकी उम्र 8 साल थी तब उनके पिता की डेथ हो गयी थी और वो अपने 5 भाई-बहनों में सबसे छोटी थी।

वो बचपन से पढ़ाई में बहुत अच्छी थी और मेहनती भी थी, उनकी बड़ी बहन एक चर्च में सिंगिंग का काम करती थी और सिर्फ़ 12 साल की उम्र में उन्हें अहसास हो गया था कि वो अपनी पूरी लाइफ़ लोगों की सेवा में स्पेंड कर देगी।

जब Teresa 18 साल की हुई तो वो एक सन्यासी बन गयी और अपनी लाइफ़ को एक अलग डायरेक्शन में ले जाने लगी और अपना घर छोड़ कर आयरलैंड चली गयी, वहाँ जाकर उन्होंने Sister Of Loreto को जॉइन कर लिया और इंग्लिश सीखने लग गयी क्योंकि इंग्लिश ही वो लैंग्वेज

थी जिससे कम्यूनिकेट करने में आसानी रहती थी, वहीं उनको Sister Teresa का नया नाम मिला।

Sister Teresa 6 जनवरी 1929 को आयरलैंड से डारजीलिंग, इंडिया आयी, जहाँ उन्होंने मिशनरी स्कूल में पढ़ाने का काम किया, फिर उन्होंने इंडिया में सन्यासी के रूप में शपथ ली और कलकत्ता चली गयी। 1944 में वो वहाँ की स्कूल की हेडमिस्ट्रेस बन गयी।

1943 में पड़े अकाल के कारण शहर में बहुत लोगों की मौत हुई और बहुत लोगो की ख़राब स्थिति में Mother Teresa ने लोगों की बहुत मदद की।

1946 में उन्होंने ग़रीब और अनाथ बच्चों के लिए पटना में नर्सिंग की ट्रेनिंग सिर्फ़ इसलिये की ताकि वो ग़रीबों का इलाज बिना किसी भेदभाव के फ्री में कर सके, जहाँ लोग बीमारियों के डर से मरीज़ों के पास में जाने से डरते थे वहीं

Mother Teresa बिना किसी डर के सेवा भाव से मरीज़ों को दवाई देने और उनके घावों को साफ़ करने जाती थी।

उनके इसी काम की वजह से उन्हें काफ़ी पहचान भी मिली, उन्होंने सेवा करने के लिए कान्वेंट स्कूल भी छोड़ दिया था जिससे उनके पास इनकम सोर्स भी नहीं था।

7 अक्टूबर 1950 को Mother Teresa को मिशनरी ऑफ चैरिटी बनाने की परमिशन मिल चुकी थी, जिसकी स्टार्टिंग में उनके पास 12 वॉलंटियर्स ही थे, लेकिन आज उनकी आर्गेनाईजेशन में 4000 से भी ज़्यादा वॉलंटियर्स काम करते हैं, जिसका नाम Mother House Of The Missionaries Of Charity हैं।

1957 में फ़ैली लेप्रोसी (कुष्ठ रोग) बीमारी में उन्होंने लोगों का खूब इलाज किया जबकि छुआछूत की बीमारी के कारण दूसरे लोग उनके पास जाने से डरते थे, वो हमेशा ईश्वर में विश्वाश रखती थी।

1965 में उन्हें अपनी मिशनरी को बाहर के देशों में फ़ैलाने की परमिशन मिल गयी और आज 100 से ज़्यादा देशों में Mother Teresa की चलाई मुहिम से लोगों की मदद होती है, जिनके काम को बड़े-बड़े नेताओं ने सराहा है।

उनकी लाइफ़ में बहुत कंट्रोवर्शिज़ भी आई, जब वो लोगों की सेवा में लगी हुई थी तब उन पर काफ़ी आरोप लगे कि वो भारत के लोगों का धर्म परिवर्तन करने के लिए ये सब काम कर रही है, उन्हें क्रिशचन धर्म का प्रचारक समझा जाने लगा लेकिन वो उन सब बातों की तरफ़ ध्यान न देकर अपने काम मे लगी रही।

उनकी लाइफ़ काफ़ी उतार-चढ़ाव से भरी रही लेकिन वो हमेशा अपने माइंड में अपने गोल को लेकर चलती रही और कई देशों में शांति भरे काम को फ़ैलाने का काम जारी रखा, उसी के चलते उन्हें 1962 में पद्मश्री से नवाज़ा गया, 1979 में उन्हें अपनी लाइफ़ में की गई सेवा और ग़रीब बच्चों और

अनाथों के इलाज को ध्यान में रखते हुए नोबेल पीस प्राइज़ से नवाज़ा गया और 1980 में उन्हें भारत रत्न दिया गया। 1985 में उन्हें अमेरिका की तरफ़ से मेडल ऑफ़ फ़्रीडम दिया गया।

1997 के शुरुआती दिनों में उन्हें ये एहसास हुआ कि अब उन्हें अपना पद छोड़ देना चाहिए और किसी और को उस काम के लिए चुना जाना चाहिए और उन्होंने मिशनरी ऑफ़ चैरिटी हेड के पद से रिज़ाइन कर दिया और 5 सितंबर 1997 को कोलकाता में उनकी डेथ हो गयी।

"There are no great things, only small things with great love. Happy are those."

- Mother Teresa

#20. Abraham Lincoln

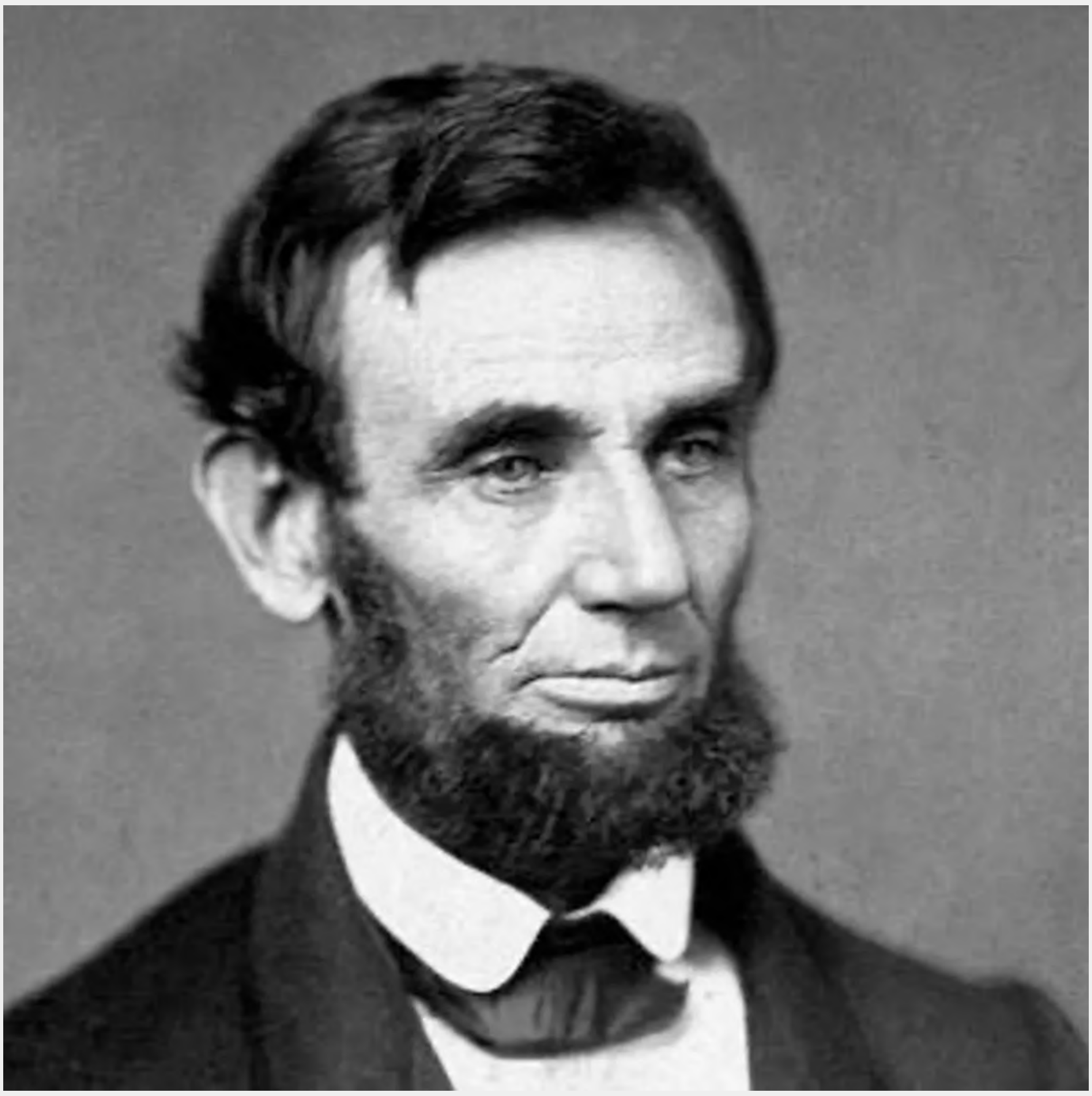

Abraham lincoln जो अमेरिका के 16वे प्रेज़िडेंट थे, जिनको लोग उनकी काइंडनेस, बार-बार मिली हार और लोगों को स्लेवरी से मुक्त करवाने के लिए जानते है। उनका झोपड़ी से लेकर वाइट हाउस तक का सफ़र आज के लोगों

के लिए एक मिसाल कायम करता हैं, जो 1861 से 1865 तक अमेरिका के प्रेज़िडेंट रहे।

Abraham Lincoln का जन्म केंटकी के हार्डिंन काउंटी में एक लोग केबिन (लकड़ी का छोटा घर) में हुआ था, उनके पिता का नाम Thomas Lincoln था जो एक किसान थे, जब Lincoln 9 साल के थे तब उनकी माँ की डेथ हो गयी।

Abraham Lincoln बचपन में तो बहुत आलसी थे लेकिन फ़ैमिली कंडीशन सही नहीं होने की वजह से उन्हें लकड़ी काटने का काम करना पड़ा, Lincoln बचपन से स्लेवरी (दासप्रथा) के बिल्कुल ख़िलाफ़ थे। उन्होंने खेत में मज़दूरी का काम भी किया और बाद में वो शहर के सबसे ईमानदार वक़ील भी कहलाये।

उन्होंने अपनी लाइफ़ में 20 साल तक वक़ालत की, इतने साल तक वक़ालत करने के बाद भी उनकी फ़ैमिली की

कंडीशन ज़्यादा सही नहीं हो पाई क्योंकि वो ज़्यादातर ग़रीब लोगों के लिए केस लड़ते थे और उनसे ज़्यादा पैसे भी नहीं लेते थे, इसकी वजह ये थी कि वो केस सॉल्व करवाने में ज़्यादा ध्यान देते थे और बाद में फ़ीस मिलती या नहीं मिलती उन्हें फ़र्क नहीं पड़ता था वो बस अपना काम करते थे।

आधे से ज़्यादा केस वो कोर्टरूम के बाहर ही सॉल्व करवा देते थे ताकि किसी का केस के चक्कर में फाइनेंसियल लॉस न हो, इसी ईमानदारी की वजह से वो फाइनेंसियल तौर पर ग़रीब रहे। ऐसा नहीं है कि ईमानदारी से पैसे नहीं कमाए जा सकते लेकिन उनका प्रोफेशन और फाइनेंसियल कंडीशन भी कोर्ट केसेस पर डिपेंड थी और वो ज़्यादा पैसे भी चार्ज नहीं करते थे।

एक बार उन्हें किसी क्लाइंट ने 25 डॉलर फ़ीस के तौर पर भेजे तो Lincoln ने उन्हें 10 डॉलर वापस भेज दिए

क्योंकि उन्हें वो फ़ीस ज़्यादा लग रही थी, उन्होंने कभी पैसों के लिए काम नहीं किया।

जब Lincoln की शादी 1842 में Mary Todd से हुई, वो दिन Lincoln की ज़िंदगी का आखिरी दिन था जब Lincoln खुश थे (According To William H Herndon) क्योंकि उनकी पत्नी बहुत ही घमंडी और गुस्से वाली थी और साथ ही बहुत ही महत्वकांशी महिला थी।

Mary Todd ने शादी से बहुत पहले ही बोल दिया था कि वो उसी व्यक्ति से शादी करेगी जो आगे जाकर अमेरिका का प्रेज़िडेंट बनेगा, जिस बात का लोग मज़ाक भी बनाया करते थे।

शादी के बाद Lincoln और उनकी वाइफ़ कई दिनों तक स्प्रिंगफ़ील्ड (जहाँ Lincoln की शादी हुई) में किराए पर रहे, जहाँ उनकी वाइफ़ ने एक बार किसी बात से गुस्सा

होकर Lincoln के मुँह पर गर्म चाय फेंक दी थी, लेकिन Lincoln इतने शांत इंसान थे कि उन्हें गुस्सा तक नहीं आया और वो Lincoln की शक्ल और पहनावें का मज़ाक भी बनाया करती थी।

1854 में Lincoln ने राजनीति में क़दम रखा, इससे पहले भी वो राजनीती में क़दम रख चुके थे लेकिन कई इलेक्शन हारने के बाद उन्होंने राजनीति के सफ़र को बीच मे ही छोड़ दिया था, इस बार भी वो कई चुनाव में खड़े हुए लेकिन फिर उसे उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

वो Whig पार्टी से जुड़े थे लेकिन कुछ टाइम बाद वो पार्टी ख़त्म हो गयी और उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी जॉइन की, वहाँ से उन्होंने वाइज़ प्रेज़िडेंट का चुनाव लड़ा लेकिन वो फिर से हार गए।

उन्होंने ग़रीब लोगों के लिए पहले ही बहुत काम कर दिए थे और क्योंकि वो दासप्रथा को ख़त्म करना चाहते थे तो इसी

सब्जेक्ट में उन्होंने एक स्पीच में कहा भी था कि वो अमेरिका का बंटवारा नहीं होने देंगे और जातिवाद और ग़ुलामी को देश से मिटा कर रहेंगे, उनकी इस स्पीच से लोग इतने प्रभावित हुए कि फाइनली इतनी हार देखने के बाद Abraham Lincoln को अमेरिका का प्रेज़िडेंट चुना गया।

1860 में वो अमेरिका के 16वे प्रेज़िडेंट के पद पर चुने गए और जैसा उन्होंने स्पीच में कहा था उन्होंने वैसा करके भी दिखाया, वो सब प्रॉमिस जो Lincoln ने लोगों से किये थे उन्होंने उसे पूरा किया। 14 अप्रैल 1865 को वाशिंगटन डी सी में फ़ोर्ड थिएटर में एक लाइव शो के दौरान उनकी हत्या हो गयी।

अब तक अमेरिका में 46 प्रेज़िडेंट रहे है, उनमें से Abraham Lincoln अमेरिका के सबसे फ़ेमस प्रेज़िडेंट

हैं, जिन्हें उनकी काइंडनेस और प्रिंसिपल्स के लिए जाने जाता हैं।

“Whatever you are, be a good one.”
- Abraham Lincoln

#21. Stephen Hawking

Stephen William Hawking एक ऐसा नाम है जिनका ब्लैक होल और बिग बैंग थ्योरी को दुनिया को समझाने में एक इम्पोर्टेन्ट रोल है, जिन्होंने कॉस्मोलॉजी को एक नई दिशा दी, जिन्हें मोटर न्यूरॉन नाम की बीमारी होने के बाद भी इस दुनिया को उन्होंने ऐसी थ्योरी दी, जो कॉसमॉस को जानने में काफ़ी मददगार साबित होती है।

Stephen William Hawking का जन्म इंग्लैंड में 8 जनवरी 1942 को Frank और Isabel के घर हुआ, उनकी माँ और पिता दोनों ही मेडिकल डिपार्टमेंट में काम करते थे। उनका बचपन ऑक्सफ़ोर्ड शहर में गुज़रा और जब वो 11 साल के थे तब वो St. Albans शिफ़्ट हो गए थे।

Stephen ने अपनी प्राइमरी स्कूल, ट्रिनिटी हॉल, कैंब्रिज से की और हाईस्कूल St. Albans हाई स्कूल से और ऑक्सफ़ोर्ड से फिजिक्स में ग्रेजुएशन किया, फिर उन्होंने कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से मैथ्स और कॉस्मोलॉजी में PHD की।

कॉलेज तक उनकी लाइफ़ सही जा रही थी लेकिन 1963 में जब वो 21 साल के थे तब उनकी ख़राब तबियत के चलते उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया, जहाँ उनके टेस्ट में पता चला

कि उन्हें मोटर न्यूरॉन नाम की लाइलाज बीमारी है, जिसमें धीरे-धीरे शरीर के सभी पार्ट्स काम करना बंद कर देते हैं।

उसी बीमारी की वजह से डॉक्टर्स ने उन्हें 2 साल का टाइम दिया था और कहा कि वो इससे ज़्यादा नहीं जी सकते लेकिन ये Hawking की किस्मत को शायद मंज़ूर नहीं था। उस बीमारी के बाद Stephen लाइफ़ में कभी हताश नज़र नहीं आये, उन्हें देखकर कभी लगा ही नहीं कि वो इस बीमारी से हार जायेंगे।

इसी बीमारी के दौरान उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज से अपनी PHD की डिग्री हासिल की और 1965 में उन्होंने Jane Wilde से शादी कर ली। PHD करने के बाद Hawking ने कैंब्रिज में ही रिसर्चर के तौर पर काम किया। फिर 1972 में Hawking DAMTP में से जुड़े जहाँ उन्होंने अपनी पहली बुक "The Large Scale Structure Of Space And Time" लिखी।

उसी पीरियड में Hawking के बॉडी पार्ट्स एक-एक करके काम करना बंद कर रहे थे। 1974 में Hawking ने ब्लैक होल की थ्योरी के बारे में बताया जिसे बाद में Hawking's Radiation Theory के नाम से जाना जाने लगा।

उसी साल 1974 में Hawking को ब्रिटेन की रॉयल सोसाइटी के सबसे कम उम्र का सदस्य चुना गया। 1977 में उन्होंने DAMTP में प्रोफेसर के तौर पर काम किया और 1979 में उन्हें University Of Cambridge में Maths caucasian प्रोफेसर चुना गया, जो एक फ़ेमस पद है और उस पद पर Hawking ने 2006 तक काम किया।

1979 में उन्हें साइंस में अपने कॉन्ट्रिब्यूशन के लिए Albert Einstein मेडल से नवाज़ा गया फिर 1982 में

'दी आर्डर ऑफ दी ब्रिटिश एम्पायर' और 1988 में फिजिक्स में 'वुल्फ प्राइज' से सम्मानित किया गया।

1988 में उनकी बुक दी ब्रिफ़ हिस्ट्री ऑफ टाइम पब्लिश हुई जो उस समय की ज़्यादा बिकने वाली बुक बनी और 237 हफ़्तों तक चली। 2009 में उन्हें अमेरिका का सर्वोच्च नागरिक अवार्ड 'प्रेज़िडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम' मिला।

2014 में Stephen Hawking पर एक मूवी भी बनाई गई जिसका नाम 'दी थ्योरी ऑफ एवरीथिंग' था, जिसमें Hawking के लाइफ़ के स्ट्रगल को बताया गया है कि कैसे उन्होंने अपने सपनों को पूरा किया। 14 मार्च 2018 को इस महान साइंटिस्ट ने दुनिया को अलविदा कहा और इंसानों की ज़िंदगी बेहतर बनाने के लिए कई थ्योरीज़ और रिसर्च पीछे छोड़ गए।

उन्हें अपने पूरे करियर में हज़ारों अवार्ड्स मिले, Stephen ने अपनी लाइफ़ 53 साल व्हील चेयर पर गुज़ारी लेकिन उस

व्हील चेयर ने उन्हें कभी नॉर्मल इंसानों से स्लो नहीं किया, उनके काम और साइंस में अपने कॉन्ट्रिब्यूशन को देखकर कोई ये नहीं कह सकता कि वो एक साधारण इंसान थे।

इंसान की बुद्धि का कोई अंत नहीं होता अगर आप उसे पॉज़िटिव तरीके से यूज़ करे तो दुनिया मे काफ़ी बदलाव लाये जा सकते हैं।

“Intelligence is the ability to adapt to change.”

- Stephen Hawking

#22. Stan Lee

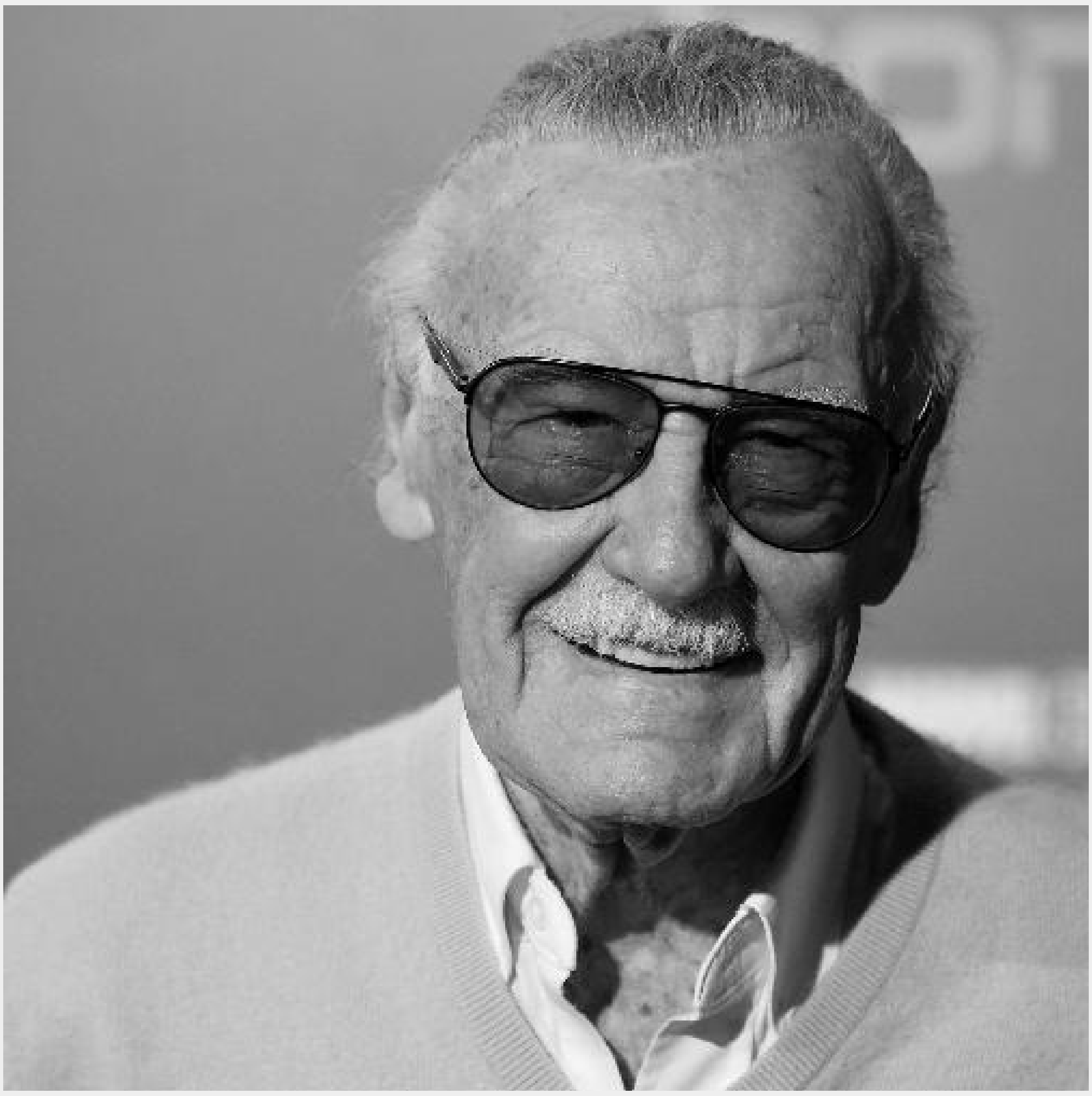

जब भी Spider Man, Batman, Superman, X-Men जैसे कैरेक्टर्स का नाम आता है तो उनके क्रिएटर के बारे में ज़रूर सोचा जाता है और इन सब सुपरहीरोज़ के पीछे एक ही इंसान थे जिनका नाम Stan Lee था, उन्होंने

अपनी इमेजिनरी सोच से ऐसे कई कैरेक्टर्स को बनाया जिन्हें पूरी दुनिया बहुत पसंद करती है।

Stan Lee का रियल नाम Stanley Martin Lieber था, जिनका जन्म 28 दिसंबर 1922 को न्यूयॉर्क अमेरिका में हुआ, जो एक एक्टर, डायरेक्टर, प्रोड्यूसर और राइटर थे। हर बड़ा इंसान बड़े स्ट्रगल से बड़ा बनता है और Stan Lee भी उन्ही बड़े इंसानों की तरह थे, उनका जन्म भी एक ग़रीब फ़ैमिली में हुआ था।

उनके पिता एक क्लोथिंग कंपनी में काम करते थे, फाइनेंसियल कंडीशन सही न होने की वजह से उन्हें स्कूल टाइम से ही पार्ट टाइम जॉब करनी पड़ी और उन्होंने डिलीवरी बॉय के रूप में काम करना शुरू किया।

16 साल की उम्र में उन्होंने Timely Comics में जॉइन किया, जहाँ उन्होंने काफ़ी छोटे-छोटे काम से स्टार्टिंग की जैसे पेन में इंक भरना, एम्प्लॉयीज़ के लिए लंच लाना,

फ़ाइल्स को अरेंज करना और भी कई काम किये, फिर वो इसी कंपनी में एडिटोरियल असिस्टेंट बने और उन्होंने अपनी इमेजिनेशन से पहले सुपरहीरो को बनाया जिसका नाम डिस्ट्रॉयर रखा।

1942 में 20 साल की उम्र में वो वहाँ के एडिटर बन गए। जहाँ उन्होंने कॉमिक बुक की स्क्रिप्ट्स लिखना शुरू किया और वहाँ से उनका नाम Stan Lee हो चुका था। वो काफ़ी सालों तक उस कंपनी में एडिटर के पद पर रहे।

Stan Lee ने 1942 से 1945 तक सेकंड वर्ल्ड वॉर में US आर्मी भी जॉइन की और US आर्मी से वापस आने के बाद उन्होंने फिर से Timely मैगज़ीन को जॉइन किया। फिर उन्होंने दी विटनेस, जैक फॉरेस्ट और ब्लैक मार्वल नाम की बुक सिरीज़ बनाई, उस वक़्त Timely मैगज़ीन का नाम बदलकर Atlas हो चुका था।

उसी दौरान Stan Lee ने Atlas को छोड़ने का फ़ैसला किया क्योंकि वो उस काम को करके ऊब चुके थे और उसी दौरान उनकी एक राइवल कंपनी डी सी कॉमिक्स बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही थी और डी सी कॉमिक्स को अगर कोई पीछे छोड़ सकता था तो वो Stan Lee थे।

यह बात Atlas Comics के मालिक को अच्छे से पता थी इसलिए उन्होंने Stan Lee को कंपनी न छोड़ने के लिए बहुत कन्विंस किया और Stan Lee कंपनी को न छोड़ने के लिए मान गए और अपना काम कंटिन्यू रखा।

1961 में Stan Lee ने उनके साथी आर्टिस्ट Jack Kirby के साथ मिलकर The Fantastic Four के कैरेक्टर्स का निर्माण किया, जिसने Stan Lee को बहुत सक्सेस दिलाई फिर उसके एक साल बाद Stan Lee ने Steve Ditko के साथ मिलकर Spiderman के कैरेक्टर को बनाया

और इसके बाद में The Incredible Hulk के कैरेक्टर को भी बनाया गया।

Fantastic Four की सक्सेस के बाद Atlas Comics का नाम बदलकर Marvel Comics कर दिया गया और 1963 में Lee ने X-Men के कैरेक्टर को बनाया फिर 1972 में Stan Lee खुद एक पब्लिशर बन गए। लगभग 60 साल तक कॉमिक्स की दुनिया में अपने जादू को दिखाने के बाद उन्होंने दूसरे प्रोजेक्ट्स में काम करना शुरू किया और 1999 में Lee ने अपनी खुद की कंपनी Stan Lee Media बनाई और अपने सुपरहीरोज़ को दुनिया के सामने लाया।

कुछ टाइम की सक्सेस के बाद फरवरी 2001 में उनकी कंपनी दिवलिया हो गयी लेकिन 2004 में Pow Entertainment नाम की कंपनी बनी, जिसने Lee के सुपरहीरोज़ को फिर से पर्दे पर उतारा।

अगर Stan Lee की मूवीज़ की बात करे तो X-Men(2000) और Spider man(2002) इतनी हिट साबित हुई कि इन्होंने बिलियन डॉलर्स से ज़्यादा का बिज़नेस किया, इनके साथ ही Daredevil (2003), Hulk (2003) और Ironman (2008) भी ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

Stan Lee भी इन मूवीज़ में गेस्ट अपीयरेंस के रूप में दिखाई दे चुके हैं, साथ ही Lee और Kirby की बनाई गई मूवीज़ भी ब्लॉकबस्टर रही जो Thor (2011), The Avengers (2012) और Ant-Man (2015) थी।

Lee जिन्होंने अपनी लाइफ़ में 300 से ज़्यादा सुपरहीरोज़ के कैरेक्टर्स को बनाया, जो लगभग सभी ब्लॉकबस्टर हैं, उनकी डेथ 12 नवम्बर 2018 को 95 की उम्र में हुई थी।

Lee ने अपनी क्रिएशन और इमेजिनेशन से दुनिया को कुछ ऐसे कैरेक्टर्स दिए जो एंटरटेनमेंट की दुनिया को एक नई

ऊँचाई तक ले गए। किसने सोचा था कि ऑफिस में एम्प्लॉयीज़ के लिए लंच बॉक्स लाने वाला इंसान एक दिन महान क्रिएटर बनेगा जिसकी बनाई मूवीज़ पूरी दुनिया में बिलियन्स का बिज़नेस करेगी, बच्चों से लेकर बड़े भी उनके कैरेक्टर्स के फ़ैन हैं।

ये अविश्वसनीय काम हार्डवर्क, फोकस और कंसिस्टैंटली 70 से ज़्यादा साल एक काम मे देने का रिज़ल्ट था।

"With great power comes great responsibility."

- Stan Lee

#23. Ratan Tata

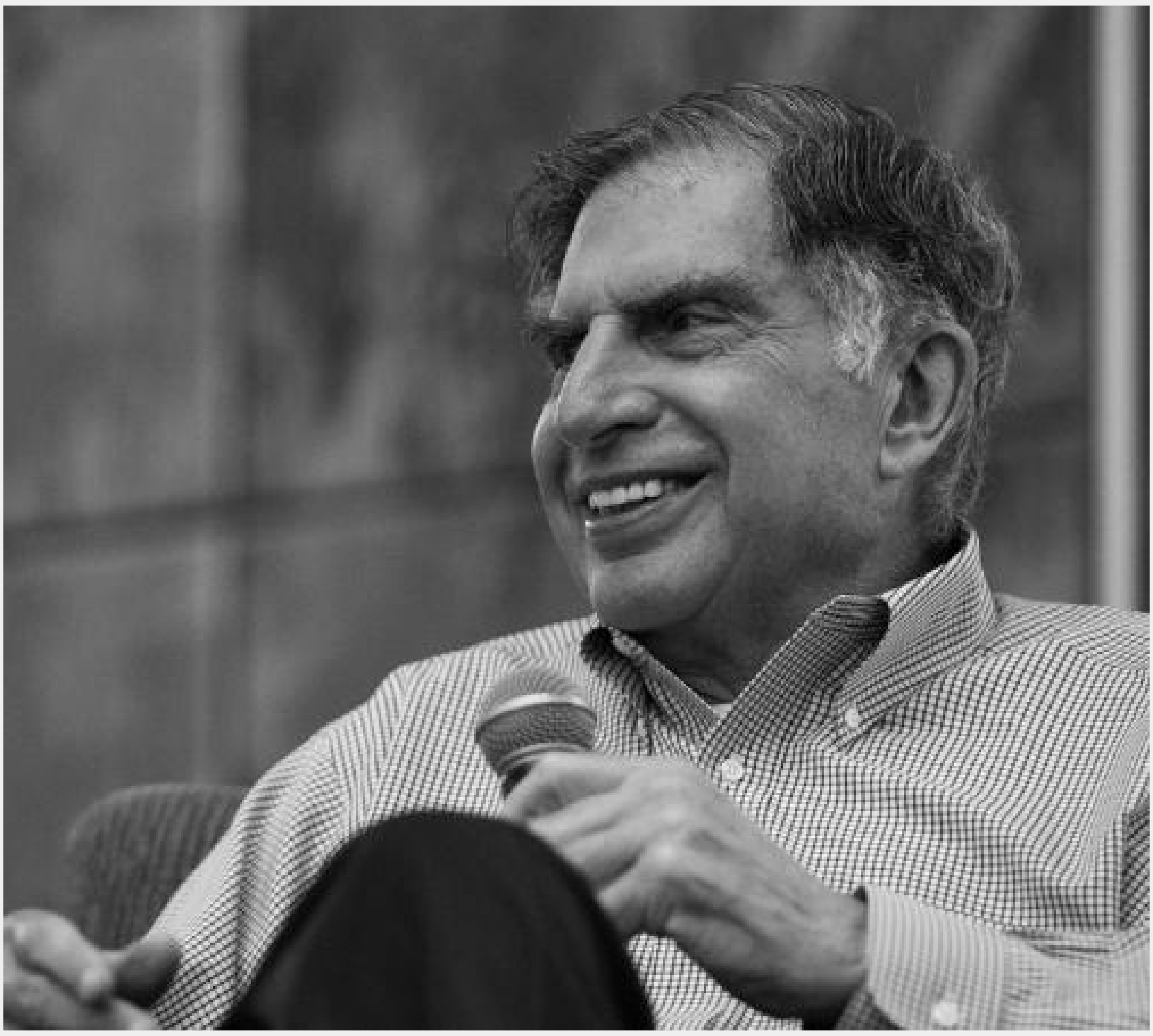

Ratan Tata एक इंडियन बिज़नेसमैन हैं जो अपने प्रिंसिपल्स, अपने बिज़नेस करने के तरीके के लिए जाने जाते हैं जिनका मतलब बिज़नेस से सिर्फ़ पैसे कमाना नहीं होता बल्कि अपने देश और देश के लोगों को अच्छी सर्विस देने से होता है।

ऐसे कई इंसिडेंट्स है जिनसे ये पता चलता है कि Ratan Tata अपने फ़ायदे के लिए या दूसरे को नुकसान पहुँचा कर या अपने प्रिंसिपल्स या अपने नियम के अगेंस्ट जाकर कभी बिज़नेस नहीं करते है। शायद यही क्वालिटी हैं जो उन्हें बाकी बिज़नेसमैन से अलग बनाती है और शायद यही वजह है जो उन्हें "मैन विथ नो हेटर्स" बनाती हैं।

Ratan Tata का जन्म सूरत के एक पारसी फ़ैमिली में हुआ, उनके पिता का नाम Naval Tata था जो Jamsetji Tata के गोद लिए हुए बेटे थे, Ratan Tata की प्राइमरी एजुकेशन कैंपियन स्कूल मुम्बई में हुई और सेकेंडरी एजुकेशन कैथेड्रल एंड जॉन केनन स्कूल से हुई। इसके बाद Tata में 1959 में कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से आर्किटेक्चर की डिग्री हासिल की और 1975 में Harward बिज़नेस स्कूल से एडवांस मैनेजमेंट की पढ़ाई पूरी की।

पढ़ाई पूरी करने के बाद Tata ने कुछ टाइम के लिए लॉस एंजेल्स में Jones And Emmons में काम किया। 1961 में उन्होंने भारत वापस आकर Tata ग्रुप के साथ अपने करियर की शुरुआत की। शुरुआती दिनों में उन्होंने Tata Steel के शॉप फ़्लोर पर काम किया जिसके लिए उन्हें जमशेदपुर भेजा गया और Tata के और भी दूसरे कामों के साथ मे जुड़े रहे।

1972 में Tata Nalco (रेडियो एंड इलेक्ट्रॉनिक) के डायरेक्टर बने उस टाइम Nalco की मार्केट में हिस्सेदारी 2% थी लेकिन 1975 के अंत तक Nalco ने अपना सारा लॉस कवर कर लिया और मार्केट की हिस्सेदारी भी 20% कर ली। 1977 में Tata ने Empress Mills को एक बड़े लॉस से बाहर लाया।

1981 में Ratan Tata, टाटा इंडस्ट्रीज़ के प्रेज़िडेंट बने और 1991 में JRD Tata ने टाटा एंड संस के प्रमुख पद का

उत्तराधिकारी Ratan Tata को बनाया, तभी से Ratan Tata ने अपने काम करने के तौर तरीके को दुनिया के सामने लाया और आज Tata जिस मुक़ाम पर है, उसमें Ratan Tata का बहुत बड़ा रोल है, उन्होंने इस कंपनी को कई लॉस से बाहर निकाल कर आज दुनिया की सबसे बड़ी कंपनीज़ में से एक बना दिया है।

Ratan Tata की जैगुआर और लैंड रोवर कार को खरीदने की स्टोरी काफ़ी दिलचस्प है, 1999 में जब Tata Detroit, मिशिगन में अपनी पैसेंजर व्हीकल के बिज़नेस को सेल करने के लिए गए तब फ़ोर्ड के चेयरमैन Bill Ford ने उन्हें अपमानित शब्द कहे और उसके ठीक 9 साल बाद समय कुछ ऐसा बदला की Ford को दिवालिया का सामना करना पड़ा और Tata ने उनकी आइकोनिक ब्रांड जैगुआर लैंड रोवर को 2.3 बिलियन डॉलर में खरीद लिया। उसके बाद Bill Ford ने उनका धन्यवाद भी

किया और कहा कि उन्होंने Ford को दिवालिया होने से बचा लिया।

अगर उनके कार के बिज़नेस की बात करे तो पूरी तरह से भारत में बनी भारत की पहली पैसेंजर कार Indica को लॉन्च किया, फिर 23 मार्च 2009 को उन्होंने Tata Nano कार को लॉन्च किया, जिसके प्रोडक्शन की मदद से उनका एक ही मक़सद था कि वो ज़्यादा से ज़्यादा रोजगार लोगों को दे सके और कार को इतना सस्ता बनाया जा सके ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों का कार ख़रीदने का सपना पूरा हो सके, इसे दुनिया की सबसे सस्ती कार मानी जाती हैं।

28 दिसंबर 2012 को उन्होंने Tata ग्रुप से रिटायरमेंट ले लिया, उन्होंने Tata के साथ 50 साल तक काम किया और देश के प्रति सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने

उन्हें साल 2000 में पद्म भूषण से सम्मानित किया और 2008 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

उसी साल 2008 में उन्हें टाइम मैगज़ीन ने दुनिया के 100 प्रभावशाली व्यक्तियों की लिस्ट में शामिल किया और रिटायर होने के बाद आज भी अगर देश किसी मुश्किलों में होता है तो वो डोनेशन के द्वारा हेल्प करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

“I don't believe in taking right decisions. I take decisions and then make them right.”
- Ratan Tata

#24. Jeff Bezos

ऑनलाइन शॉपिंग की बात की जाए तो सबसे पहले दिमाग़ में एक ही वेबसाइट Amazon आती है, जिसकी शुरुआत एक घर के गेराज से हुई और आज वो दुनिया की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स वेबसाइट है और ये सिर्फ़ एक व्यक्ति के दिमाग़ की उपज है जिनका नाम Jeff Bezos हैं। उन्होंने

इस वेबसाइट के ज़रिए लोगों का शॉपिंग करने का तरीका पूरी तरहसे बदल डाला।

Jeff Bezos का जन्म 12 जनवरी 1964 को अमेरिका के न्यू मेक्सिको सिटी में हुआ, उनके जन्म के टाइम उनकी माँ हाई स्कूल में पढ़ाई कर रही थी और उस समय उनकी उम्र सिर्फ़ 17 साल थी और उनके पिता उन्हें और उनकी माँ को छोड़कर चले गए उस वक़्त Jeff Bezos की उम्र सिर्फ़ 18 महीने थी।

इसके बाद उनकी माँ ने दूसरी शादी कर ली और Jeff Bezos हॉस्टन शिफ़्ट हो गए जहाँ उन्होंने रिवर ओक्स एलिमेंट्री स्कूल से प्राइमरी स्टडी की फिर उनका परिवार फ्लोरिडा शिफ़्ट हो गया जहाँ उन्होंने मिआमि पालमेटो हाई स्कूल से अपनी स्कूलिंग की और बाद में उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा के साइंस ट्रैन प्रोग्राम में हिस्सा लिया और 1982 में उन्हें सिल्वर नाइट अवार्ड भी मिला फिर साल

1986 में उन्होंने कंप्यूटर साइंस में यूनिवर्सिटी ऑफ प्रिंसटन से ग्रेजुएशन की।

जब Jeff 16 साल के थे तब वो मैकडोनाल्ड में टेबल साफ करने का काम करते थे, एक बार उन्होंने बताया कि वहाँ काम करते वक़्त उनके हाथ से 5 गैलन कैचअप का कंटेनर गिर गया था, जिसकी भरपाई उन्हें वहाँ काम करके चुकानी पड़ी थी जिनसे उन्हें बहुत निराशा मिली थी।

वो शुरुआत के दिनों में अपने नाना के साथ उनके फ़ार्म पर भी काम करते थे, जहाँ कुछ टाइम काम करने के बाद उन्होंने खुद के फ़ार्म पर काम करना शुरू किया।

ग्रेजुएशन के बाद Bezos ने 1990 में वॉल स्ट्रीट में D.E. Shaw & Company में इन्वेस्टमेंट को प्रेडिक्ट और एनालाइज़ करने का काम किया और 1992 में कंपनी ने उनके काम को देखते हुए उन्हें वहाँ का सबसे कम उम्र का सीनियर वाईस प्रेज़िडेंट बना दिया। जहाँ उन्होंने 1994 तक

काम किया फिर उन्होंने खुद का काम शुरू करने के लिए वो नौकरी छोड़ दी।

नौकरी छोड़ने के बाद Bezos ने 1994 में अपने घर के गेराज में Amazon कंपनी की नींव रखी, जिसमें स्टार्टिंग में वो ऑनलाइन बुक्स को बेचा करते थे, फिर जून 1998 में उन्होंने ऑनलाइन CD को बेचना शुरू किया और 1999 में उन्होंने Pawn Shops को अपनी वेबसाइट से जोड़ा जिसमें लोग ऑनलाइन ही घर बैठे ऑक्शन के ज़रिए सामान को बेच और ख़रीद सकते थे।

उसी साल 1999 में Jeff बिलेनियर बन चुके थे और कुछ ही सालों में Amazon ई-कॉमर्स की दुनिया में सबसे आगे हो चुका था और 2005 में उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स और हार्डवेयर के सामान को भी अपनी वेबसाइट के थ्रू बेचना शुरू कर दिया।

उन्होंने अपनी अलग सोच और लोगों को सुविधा देने के लिए Amazon तो बनाया, साथ ही 2000 में उन्होंने ब्लू ओरिजिन एयरोस्पेस कंपनी बनाई जिसमें उनका विज़न लोगों को स्पेस में कम से कम खर्च में भेजने का है, 2019 के अनुसार इस प्रोजेक्ट में 2500 लोग काम करते हैं। 5 अगस्त 2013 को Bezos ने अमेरिका की वाशिंगटन पोस्ट को 250 मिलियन डॉलर मे खरीदा।

इस बुक को लिखते समय Jeff Bezos 185 बिलियन डॉलर्स के साथ आज दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति हैं, अपने गेराज में 21 लोगों से शुरुआत करने से आज Amazon को दुनिया की 4th सबसे बड़ी कंपनी बना दिया है, जिसमें 2020 के अनुसार 1,125,300 एम्प्लॉयीज़ काम करते हैं।

यह सब उनका हार्डवर्क और लोगों को बेहतर सुविधा देने की पॉजिटिव थिंकिंग के रिज़ल्ट्स है। उन्हें 1999 में टाइम

मैगज़ीन के द्वारा पर्सन ऑफ दी ईयर क्लब के ख़िताब मिला था और 2008 में उन्हें US न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट के द्वारा अमेरिका का बेस्ट लीडर चुना गया, साथ ही वो फिलैंथरोपिस्ट भी है जो लोगों के हित के लिए दान देते हैं।

"If you do build a great experience, customers tell each other about that. Word of mouth is very powerful." - Jeff Bezos

#25. Henry Ford

जब कार बनना शुरू हुई थी तब आम लोगों के लिये इसे खरीदना लगभग नामुमकिन था क्योंकि या तो वो बहुत ज़्यादा महँगी थी या उन्हें बिना ट्रेनिंग के चलाना इतनी आसान बात नहीं थी, लेकिन गाड़ियों को आम जनता की सुविधा के अनुसार बनाने में अगर किसी का हाथ है तो वो हैं Henry Ford, जिन्होंने फ़ोर्ड मोटर कंपनी की स्थापना

की और गाड़ियों को आम जनता के लिए आसान, हल्का और सुविधा जनक के साथ काफ़ी सस्ता भी बना दिया था।

Henry Ford का जन्म 30 जुलाई 1863 को ग्रीनफ़ील्ड टाउनशिप, मिशिगन, अमेरिका में हुआ, Henry अपने 6 भाई-बहनों में सबसे बड़े थे, उनके पिता एक किसान थे और वो चाहते थे कि Henry भी उनके साथ खेत में उनकी मदद करे लेकिन उनको बचपन से ही मशीनों और मैकेनिकल चीज़ों से लगाव था इसी के चलते वो लोगों की घड़ियाँ भी ठीक किया करते थे। जब Henry 15 साल के थे तो उनके माता-पिता की डेथ हो गयी फिर Henry 1879 में डेट्रॉइट चले गए।

डेट्रॉइट जाने के बाद Henry ने James F. Flower & Brothers के साथ में काम किया और इसी साथ में कई वर्कशॉप में काम करके एक्सपीरिएंस लिया। वहाँ उनकी सैलरी पर्याप्त न होने की वजह से वो रात में घड़ियाँ ठीक

करने का काम करते थे, जिससे कुछ एक्स्ट्रा इनकम हो सके। 7 साल तक अलग-अलग कारखानों में काम करने के बाद Henry अपने पिता के फ़ार्म पर वापस आ गए फिर वो वेस्टिंगहाउस में स्टीम इंजन पर काम करने लग गए, जो कंपनी फार्मिंग में यूज़ किये जाने वाले स्टीम इंजन बनाती थी।

अपने फ़ार्म पर वापस आकर उन्होंने मशीन और इंजन ठीक करने का कारखाना खोला और उसी दौरान 11 अप्रैल 1988 को उन्होंने Clara Jane Bryant से शादी कर ली। शादी के बाद उनका मशीन बनाने का कारखाना यंत्रों की कमी से बंद करना पड़ा और वो फिर से डेट्रॉइट चले गए।

डेट्रॉइट वापस जाने के बाद उनके हुनर और मशीन के प्रति लगाव को देखकर उन्हें जुलाई 1891 में Edison Illuminating Company में बतौर इंजीनियर नौकरी

मिल गयी और 6 नवम्बर 1893 को Henry चिफ़ इंजीनियर के पद पर प्रमोट हो गए।

उसके बाद उनकी पैसों की समस्या थोड़ी कम हुई लेकिन उनका सपना एक अच्छी नौकरी पाना था, वो गैसोलीन से चलने वाले इंजन के प्रति ज़्यादा इंटरेस्टेड थे, उन्होंने उसको लेकर कुछ बड़ा करने की मन मे ठान ली थी और ऐसा ही हुआ साल 1893 में उन्होंने पेट्रोल से चलने वाला इंजन भी बनाया।

उसकी सक्सेस के बाद वो उसी इंजन को लेकर कार बनाने के काम पर लग गए और 1896 में पहली कार बनाई जिसका नाम उन्होंने Quadricycle रखा। उसके बाद उन्होंने खुद की ऑटोमोबाइल की कंपनी बनाने की सोची, वहीं Edison की कंपनी ने उनके सामने 1200 डॉलर्स सैलरी का प्रपोज़ल रखा और जनरल सुपरिटेंडेंट का पद देने की बात कही।

Ford वो सैलरी और पद चाहते थे क्योंकि उनके पास नई कंपनी बनाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे, लेकिन आखिर उन्होंने अपने सपनों को पूरा करने में ध्यान दिया।

अगस्त 1899 में उन्होंने Edison की कंपनी छोड़ दी और डेट्रॉइट ऑटोमोबाइल नाम की खुद की कंपनी बनाई, जिसकी फंडिंग उन्हें William H. Murphy नाम के नामी बिज़नेसमैन से मिली जो 18 महीनें बाद दिवलिया हो गयी और Ford का सपना एक बार फिर से टूट गया।

उसी दौरान Henry Ford ने कुछ रेसिंग कार्स बनाई थी जिन्होंने रेस में काफ़ी अच्छा परफॉर्म किया था जहाँ उन्होंने Alexander Winton को रेस में हरा दिया। उसके एक महीने बाद Henry ने अपनी दूसरी कंपनी बनाई जिसका नाम उन्होंने Henry Ford कंपनी रखा, जो बाद में जाकर Cadillac Motor Car Company बनी।

दो बार हार का सामना करने के बाद फ़ाइनली उन्होंने 16 जून 1903 को Henry Ford Motor Company की स्थापना की, जिसमें 12 इन्वेस्टर्स ने मिलकर 28000 डॉलर्स इन्वेस्ट किये, जिसमें Henry का शेयर 25.5% था और 15 जुलाई 1903 को Ford ने अपनी पहली कार बेची जिसका नाम Model A था और पहले साल में उन्होंने 1708 कारें बेचीं और दूसरे साल लगभग 5000 कारें बेची।

1906 में Henry, कंपनी के प्रेज़िडेंट बने और उन्होंने सभी शेयर होल्डर्स को उनके शेयर देकर खुद कंपनी के मालिक बन गए। फिर उन्होंने काम को बढ़ाने के लिए मूविंग असेंबली लाइन के तरीके को खोजा और आज बड़ी-बड़ी कंपनीज़ में जिस तरह से काम होता है उसकी खोज असल मे Henry Ford ने की थी, वो किसी भी

काम को नए तरीके से करना और क़्वालिटी को बनाये रखते हुए काम को आसान करना जानते थे।

Ford प्रेज़िडेंट बन गए लेकिन उनका असली मक़सद एक बड़ी कंपनी का मालिक बनना नहीं था बल्कि ट्रांसपोर्टेशन का ऐसा साधन बनाना था जिसको आम लोग आसानी से खरीद सके, इसी को ध्यान में रखते हुए Ford ने 1908 में Model T नाम की कार बनाई, ये कार इतनी सस्ती थी कि आम आदमी भी इस कार को खरीदने में समर्थ था, ये कार इतनी कामयाब हुई कि मेजोरिटी अमेरिकन के पास Model T कार थी और इसकी वजह से अमेरिकन हाईवे को बनाने का प्रस्ताव पास हुआ और ऑयल का यूज़ भी बढ़ा।

1924 के आते-आते Ford ने ट्रैक्टर्स और ट्रक भी बनाना शुरू कर दिया था और 1931 के आते-आते Ford Motor Company 2 करोड़ से ज़्यादा ऑटोमोबाइल्स

बना चुकी थी। 1929 में उन्होंने "The Henry Ford Museum" और "Edison Institute Of Technology" की स्थापना की।

Henry Ford एक बिज़नेसमैन होने के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी थे, उन्होंने अपने प्रोडक्ट्स को किसान और ग्रामीण लोगों के अनुसार सस्ता बनाया।

शुरुआत में मिली दो बड़ी असफ़लताओं के बाद अगर Henry ने हार मान ली होती तो वो कभी सफ़लता के इतने बड़े आयाम नहीं देख पाते और हम आज उनकी बनाई बेस्ट परफॉर्मेन्स कार को नहीं देख पाते, उनके इस पैशन की वजह से उन्हें कार्स की दुनिया का जनक कहा जाता है जो 7 अप्रैल 1947 को चल बसे और उनकी डेथ के बाद वो आज भी दुनिया पर राज करते हैं।

“If you think you can do a thing or think you can't do a thing, you're right.”

- Henry Ford

#26. Barack Obama

Barack Obama अमेरिका की हिस्ट्री में पहले प्रेज़िडेंट थे, जो अमेरिकन अफ्रीकन थे। वो अमेरिका के 44th प्रेज़िडेंट थे, जो लगातार दो बार अमेरिका के प्रेज़िडेंट पद पर रहे। उन्होंने पहला इलेक्शन 2008 में और दूसरा 2012 में जीता। Barack Obama को अमेरिका के

सबसे सफ़ल प्रेज़िडेंट में देखा जाता हैं और वो पेशे से एक वक़ील हैं। प्रेज़िडेंट होने के बाद भी वो इतने डाउन टू अर्थ इंसान थे जिसकी वजह से लोग उन्हें उतना पसंद करते हैं और उनकी जर्नी भी हमें बहुत इंस्पायर करती हैं।

Barack Obama का जन्म 4 अगस्त 1961 को Honolulu Hawaii में हुआ था, उनके पिता Barack Obama Senior बकरियाँ चराने का काम करते थे, Barack Obama के जन्म के 3 साल बाद उनके माता-पिता एक-दूसरे से अलग हो गए थे, 1965 में उनकी माँ ने दूसरी शादी कर ली।

कुछ टाइम बाद Obama को उनकी माँ ने उनके अंकल के वहाँ पढ़ाई करने भेज दिया और वहाँ उन्होंने Punahou Academy में एडमिशन लिया, जहाँ उन्हें रंगभेद की वजह से काफ़ी बुरा व्यवहार सहन करना पड़ा।

1979 में उन्होंने लॉस एंजेलिस में Occidental College में एडमिशन लिया, उसके बाद 1983 में ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी से पॉलिटिकल साइंस की डिग्री लेने के लिए वो न्यूयॉर्क चले गए, इसी बीच उनके पिता की एक एक्सीडेंट में मौत हो गयी थी।

ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने 1988 में Harvard Law School में एडमिशन लिया और अपनी Law की डिग्री कम्पलीट की, उसके अगले साल उनकी मुलाक़ात प्रोफेशर Laurence Tribe से हुई, जो Obama की बातों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने Obama को अपनी टीम में शामिल कर लिया। उसी दौरान उनकी मुलाक़ात Michelle Robinson से हुई जिनको Obama के एडवाइज़र के पद पर रखा गया था।

काम करते हुए दोनों के रिलेशन इतने अच्छे हो गए कि दोनों ने एक-दूसरे को डेट करना शुरू कर दिया और

1990 में Obama Harvard Law Review के पहले अमेरिकन अफ्रीकन एडिटर चुने गए।

उसके बाद Obama शिकागो चले गए और Miner, Barnhill Galland की फ़र्म में लॉयर के तौर पर जॉइन किया, इसी के साथ-साथ उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो लॉ स्कूल में प्रोफ़ेसर के तौर पर पढ़ाया। 1992 के इलेक्शन के दौरान वो Bill Clinton के कैंपेन में वोटर रजिस्ट्रेशन में भी शामिल थे।

अक्टूबर 1992 में उन्होंने अपनी गर्लफ्रेंड Michelle Robinson से शादी कर ली, शादी के बाद वो Kenwood शिफ़्ट हो गए और इसी बीच उन्होंने Dreams Of My Father बुक भी लिखी जो उनके प्रेज़िडेंट बनने से काफ़ी सालों पहले बहुत फ़ेमस हो चुकी हैं, जो 25 से ज़्यादा लैंग्वेज में प्रिंट हो चुकी है, जिसका 2004 में चाइल्ड वर्ज़न भी आ चुका है।

2006 में उन्होंने The Audacity Of Hope नाम की एक और बुक लिखी जो अमेरिका की बेस्ट सेलिंग बुक भी रह चुकी है।

Obama ने पॉलिटिक्स में अपनी शुरुआत 1996 में Collinson Senate इलेक्शन से की, वो 1996 का इलेक्शन जीत गए और जीतने के बाद उन्होंने ग़रीबो के लिए बहुत से काम किये तथा एजुकेशन और हैल्थ केअर को अपने मैन काम के रूप में रखा, उन्होंने जेल में सजा काट रहे कई बेगुनाह कैदियों से पूछताछ करके उन्हें जस्टिस दिलवाया और 1996 के साथ वो 1998 और 2002 का इलेक्शन भी जीते।

2004 में Obama ने USA Senate Election लड़ा और इसमे भी जीत हासिल की, Barack की पॉपुलैरिटी देखते हुए डेमोक्रेटिक पार्टी ने 2008 में प्रेज़िडेंट पद के लिए होने वाले इलेक्शन में उन्होंने Chunam और

रिपब्लिक पार्टी के उम्मीदवार John Maccain को लगभग 1 करोड़ वोट्स से हराया और अमेरिका के पहले अफ्रीकन अमेरिकन प्रेज़िडेंट बनकर हिस्ट्री बनाई।

वो अमेरिका के 44th प्रेज़िडेंट बने, प्रेज़िडेंट बनने के तुरंत बाद ही अमेरिका की हेल्थ, एजुकेशन, फ़ाइनेंस और दूसरे देशों से रिलेशन के ऊपर काम करना शुरू किया और रिज़ल्ट लोगों के सामने आते गए, 9/11 अटैक करवाने वाले Osama Bin Laaden को सजा दिलाने का पूरा अमेरिका का मक़सद को उन्होंने पूरा कर दिखाया, उनके काम को देखते हुए डेमोक्रेटिक पार्टी ने 2012 में फिर से उन्हें प्रेज़िडेंट पद का उम्मीदवार बनाया और फिर से Obama ने जीत हासिल की।

एक वकील के तौर पर अपने करियर की शुरुआत करने वाले Obama अपनी काबिलियत और अपने काम करने की क्लैरिटी से दुनिया की सबसे पावरफुल कंट्री के सबसे

पावरफुल पद पर पहुँचे, जिस टाइम वो प्रेज़िडेंट बने उस टाइम अमेरिका भारी मंदी से गुज़र रहा था और उन्होंने उस टाइम से लड़ते हुए देश की बड़ी समझदारी से लीडरशिप निभाई और दूसरे देशों के साथ बिगड़े रिलेशन्स को भी सुधारा।

उन्होंने अपनी लाइफ़ में हर मुश्किल और स्ट्रगल को झेल कर सक्सेस की दुनिया के सामने खुद को एक मिसाल के तौर पर पेश किया और हम सब को उनसे बहुत कुछ सीखना चाहिए।

"If you're walking down the right path and you're willing to keep walking, eventually you'll make progress." - Barack Obama

#27. Rowan Atkinson (Mr. Bean)

अगर हम Rowan Atkinson का नाम लेंगे तो बहुत से लोगों को पता नहीं चलेगा कि हम किसके बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन जब हम Mr. Bean का नाम लेंगे तो हम में

से सभी उन्हें पहचान लेंगे क्योंकि उनका नाम लेते ही हमारे चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कुराहट आ जाती है।

हमारे पसंदीदा टीवी शोज़ में से एक Mr. Bean Show हमारे बचपन के मूमेंट्स को काफ़ी यादगार बना देती है। आज शायद ही दुनिया में कोई ऐसा इंसान होगा को Mr. Bean के कैरेक्टर से नफ़रत करता होगा।

Mr. Bean के कैरेक्टर से मशहूर Rowan Sebastian Atkinson का जन्म 6 जनवरी 1955 को कॉन्सेट इंग्लैंड में एक मिडिल क्लास फ़ैमिली में हुआ था उनके पिता एक किसान थे और उनकी माँ एक हाउस वाइफ़ थी। उन्होंने अपनी पढ़ाई न्यूकैस्टले यूनिवर्सिटी से और अपनी इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई 1975 में क्वीन्स कॉलेज, ऑक्सफ़र्ड से की।

Rowan बचपन से इंजीनियर बनना चाहते थे, लेकिन शायद उन्हें भी नहीं पता था कि उनकी लाइफ़ उन्हें कहाँ से

कहाँ पहुँचा देगी। जब वो क्वीन्स कॉलेज में अपनी इंजीनियरिंग की डिग्री कर रहे थे तभी उन्हें वहाँ के ऑक्सफ़र्ड प्ले हाउस में हो रहे एक प्ले को लिखने को कहा, वो प्ले 5 मिनट का था और 2 दिन का समय दिया गया और वो उस प्ले को लिखने में लग गए, उसी कैरेक्टर को लिखते-लिखते एक बहुत अजीब लेकिन फ़नी कैरेक्टर का जन्म हुआ जो कुछ बोलता नहीं था।

क्वीन्स कॉलेज में ही पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाक़ात उनके फ़्यूचर स्क्रीन राइटर Richard Curtis और कम्पोज़र Howard Goodall से हुई और उन्होंने ऑक्सफ़ोर्ड प्ले हाउस और एडिनबर्ग फेस्टिवल के लिए कई प्लेज़ के स्केचेज़ बनाये और उसी के चलते Rowan फ़ेमस होने लगे।

Rowan ने अपने करियर की शुरुआत 1978 में "The Atkins People" कॉमेडी सिरीज़ से की, जो BBC

रेडियो थ्री की बनाई सिरीज़ थी। फिर 1979 में उन्होंने टीवी कॉमेडी शो "Not The 9 O'clock न्यूज़ में भी काम किया, जिसके लिए उन्हें 1981 में बेस्ट लाइट एंटरटेनिंग परफॉर्मेन्स का अवार्ड मिला। उन्हें इन सभी किये गए काम से बहुत सक्सेस मिलती जा रही थी।

1983 में उनकी Blackadder नाम की कॉमेडी सिरीज़ आई, जो इतनी चली की उसने अगले दस सालों तक दर्शकों के दिलों पर राज किया, Blackadder के बाद उन्होंने फिर से कॉमेडी सिरीज़ लिखने का काम किया।

उनके फ़िल्मी करियर की शुरुआत 1983 में आई "Never Say Never Again" से हुई जिसमें Rowan James Bond के साथ नज़र आये थे और उसी साल उन्होंने " Dead On Time" में लीड रोल के रूप में काम किया। 1988 में उन्होंने "The Appointments Of Dennis Jennings" में काम किया और 1989 में "The Tall

Guy" में काम किया, इन्ही मूवीज़ के दैरान वो अपनी राइटिंग का काम भी कर रहे थे।

इन्ही सब कामों के चलते उनकी मुलाकात BBC में मेकअप आर्टिस्ट का काम कर रही Sunetra Sasty से हुई और काफ़ी साल डेट करने का बाद दोनों में 1990 में शादी भी कर ली।

शादी होने के बाद 1990 में फ़ाइनली उनके करियर में एक बड़ा बदलाव आने वाला था, जो कैरेक्टर उन्होंने कॉलेज टाइम में बनाया था, उन्होंने उसी कैरेक्टर को लेकर एक टीवी सिरीज़ स्टार्ट की जिसका नाम उन्होंने Mr. Bean रखा।

जब उन्होंने ये शो शुरू किया था तब उन्हें बिल्कुल भी नहीं पता था कि इस शो की वजह से वो पूरी दुनिया के फ़ेमस सेलेब्रिटीज़ में से एक होने वाले हैं और उसी शो की वजह से वो ब्रिटेन के फ़ेमस एक्टर बन चुके थे। बाद में Mr. Bean

के बहुत से पार्ट्र्स बने, 1997 में उन्होंने Mr. Bean नाम की मूवी भी बनाई जो ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

2001 में Rowan में "Rate Race" में, 2002 में "Scooby Doo" और 2003 में "Johnny English" और "Love Actually" नाम की मूवीज़ में काम किया और 2004 में "Keeping Mum" में काम किया। 2007 में उन्होंने Mr. Bean को लेकर "Mr. Bean's Holiday" नाम की मूवी बनाई जो फिर से ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

वो अपने करियर की शुरुआत से ही James Bond की मूवीज़ से प्रभावित थे और उन्होंने 2003 में बनी अपनी फ़िल्म "Johnny English" का रीमेक भी बनाया, जिसे 2011 में "Johnny English Reborn" नाम से रिलीज़ किया गया, जो Rowan की Mr. Bean सिरीज़ के जितनी ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

उस मूवी का बाद उन्होंने ऑफिशियली स्टेटमेंट दिया कि वो आगे से Mr. Bean का करेक्टर नहीं निभायेंगे और Mr. Bean को लेकर अब कोई मूवी और टीवी सिरीज़ नहीं बनेगा।

रियल लाइफ़ में Rowan बोलने में थोड़ा हकलाते हैं, इसी रीज़न की वजह से वो बताते है कि स्कूल टाइम में उनका काफ़ी मज़ाक भी बना था, लेकिन शायद किसी को पता नहीं था कि हकलाने वाला इंसान, जिसने कॉलेज तो इंजीनियर बनने के लिए जॉइन किया है लेकिन वो वहाँ से एक सक्सेसफुल राइटर बनकर सामने आएगा और आगे जाकर पूरी दुनिया को एक ऐसा कैरेक्टर देगा जो आज तक लोगों के दिल मे बसा हुआ है।

2013 में Rowan को आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर से नवाज़ा गया, उन्होंने स्टार्ट क्या सोच कर किया था लेकिन

रेगुलर मिलते गए काम को करते रहने पर उनके करियर के डॉट्स अपने आप कनेक्ट होते चले गए।

आज के एंटरटेनमेंट वर्ल्ड में शायद ही कोई ऐसा इंसान होगा जो Mr. Bean को नहीं जानता होगा, जिन्होंने एक असाधारण सक्सेस को पार कर लोगों को इंस्पायर किया है।

"It's not easy to take a sit-com and turn it into a feature." - Rowan Atkinson

#28. Richard Branson

अपनी किसी बीमारी के कारण हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने वालों को Richard Branson की लाइफ़ काफ़ी इंस्पायर करेगी, न सिर्फ़ शारीरिक प्रॉब्लम बल्कि अगर वैसे भी हम देखे तो Richard ऐसे बिलेनियर हैं, जिनकी गिनती टॉप लिस्ट में तो नहीं आती लेकिन उनके अप्स एंड

डाउन्स और लाइफ़ को जीने के तरीके से अपने आपको बाकी बिलेनियर्स के जितना फ़ेमस बनाने में काफ़ी सफ़ल साबित होते हैं।

Richard Branson का जन्म 18 जुलाई 1950 को लंदन में हुआ, उनके पिता बैरिस्टर थे और उनकी माँ एयर होस्टेस थी, उन्हें डिस्लेक्सिया (पढ़ने-लिखने और नए वर्ड्स सीखने में परेशानी) नाम की बीमारी की वजह से 16 साल की उम्र में पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

उसी बीमारी के कारण स्कूल में उनकी पहचान एक मंदबुद्धि के रूप में होने लगी थी, Branson के अकोर्डिंग स्कूल छोड़ने के लास्ट डे उनके हेडमास्टर में उन्हें कहा था कि या तो वो सारी जिंदगी जेल में बितायेंगे या फिर एक मिलियनर बनेंगे लेकिन उनकी दोनों बात झूट साबित हुई क्योंकि वो एक बिलेनियर बन गए।

स्कूल छोड़ने के बाद उन्होंने क्रिसमस ट्री और बर्ड्स बेचने का काम किया लेकिन वो किसी रीज़न से फ़ैल हो गया, उसके बाद 1966 में Richard ने "Students" नाम की मैगज़ीन लॉन्च की, जिसकी पहली कॉपी 1968 में बिकी। मैगज़ीन लॉन्च करने के एक साल के अंदर Richard की नेट वर्थ 50000 पौंड हो गयी थी।

Richard उस मैगज़ीन में कई म्युज़िक रिकार्ड्स और म्युज़िक एल्बम की एडवर्टाइज़ेमेंट प्रिंट करते थे और उन्होंने इस मैगज़ीन के चलते कई सेलेब्रिटीज़ के इंटरव्यू भी लिए।

अपनी मैगज़ीन में दी जाने वाली एडवर्टाइज़ेमेंट की वजह से उन्हें खुद के रिकॉर्ड शोप खोलने का आईडिया आया, जो स्टार्टिंग में काफ़ी अच्छा चला लेकिन 1971 में परचेस टैक्स न भरने की वजह से उन्हें 70000 पौंड का फ़ाइन भरना पड़ा जिसके लिए उन्हें उनके पिता का घर गिरवी रखना पड़ा।

उसके ठीक एक साल बाद 1972 में Richard ने Nik Powell के साथ मिलकर Virgin Records नाम की कंपनी बनाई, हर बिज़नेसमैन की तरह उन्हें भी स्टार्टिंग में काफ़ी परेशानी का सामना करना पड़ा, कई परेशानियों के बाद उनकी ये कंपनी चल पड़ी, Virgin Records की सक्सेस के बाद Richard ने ट्रैवल सेक्टर में कदम रखा।

1984 में उन्होंने Virgin Atlantic Airways Limited नाम की कंपनी बनाई और 1985 में Virgin Holidays नाम की कंपनी भी बनाई, जिसमें वो लोगों को Holidays और ट्रैवल पैकेज प्रोवाइड करने की सर्विस देते हैं।

1992 में एक फ़ाइनेंसियल नुकसान के कारण उन्हें Virgin Atlantic Company को बेचना पड़ा, लेकिन उनके करियर की शुरुआत म्युज़िक रिकाड्र्स बेचकर हुई

थी, इसीलिए 1996 में उन्होंने फिर से म्युज़िक इंडस्ट्री में कदम रखा और V2 Records नाम की कंपनी बनाई।

अपने पुराने एयरलाइन्स बिज़नेस के जाने के बाद उन्होंने फिर से Euro Belgian Airlines नाम की कंपनी को एक्वायर कर लिया और उसे Virgin Express नाम दिया। 1997 में उन्होंने रेलवे के बिज़नेस में भी इन्वेस्ट किया और Virgin Rail Group नाम की कंपनी बनाई।

Richard का नाम उन बिज़नेसमैन में लिया जाता है जो फ़्यूचर को ध्यान में रखते हुए अपने समय से काफ़ी आगे का सोचते हैं, अब उन्होंने अपना ध्यान स्पेस टूरिज़्म में लगा लिया है, उसी के चलते 2004 में उन्होंने अनोउंसमेन्ट में बताया कि उन्होंने Virgin Galactic नाम की कंपनी बनाई है, जिसमें वो लोगों को फ़्यूचर में स्पेस टूरिज़्म की सर्विस प्रोवाइड करेंगे।

2008 से उन्होंने Virgin Healthcare नाम से क्लिनिक चैन भी बनानी शुरू की, जो आज सक्सेसफुल तरीके से चल रहा है, साथ ही उन्होंने लाइफ़ में कई फैलियर्स का भी सामना किया, उन्होंने Virgin Cola, Virgin Cars और Virgin Publishing नाम से बिज़नेस स्टार्ट किये लेकिन वो चल नहीं सके।

Virgin Group में आज 400 कंपनीज़ काम कर रही है, Richard 2020 के अनुसार 4 बिलियन डॉलर्स की संपत्ति के मालिक हैं, एक ऐसे इंसान जिनको अपनी बीमारी की वजह से अपनी पढ़ाई को बीच में छोड़नी पड़ी और कई असफ़लताओं के बाद भी अपने आप को एक बड़े मुक़ाम पर जमाएं रखना और ज़िन्दगी को एक अलग एडवेंचर के तरीके से देखने के नज़रिए को रखने वाले Richard से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

"Business opportunities are like buses, there's always another one coming."

- Richard Branson

#29. Pablo Picasso

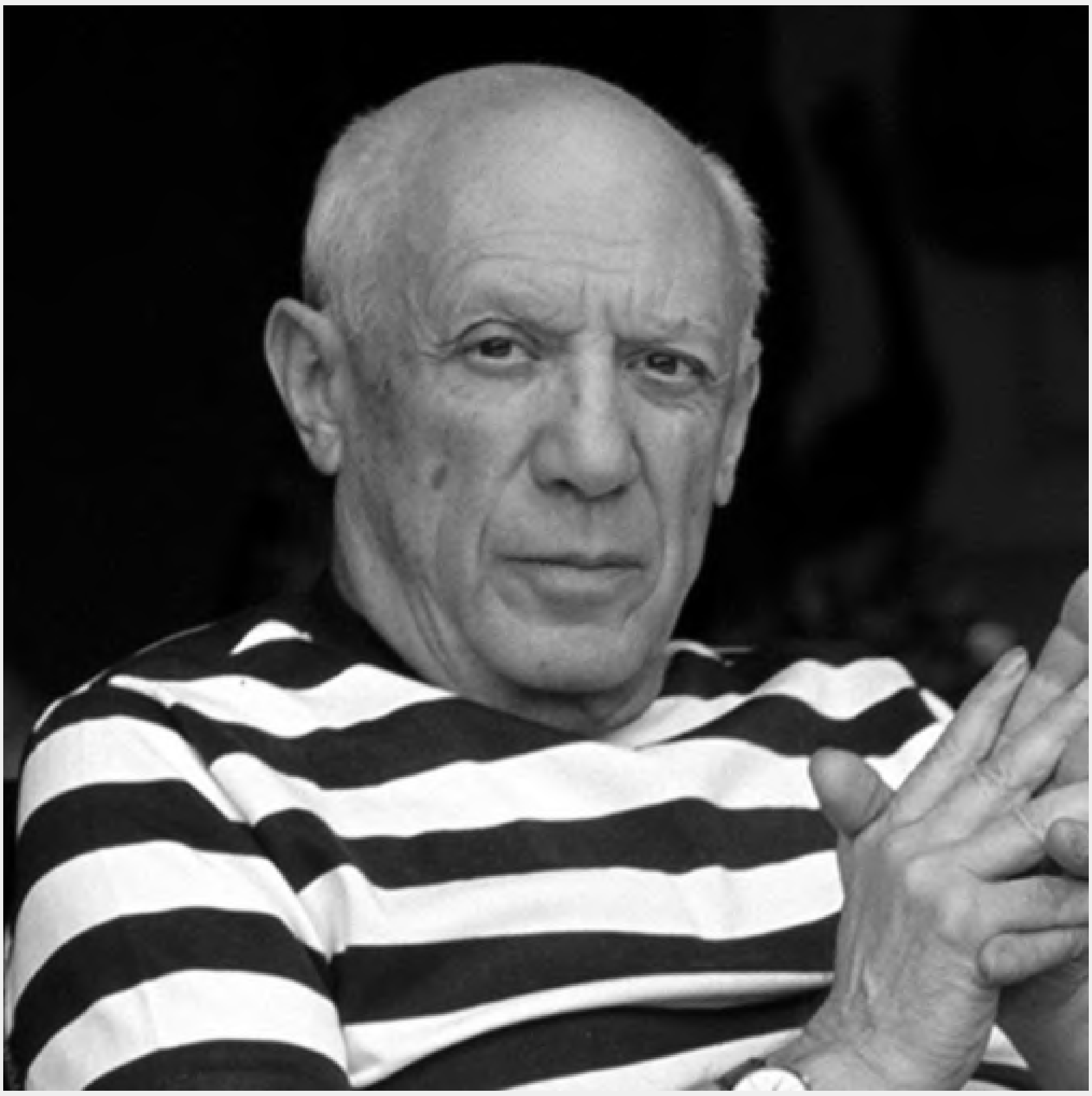

दोस्तों जब भी पेंटिंग का नाम आता है तो सबसे पहले जिस इंसान का नाम लिया जाता है वो है Picasso। वैसे तो दुनिया भर में कई पेंटर हुए लेकिन Pablo Picasso का नाम उन सब में सबसे ऊपर है, Picasso को पेंटिंग का भगवान कहा जाता है, उन्होंने अपनी पूरी लाइफ़ पेंटिंग

बनाने में देदी, उनकी पूरी लाइफ़ में उन्होंने लगभग 50 हज़ार पेंटिंग बनाई, जिनकी क़ीमत आज के समय में करोड़ो में हैं।

Pablo Picasso का जन्म 25 अक्टूबर 1881 को Malaga, Spain में हुआ था, उनके पिता एक आर्ट्स टीचर थे और उन्हें शुरुआती पेंटिंग भी उनके पिता ने ही सिखाई। उनके बचपन का एक किस्सा है जब उनकी माँ उन्हें कहती थी कि अगर तुम एक सोल्जर बनोगे तो जनरल बनोगे, अगर सेंट बनोगे तो पॉप बनोगे तब Picasso ने कहा था कि वो एक दिन Picasso बनेंगे और उनके इसी जवाब में उनका फ़्यूचर छुपा था।

Picasso पढ़ाई में इतने अच्छे नहीं थे लेकिन वो बचपन से ही पेंटिंग बनाने में काफ़ी माहिर थे, उनके बारे में रिसर्च करने वाले बताते हैं कि उन्होंने जब बोलना स्टार्ट किया था तब उनकी ज़ुबान से पहले शब्द पीज़-पीज़ निकला था जो

स्पेनिश वर्ड लेपिज़ का शॉर्ट फ़ॉर्म है जिसका मतलब पेंसिल होता है।

Picasso जब बड़े हुए तब उनका पेंटिंग की तरफ़ इंटरेस्ट देखते हुए उनके पिता ने उन्हें पेंटिंग बनाना सिखाना शुरू कर दिया और 14 साल की उम्र तक वो इतने माहिर हो गए कि अपने पिता से भी अच्छी पेंटिंग बनाने लग गए थे लेकिन वो अपनी पेंटिंग के इंटरेस्ट की वजह से अपनी पढ़ाई से दूर होते जा रहे थे।

14 साल की उम्र में Picasso को उनके पिता ने पेंटिंग सीखने के लिए मैड्रिड भेज दिया, वहाँ Picasso की पेंटिंग देखकर उन्हें एडमिशन तो मिल गया लेकिन कुछ टाइम बाद वहाँ के स्ट्रिक्ट रूल्स और रेगुलेशन की वजह से Picasso ने वो आर्ट्स स्कूल छोड़ दिया।

उसके बाद Picasso के पिता ने उन्हें पेरिस भेज दिया, पेरिस को उस समय दुनिया का सबसे बड़ा आर्ट हब माना

जाता था, वहाँ उन्हें कई अलग-अलग लोगों से मिलकर अपने आर्ट को तराशने का मौका मिला और उसके बाद अपने घर आकर उन्होंने अपना आर्टवर्क बनाना शुरू किया।

उन्होंने पेरिस से आने के बाद अपनी पेंटिंग में समय के अनुसार के अलग-अलग चीज़ों को बनाया, जैसे 1901 से 1904 के बीच मे उन्होंने ज़्यादातर पिंक और ब्लू कलर पर आधारित पेंटिंग बनाई, जो अपने से नीचा दिखाए जाने वाले लोगों पर आधारित है, फिर 1904 से 1906 के बीच उन्होंने म्यूज़िकल आर्ट्स, एक्रोबेट और क्लोवन्स कि पेंटिंग बनाई, फिर 1907 से 1909 के बीच में उन्होंने Avignon की महिलाओं पर आधारित पेंटिंग्स बनाई।

1909 से 1919 तक घनवाद (Cubism) के आधार पर पेंटिंग्स बनाई, उसी दौरान 1911 में मोनालिसा की पेंटिंग चोरी होने की वजह से Picasso को अरेस्ट भी किया गया

था। उसके बाद 1919 से 1929 तक उन्होंने Neoclassicism और Surrealism के आधार पर पेंटिंग्स बनाई।

Picasso हिंसा और लोगों पर होने वाले अत्याचारों के बहुत अगेंस्ट थे, 1937 में जब नाज़ी आर्मी ने स्पेन रिपब्लिक आर्मी पर बोम्ब गिराए तो अपना गुस्सा दिखाने के लिए उन्होंने Guenirca नाम की एक विशाल पेंटिंग बनाई और अपनी मर्ज़ी से स्पेन छोड़ दिया और कसम खायी की स्पेन में जब तक रिपब्लिक की स्थापना फिर से नहीं होगी तब तक वो स्पेन नहीं आयेंगे।

Picasso ने अपनी पेंटिंग से बहुत दौलत कमाई, वो अपने टाइम के सबसे महँगे आर्टिस्ट थे, हालांकि आज उनकी पेंटिंग्स की जो वैल्यू है वो उस ज़माने में नहीं थी लेकिन वो बाकी के आर्टिस्ट से काफ़ी महँगे थे।

उनको अपनी लाइफ़ में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़े, एक समय ऐसा था कि उन्हें लोगों के विरोध के कारण अपने देश से बाहर निकलना पड़ा और ऐसी सिचुएशन में उनके पास रहने के लिए घर नहीं था लेकिन उन्होंने अपनी पेंटिंग्स पर काम करना बंद नहीं किया, वो 20th सेंचुरी के सबसे महान आर्टिस्ट थे।

8 अप्रैल 1973 को अपने घर मे एक डिनर पार्टी के दौरान 91 की उम्र में उनकी मौत हो गयी, उनका आर्ट्स की दुनिया में जो कॉन्ट्रिब्यूशन हैं वो बहुत लोगों को इंस्पायर करता है, उन्होंने अपनी पूरी लाइफ़ में 50 हज़ार से ज़्यादा पेंटिंग बनाई, जिसमें से बहुत-सी पेंटिंग उन्होंने दान दी और अभी उनकी जो पेंटिंग्स है उनकी वैल्यू आज के हिसाब से मिलियंस में हैं।

Picasso ने अपनी पर्सनल लाइफ़ की मुश्किलों को अपने काम के दम पर लोगों की नज़रों से छुपाए रखा, जिनके

काम को आगे भी ऐसे ही मास्टरपीस के नज़रिये से देखा जायेगा।

"Everything you can imagine is real."

- Pablo Picasso

#30. Colonel Sanders

दोस्तों लगातार प्रयास करने के बाद भी सफलता हाथ न लगने और अपनी बढ़ती उम्र के कारण परेशान रहने वाले लोगों को Colonel Sanders की ये शॉर्ट बायोग्राफी बहुत इंस्पायर करेगी, जिन्हें सैकड़ों बार फैलियर का सामना करने के बाद 65 कि उम्र में सफ़लता मिली और सफ़लता भी ऐसी मिली कि अंत मे जाकर वो बिलेनियर

बने, जिनके सफ़लता का स्वाद दुनिया भर के लोग चखते ही नहीं बल्कि बड़े चाव से कहते हैं, Colonel Sanders वही इंसान हैं जिन्होंने KFC को जन्म दिया।

Colonel Harland David Sanders का जन्म 9 सितंबर 189 को Henryville Indiana में हुआ। वो एक बहुत ग़रीब फ़ैमिली से बिलोंग करते थे, उनके पिता एक कसाई थे और उनकी माँ एक हाउस वाइफ़ थी, Sanders अपने तीन भाई-बहनों में सबसे बड़े थे और जब वो 5 साल के थे तब उनके पिता की डेथ हो चुकी थी जिसके कारण उन्हें बचपन से ही मुश्किलें देखनी पड़ी। उनके पिता की डेथ के बाद उनकी माँ ने एक टोमेटो कैचअप कंपनी में नौकरी की, तब Harland की उम्र काफ़ी कम थी।

कुछ टाइम बाद उनकी माँ ने दूसरी शादी कर ली और अपने सभी बच्चों के साथ Indiana रहने चली गयी, जब उनकी

माँ काम पर जाती थी तो वो अपने छोटे भाई-बहनों का ध्यान रखते थे क्योंकि उनके भाई-बहन उस टाइम बहुत छोटे थे। जब वो 7th क्लास में थे तब पैसों की कमी के कारण उन्हें पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी और अपनी ज़िंदगी चलाने के लिए नौकरी करनी पड़ी।

जब Colonel 15 साल के थे तब उन्होंने बस में कंडक्टर की नौकरी की और 1906 में 16 साल की उम्र में आर्मी में जॉइन कर लिया और नौकरी की वजह से क्यूबा चले गए, कुछ टाइम आर्मी में नौकरी करने के बाद वो एक लोहार के यहाँ हेल्पर के तौर पर नौकरी पर लग गए, 2 महीने की नौकरी के बाद Colonel ने रेलवे के पार्ट्स को साफ़ करने की नौकरी की।

उसके बाद उन्होंने स्टीम इंजन स्टॉकर की नौकरी की, जो एक स्थायी जॉब थी और Sanders वहाँ 1910 तक रहे, उसी जॉब के दौरान उन्होंने Josephine King से शादी

कर ली और कुछ दिनों बाद Sanders का उनके कलीग के साथ झगड़ा होने की वजह से उन्हें नौकरी से निकाल दिया।

नौकरी जाने के साथ-साथ उनकी बीवी भी उन्हें छोड़कर अपने पेरेंट्स के साथ रहने चली गयी, Sanders ने अपनी रेलवे की नौकरी के दौरान Law का कोर्स भी किया था और नौकरी जाने के बाद उन्होंने लॉयर के तौर पर प्रैक्टिस करना शुरू किया, लेकिन कहीं भी उन्हें सक्सेस हाथ नहीं लगी लेकिन फिर भी वो हमेशा नए-नए काम में अपने हाथ आज़माते थे।

उसके बाद उन्होंने इंश्योरेंस बेचने का काम किया, कई दुकानों में सेल्समैन का काम किया, टायर बेचने का काम किया, Ohio River में स्टीम बोट चलाने का काम भी किया लेकिन सक्सेस दूर-दूर तक कहीं नजर नहीं आयी लेकिन फिर भी उन्होंने अपने प्रयास करने नहीं छोड़े।

40 की उम्र तक आते-आते उन्होंने सैकड़ो जगहों पर काम किया लेकिन उन्हें कहीं पर भी सफ़लता हासिल नहीं हुई और 1930 में Shell Oil Company ने उन्हें एक सर्विस स्टेशन ऑफ़र किया और Sanders ने कॉर्बिन, केंटकी में अपना सर्विस स्टेशन खोला, कुछ टाइम सर्विस स्टेशन चलाने के बाद उन्हें ये अहसास हुआ कि सर्विस स्टेशन चलाने से उन्हें कुछ खास इनकम नहीं हो रही है तो उन्होंने सर्विस स्टेशन की खाली जगह पर चिकन बनान शुरू किया और सर्विस स्टेशन के पास बने क्वार्टर में रहने वाले लोगों को डूअर टू डूअर सर्विस किया।

उसके बाद एक रेस्टोरेंट खोला जहाँ वो आने वाले ट्रक ड्राइवर्स को अपनी सीक्रेट रेसिपी से बनाये हुए फ्राइड चिकन सर्व करते थे और लोगों को उनके हाथ का बना चिकन पसंद आने लगा। 1935 में केंटकी के गवर्नर वहाँ से गुज़र रहे थे तभी उन्हें Sanders का रेस्टोरेंट दिखा और

उन्हें वहाँ का चिकन इतना पसंद आया कि उन्होंने Sanders का नाम Colonel रख दिया।

1950 में उनकी लाइफ़ में फिर से मुश्किल आयी जब उनका रेस्टोरेंट चलना बन्द हुआ, क्योंकि उनका रेस्टारेंट फ्लोरिडा हाईवे पर था और वहाँ से आने जाने वाले लोग उनके मैन कस्टमर थे लेकिन उस टाइम फ्लोरिडा जाने के लिए एक नया हाइवे बनना शुरू हुआ और उस रोड़ पर लोगों का आना-जाना कम होने लगा और Sanders के रेस्टारेंट पर पड़ने वाली भीड़ दिन-दिन कम होती गई।

लेकिन मुश्किल आने के बाद भी Sanders चुप बैठने वाले कहाँ थे, 65 साल की उम्र में होने के बावजूद उन्हें अपनी चिकन रेसिपी पर बहुत भरोसा था इसलिए उन्होंने अपनी रेसिपी का नाम Kentucky Fried Chicken (KFC) रख दिया और उसकी फ्रैंचाइज़ी लोगों को बेचना शुरू कर दिया, एक बार उन्होंने बताया था कि उनकी

रेसिपी को 1009 बार रिजेक्ट किया गया, लेकिन हार न मानने की वजह से 12 साल की मेहनत के बाद 600 फ्रैंचाइज़ी सेल कर चुके थे।

आज 145 देशों में 24000 से भी ज़्यादा आउटलेट्स हैं और तब से आज तक KFC दुनिया की सबसे सक्सेसफुल फ़ूड चैन में से एक है। 16 दिसंबर 1980 को Sanders ने 90 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया लेकिन आने वाले समय में लोगों के लिए कई सिख दे गए।

लोग कम उम्र में होने के बाद भी रिजेक्शन से हार मान लेते हैं उनके लिए Colonel Sanders एक मिसाल है, जिनकी पूरी लाइफ़ संघर्ष और चुनोतियों से भरी थी, जिन्हें बचपन में पिता के जाने के बाद रिजेक्शन का सामना करना पड़ा था और हज़ार से ज़्यादा रिजेक्शन के बाद रिटायर होने की उम्र में उन्होंने आखिरकार एक सफ़ल बिज़नेसमैन

बनकर दुनिया को दिखा दिया, आज शायद ही कोई ऐसा इंसान होगा जो KFC फ़ूड चैन के बारे में नहीं जनता होगा।

"One has to remember that every failure can be a stepping stone to something better."
- Colonel Sanders

#31. Leonardo Da Vinci

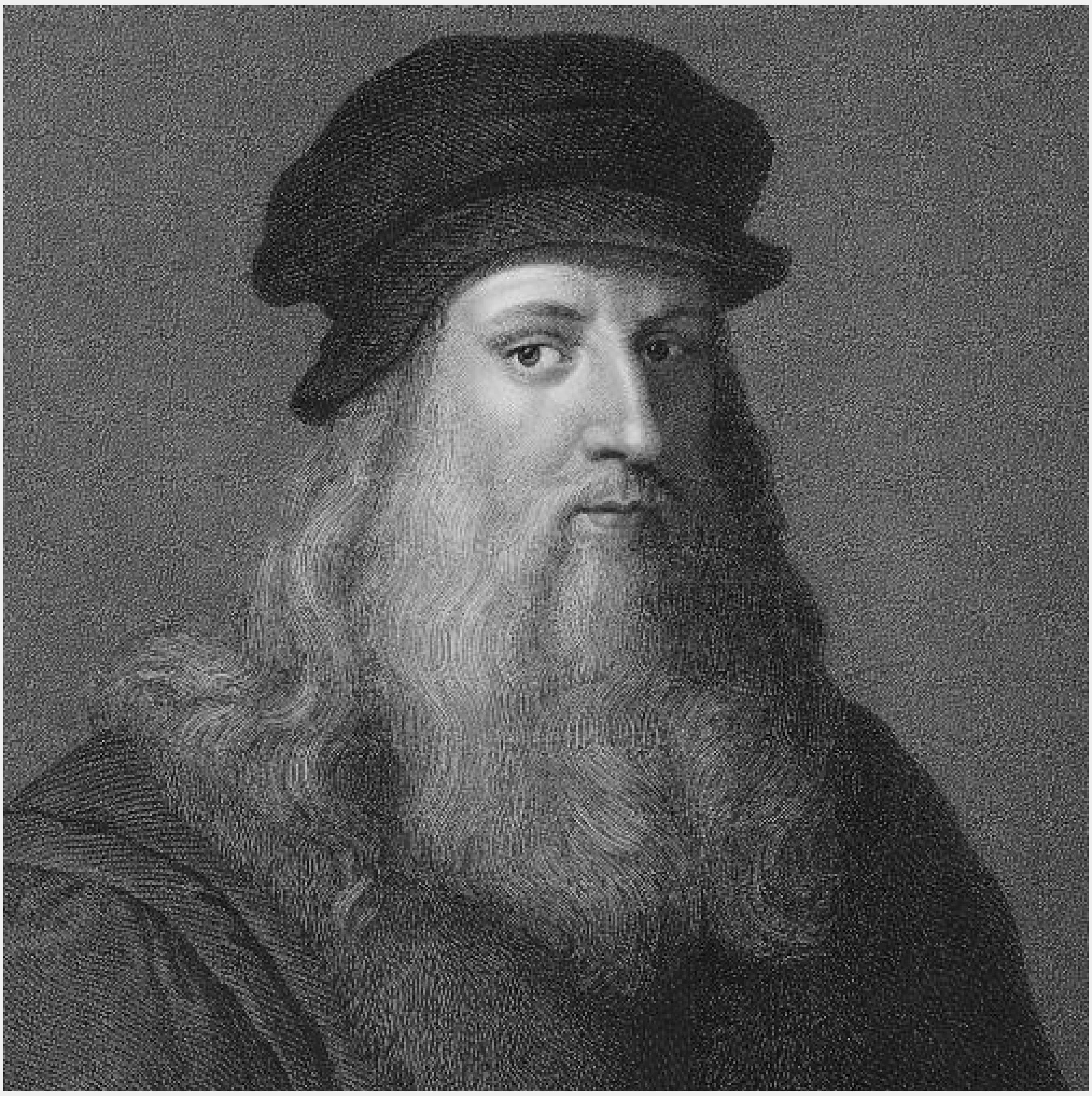

Leonardo Da Vinci को वैसे तो एक पेंटर के रूप में ज़्यादा जाना जाता है लेकिन वो एक इंटेलेक्चुअल इंसान थे और पेंटिंग के साथ-साथ और भी कई चीज़ों में एक्सपर्ट थे। आज Vinci अपनी बनाई गई पेंटिंग मोनालिसा से ज़्यादा जाने जाते हैं। उनकी लाइफ़ बहुत ही रहस्यमयी रही

है जिस पर आज भी रिसर्च जारी है और उनके द्वारा दुनिया के लिए किए गए काम 600 साल बाद आज भी लोगों के लिए एक इंस्पिरेशन है।

Leonardo Da Vinci का जन्म 15 अप्रैल 1452 को इटली के Vinci शहर में हुआ था, उनके पिता एक लॉयर थे, उनकी माँ ने Leonardo के जन्म के बाद दूसरी शादी कर ली और Leonardo के पिता ने 4 शादियाँ की थी और Leonardo उनमें से सबसे पहले बेटे थे और वो अपने पिता के साथ ही बड़े हुए।

1469 में जब Leonardo 17 साल के थे तब उनके पिता फ्लोरेंस चले गए और उनका मूर्ति बनाने में इंटरेस्ट को देखकर उनके पिता ने उन्हें Andrea Del Verrocchio नाम के एक फ़ेमस आर्टिस्ट से मिलवाया, जिनसे उन्होंने आगे मूर्ति बनाने का काम भी सीखा।

Verrocchio के साथ Leonardo ने अपने काम को इतना तराश लिया था कि वो Verrocchio के बनाये गए आर्ट को भी मात देने लग गए थे, 20 साल की उम्र तक Leonardo,Verrocchio की आर्ट स्कूल के सबसे बेस्ट आर्टिस्ट बन गए थे और फ्लोरेंस सिटी में एक अच्छी रेपुटेशन भी बना दी।

1476 में Leonardo पर एक औरत के साथ ग़लत संबंध बनाने के आरोप भी लगे, जिससे फ्लोरेंस सिटी में बनाये गए उनके नाम पर काफ़ी ग़लत प्रभाव पड़ा। वो केस कोर्ट के अनुसार झूठा साबित हुआ, उसके 2 साल बाद तक Leonardo ने क्या काम किया, उसका कोई रिकॉर्ड अभी तक किसी के पास नहीं है। 1481 में 29 साल की उम्र में उन्हें एक वॉल पेंटिंग Adoration Of The Magi का काम मिला जो आज भी वर्ल्ड फ़ेमस है।

Leonardo 30 की उम्र तक फ्लोरेंस सिटी में रहे और मूर्तिकला पर काम किया उसके बाद वो इटली के मिलान शहर के शासक Ludovico Sforza की सेना में इंजीनियर के तौर पर रहे, जहाँ उन्होंने बहुत-सी मशीनरी डेवलप की जिसमें हेलीकॉप्टर के डिज़ाइन, म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स, पैराशूट, एरोप्लेन और भी कई मशीनों के डिज़ाइन तैयार किये और साथ-साथ अपनी कला का भी प्रदर्शन किया।

"The Last Supper" नाम की फ़ेमस पेंटिंग भी उन्होंने मिलान में ही बनाई थी, Leonardo सिविल इंजीनियरिंग में भी बहुत माहिर थे, सेना में रहने के दौरान उन्होंने एक नदी के ऊपर हैंगिंग ब्रिज भी बनाया और दीवारों को अलग-अलग तरीके से डिज़ाइन किया ताकि दुश्मन सेना के अटैक से बचा जा सके।

1499 में Leonardo वेनिस आ गए और एक साल वहाँ रहने के बाद 1500 में Leonardo फिर से फ्लोरेंस आ गए और 1503 से 1506 के बीच उन्होंने अपनी सबसे फ़ेमस पेंटिंग मोनालिसा बनाई, ये पेंटिंग उन्होंने 51 साल की उम्र में बनाना शुरू किया था।

मोनालिसा फ्लोरेंस शहर के एक सिल्क मर्चेंट Francesco Del Giocondo की वाइफ़ थी, जो पेंटिंग बनाने के दौरान रोजाना Leonardo के स्टूडियो में आती थी, इस पेंटिंग की सबसे खास बात ये है कि कोई भी इस पेंटिंग को देखकर मोनालिसा के एक्सप्रेशन अच्छे से नहीं बता सकता कि एक्ज़ेटली मोनालिसा खुश है या दुखी है।

मोनालिसा की पेंटिंग का काम पूरा करने के बाद Leonardo फिर से इटली के शहर मिलान चले गए और अगले 7 सालों तक मिलान के शासक के वहाँ रहे, जहाँ वो अपने आर्ट का प्रदर्शन करते थे, Leonardo ने इस

पीरियड के दौरान ""The Virgin And The Child And St. Anne" नाम की फ़ेमस पेंटिंग बनाई।

1517 में Leonardo रोम आ गए और वहाँ के राजा Francis 1st के यहाँ गेस्ट बनकर रहने लगे, जहाँ से उनको पेंशन भी मिलती थी, Leonardo ने वहाँ 3 साल गुज़ारे और 1519 में Leonardo की डेथ हो गयी।

Leonardo की लाइफ़ मिस्ट्री से भरी हुई है क्योंकि उनकी लाइफ़ के कई साल काफ़ी गुप्त तरीके से गुज़रे हैं, आज तक किसी को नहीं पता हैं कि Leonardo उस समय में किस जगह थे और क्या कर रहे थे और किसी भी पेपर्स में उस समय का उनका कोई रिकॉर्ड भी नहीं हैं।

Leonardo Da Vinci जीवहत्या और हिंसा के बिल्कुल ख़िलाफ़ थे इसलिए वो वेजीटेरियन भी थे और हिंसा के ख़िलाफ़ होने के बावजूद भी उन्हें युद्ध के हथियार डिज़ाइन करने पड़े। हमेशा सिचुएशन ऐसी बनी रही कि

उनके आधे से ज़्यादा स्कल्पचर, पेंटिंग और मशीनरी डिज़ाइन अधूरी ही रह गयी।

उनके द्वारा बनाये गए नदी के डिज़ाइन, बाँध और वाटर कंज़रवेशन को लेकर किये गए डिज़ाइन भी पेपर में ही रह गए लेकिन Leonardo की मौत के बाद साइंटिस्ट और डिज़ाइनर ने Leonardo को अपना आइडियल माना और उनके बनाये गए डिज़ाइन पर काम करके उन्हें असली रूप दिया।

आज से 600 साल पहले उन्होंने हेलीकॉप्टर, एरोप्लेन, टैंक पंडुपी, स्पाइरल स्टैर्स और भी कई डिज़ाइन को इमेजिन किया और पेपर पर बनाया था और आज हम डिज़ाइन और इनोवेशन देख रहे हैं, उनकी डिज़ाइन और Leonardo की बनाई डिज़ाइन्स काफ़ी मिलती जुलती है।

एक तरीके से देखा जाए तो उनकी इमेजिनेशन हमें इस टाइम में देखने को मिल रही है जो उन्होंने उस टाइम में सोची थी।

Leonardo Da Vinci जैसे महान लोग दुनिया में बहुत कम हुए हैं, जिनको शायद अपने जीते-जी तो इतना फ़ेम नहीं मिल सका लेकिन उनकी असली अहमियत उनके जाने के 500 साल बाद आज भी लोगों को पता चलती है।

"Simplicity is the ultimate sophistication."
- Leonardo Da Vinci

#32. Aryabhatta

Aryabhatta प्राचीन काल के एक महान गणितज्ञ और एस्ट्रोनॉमर थे जिन्होंने मॉडर्न साइंस से लगभग 1500 साल पहले अपनी कैलकुलेशन और इंटेलिजेंस से एस्ट्रोलॉजी में महारत हासिल की और उनके द्वारा की गयी खोज मॉडर्न साइंटिस्ट के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

Aryabhatta के जन्म को लेकर कई बातें सामने आती है लेकिन किसी के पास उनके जन्म को लेकर स्ट्रोंग एविडेंस

नहीं हैं, लेकिन कई जगहों पर उनके बारे में पढ़कर ये पता चलता है कि उनका जन्म 476 में पटना (पाटलिपुत्र) के पास कुसुमपुर गाँव में हुआ था और रिसर्च के अनुसार उनकी पढ़ाई भी नालंदा यूनिवर्सिटी में हुई थी।

Aryabhatta ने कई मैथेमैटिकल और एस्ट्रोनॉमिकल ग्रंथ लिखे हैं लेकिन उनमें से जो मैन है और जिसकी वजह से लोग उन्हें जानते है, उसका नाम Aryabhatiya है, जिसमें मैथ्स और एस्ट्रोनॉमी से रिलेटेड जानकारी को कविता के रूप में लिखा गया है। उन्होंने यह ग्रंथ 23 की उम्र में लिखा था और इसी ग्रंथ की वजह से राजा Buddhagupta ने उन्हें नालंदा विश्वविद्यालय का प्रमुख बना दिया।

सबसे पहले Aryabhatta ने ही ये सिद्ध किया और बताया कि पृथ्वी गोल है और इसकी परिधि का अनुमान 24835 मील है, ये एक धुरी पर घूमती है जिसकी वजह से

दिन और रात होते हैं। इसके साथ-साथ उन्होंने सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण होने के भी कारण बताए।

Aryabhatta ने बहुत से ग्रंथ लिखे है लेकिन आज के समय में 4 ग्रंथ ही मौजूद है बाकी के ग्रंथ अस्तित्व में नहीं है, उन 4 ग्रंथों का नाम आर्यभट्ट, दशगीतिका, तंत्र और आर्यभट्ट सिद्धांत है। आर्यभट्ट उनमें से सबसे लोकप्रिय ग्रंथ है जिसमें कुल 121 श्लोक है और उन 121 को भी अलग-अलग भागों में लिखा गया है-

1. गीतिका पद- इसमें 13 श्लोक है और इसमें सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों के बारे में बताया गया है।
2. गणित पद- इसमें अंकगणित, बीजगणित और ज्यामिति के बारे में बताया गया है।
3. काल क्रिया पद- इसमें हिन्दू टाइम पीरियड और ग्रहों की दशा के बारे में बताया गया है।

4. गोल पद- इसमें स्पेस, साइंस और एस्ट्रोलॉजी के बारे में बताया है।

इसके अलावा आर्यभट्ट ने हमें कई सिद्धांतों के बारे में बताया है जिसमे शंकु यंत्र (Gnomon), छाया यंत्र (shadow instrument), बेलनाकार यस्ती यंत्र (cylindrical instrument), छात्रा यंत्र (umbrella device) और भी कई यंत्रो के बारे में उन्होंने अपने ग्रंथ में बताया है।

आर्यभट्ट ने मैथ में जो योगदान दिया है वो पीयरलेस है, उन्होंने ट्रायंगल और सर्किल के क्षेत्रफल निकालने के जो सूत्र 1500 साल पहले दिए वो सही साबित हुए। उन्होंने जो PI का मान दिया 3.14 वो भी सही साबित हुआ, उन्होंने PI का मान अपनी गणितपद में कुछ इस तरह दिया कि 100 में 4 जोड़े =104 फिर उसे 8 से गुणा करे और उसमें

62000 जोड़े और उसमें 20000 का भाग देंगे तो PI का मान आ जाता है।

[(4 + 100) * 8 + 62,000] / 20,000 = 62,832

62,832/ 20,000 = 3.1416

उन्होंने पृथ्वी की परिधि के बारे में भी अपने ग्रंथ में बताया, उन्होंने बिना किसी डिवाइस से अपनी कल्पना से पृथ्वी की परिधि को 49968.05 किलोमीटर बताया जो असल परिधि से 0.2% कम है और मॉडर्न साइंस के लिए आज भी सरप्राइज़िंग है कि उस टाइम बिना किसी GPS और इतने कम डिवाइस के साथ ये कैलकुलेशन कर पाना कैसे पॉसिबल है।

ज़ीरो की खोज भी आर्यभट्ट ने की,

एकं च दश च शतं च सहस्त्रं तु अयुतनियुते तथा प्रयुतम्.

कोट्यर्बुदं च वृन्दं स्थानात् स्थानं दशगुणं स्यात् ॥ २ ॥

इस श्लोक से मतलब निकलता है कि अगर आप 0 को किसी भी चीज़ के आगे लगाते हो तो उसका मान 10 गुना बढ़ जाता है।

आर्यभट्ट ने त्रिकोणमिति और बीजगणित के बारे में भी अपने ग्रंथ के गणित पद में लिखा है।

इसके अलावा आर्यभट्ट ने सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण के बारे में जो जानकारी दी है वो भी बिल्कुल सटीक निकली, सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण होने के रीज़न भी बताए, इसके साथ-साथ उन्होंने ये भी बता दिया था कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है और उसकी वजह से अंतरिक्ष मे तारों की पोजीशन में हमें फ़र्क नज़र आता है।

ये सब बातें आर्यभट्ट ने आज से लगभग 1500 साल पहले बता दी थी और आज के मॉडर्न ज़माने में उनकी बातों और बताई गई जानकारी पर रिसर्च की गई तो उसमें पता चला

कि उनकी सब जानकारी लगभग परफेक्ट है, उसी से उनके इस अद्भुत नॉलेज के बारे में हमें पता चलता है। उनके बारे में जितनी जानकारी मौजूद है उसके मुताबिक साल 550 में 74 की उम्र में आर्यभट्ट का निधन हो गया।

आर्यभट्ट के नाम से भारत ने अपना पहला उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ा, जिसे 19 अप्रैल 1975 को लॉन्च किया गया। उनकी पर्सनल जानकारी के कोई भी स्ट्रोंग एविडेंस आज अवेलेबल नहीं है लेकिन हम उनकी इंटेलिजेंस का अंदाज़ा लगा सकते हैं।

#33. Thomas Alva Edison

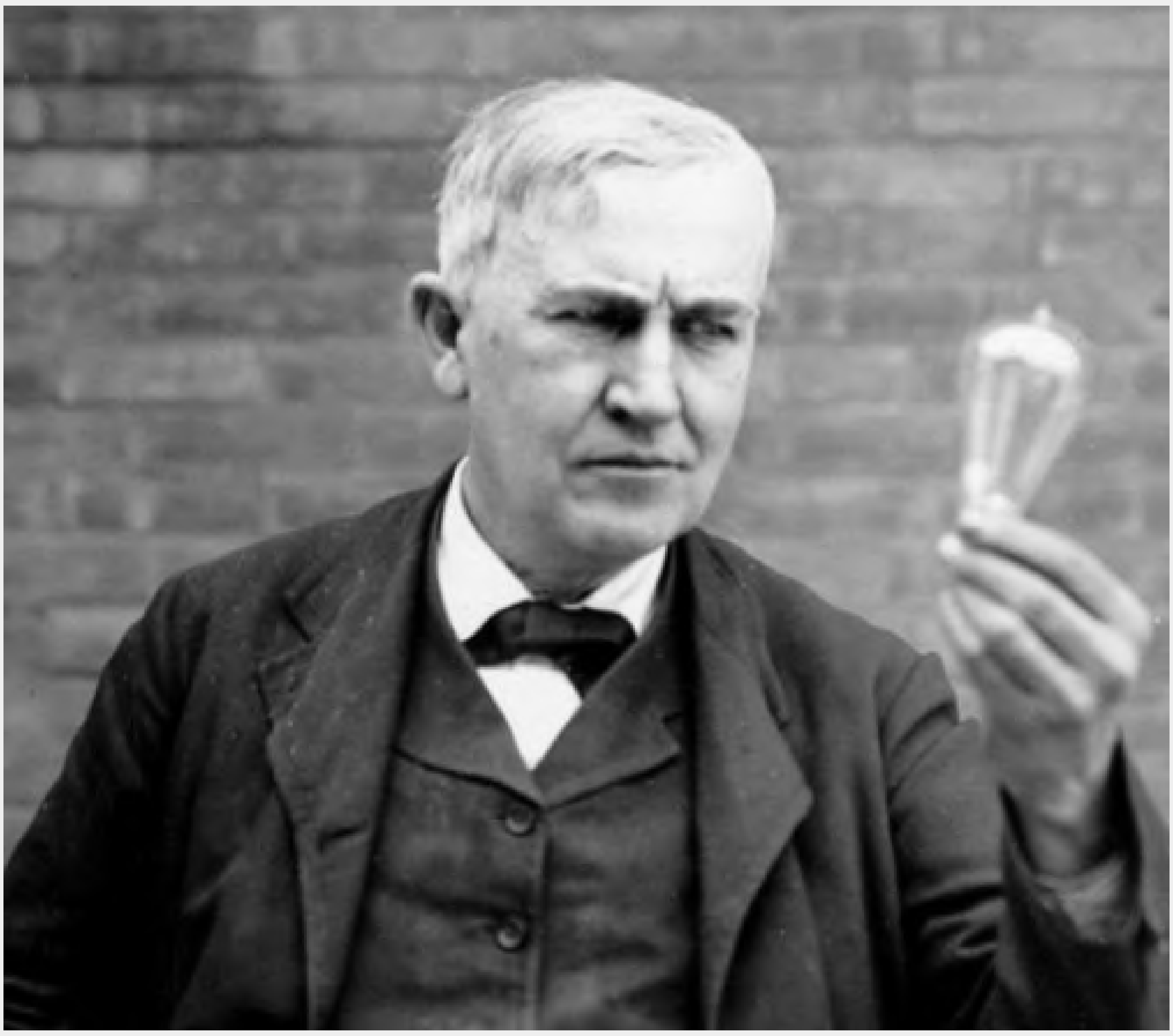

अमेरिका के फ़ेमस इन्वेंटर और बिज़नेसमैन Thomas Alva Edison को आप सभी जानते होंगे, जिनकी बदौलत आज हमारी ज़िंदगी में रोशनी आयी, जी हाँ जिन्होंने बल्ब का अविष्कार किया और साथ ही 1093 पेटेंट्स अपने नाम करवाये, अपने पेटेंट्स और इन्वेंशन की

बदौलत आज उनका नाम दुनिया के टॉप इंवेंटर्स में लिया जाता है।

Thomas Alva Edison का जन्म 11 फरवरी 1847 को Ohio स्टेट के मिलान सिटी में हुआ, वो अपने माता-पिता की सबसे छोटी संतान थे इसलिये वो अपनी माँ के बहुत करीब थे, स्कूल के शुरुआती दिनों में उन्हें स्कूल से मंदबुद्धि बताया गया और 3 महीने स्कूल में बिताने के बाद Thomas की माँ ने उन्हें घर पर ही पढ़ाना शुरू किया, उन्होंने घर रहकर सिर्फ़ 10 साल की उम्र में डिक्शनरी ऑफ साइंस की पढ़ाई कम्पलीट कर दी थी।

ऐसा कहा जाता है कि Thomas Edison को बचपन से ही Scarlet Fever नाम की बीमारी हुई थी जिससे उनको कम सुनाई देता था और बचपन में सही से इलाज न मिलने की वजह से उनकी ये बीमारी सही समय पर ठीक न हो सकी और एन्ड टाइम में वो पूरी तरह से बहरे हो चुके थे।

हालांकि उनकी मेहनत और डेडिकेशन के आगे ये बीमारी कभी नज़र नहीं आयी।

बचपन में उन्हें काफ़ी स्ट्रगल से गुज़रना पड़ा क्योंकि उनके बचपन के टाइम उनके परिवार की फाइनेंसियल कंडीशन ठीक नहीं थी, जिसकी वजह से वो अपनी फ़ैमिली की हेल्प के लिए घर-घर जाकर न्यूज़पेपर बाटते थे और नज़दीकी रेलवे स्टेशन पर चॉकलेट और कैंडी भी बेचते थे।

उसी दौरान का उनका एक किस्सा भी काफ़ी फ़ेमस है जब वो रेलवे स्टेशन पर कैंडी बेचने का काम करते थे तब उन्होंने रेल ट्रैक पर घूम रहे एक तीन साल के बच्चे की जान भी बचाई थी और उस तीन साल के बच्चे के पिता ने ही Thomas को टेलीग्राफी सिखाई थी। जब Thomas के सुनने की शक्ति कम होती गयी तो वो सीखी गयी टेलीग्राफी उनके बहुत काम आयी और उसके बाद उन्हें टेलीग्राफी में जॉब भी मिल गयी।

1866 में Thoma Louisville, केंटकी चले गए जहाँ उन्होंने प्रेस ब्यूरो में काम भी किया, Thomas वहाँ नाईट ड्यूटी करते थे ताकि दिन में उन्हें अपने एक्सपेरिमेंट्स के लिए टाइम मिल सके और उसी ऑफिस में बैटरी के साथ एक एक्सपेरिमेंट के दौरान एसिड फ्लोर पर गिर जाने की वजह से उन्हें वहाँ से नौकरी से निकाल दिया।

वहाँ से निकलकर 1968 में Thomas ने इलेक्ट्रिक वोट रिकॉर्डर बना कर अपनी इन्वेंशन की जर्नी का पहला पेटेंट अपने नाम करवा दिया, जिसे बाद में जाकर किसी ने नहीं खरीदा। लेकिन उस बात से वो निराश होने की बजाय अपने नए इन्वेंशन में लग गए, उसके बाद उन्होंने यूनिवर्सल स्टॉक प्रिंटर बनाया और उन्होंने इसे 3 हज़ार डॉलर में बेचा, इसके बाद 1870 से 1876 तक उन्होंने कई इंवेंशन्स किये।

उसी दौरान 1871 में जब Thomas 24 साल के थे तब उनकी शादी 16 की Mary Stilwell से हुई और उनसे उन्हें 3 बच्चे भी हुए लेकिन शादी के 13 साल बाद Mary की किसी बीमारी की वजह से डेथ हो गयी, उसके 2 साल बाद Thomas ने Mina Miller से 1886 में शादी की, जिनसे उन्हें 3 और बच्चे हुए।

1877 में Thomas ने फोनोग्राफ़ मशीन का इन्वेंशन किया जिसके कारण उन्हें काफ़ी फ़ेम मिला और 1878 के बाद Thomas अपने फ़ेमस इन्वेंशन बल्ब को बनाने में लग गए, Thomas ने बल्ब बनाने में 1000 से ज़्यादा एक्सपेरिमेंट्स किये लेकिन वो इन सब मे असफ़ल रहे, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और आखिरकार 21 अक्टूबर 1879 को अपनी 1 साल की मेहनत और 1000 से ज़्यादा प्रयासों के बाद Thomas बल्ब बनाने में सफ़ल

हो गए और लगातार 40 घंटे तक चलने वाला बल्ब दुनिया के सामने लाया।

आज भी मार्केट में पुराने टाइप के दिखने वाले जो बल्ब मिलते हैं, जो फिलामेंट्स और ग्लास से बने होते है उन्हें Edison बल्ब भी कहा जाता है, X-Ray रेडियोग्राफि के लिए Thomas ने Fluoroscope का अविष्कार किया और 100 साल बाद आज भी इस तकनीक का यूज़ किया जाता है।

1900 तक Thomas अपनी लाइफ़ के सभी मेजर इंवेंशन्स कर चुके थे और अब वो एक बिज़नेसमैन बन चुके थे जो अपने बनाये गए पेटेंट्स का प्रोडक्शन करते थे। Thomas Edison ने अपनी लाइफ़ के लगभग 50 साल अपने ऑरेंज कारखाने में दे दिए और अपने नाम 1093 पेटेंट्स किये, 18 अक्टूबर 1931 को वर्ल्ड के इस महान

साइंटिस्ट ने आखिरी साँस ली, जिनके किये गए इन्वेंशन की आज भी तारीफ की जाती हैं।

Thomas Alva Edison की कुछ नया करने की चाह को फाइनेंसियल कंडीशन नहीं रोक सकी, उन्होंने सब्जी और न्यूज़पेपर बेच कर उन पैसों को अपने इंवेंशन्स में इन्वेस्ट किया, आज बहुत से लोगों को नहीं पता कि उन्हें कम सुनाई देता था लेकिन उनकी ये तक़लीफ़ उनके किये गए कामों के सामने फीकी लगती है, इसी कारण उनकी ये कमी कभी सामने नहीं आयी, बचपन में मंदबुद्धि बताकर स्कूल से निकाले गए वही Edison एक दिन दुनिया के एक महान साइंटिस्ट बनकर सामने आए।

"I have not failed. I've just found 10,000 ways that won't work."

- Thomas Alva Edison

#34. Nelson Mandela

अफ्रीका के महात्मा गाँधी कहे जाने वाले Nelson Mandela को Peacemaker के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने रंगभेद के खिलाफ लड़ने में अपनी पूरी लाइफ़ देदी, जिनका काम इतना प्रभावशाली था कि उनके जन्मदिन 18 जुलाई को मंडेला दिवस के रूप में जाना जाने लगा।

Nelson Mandela का जन्म 18 जुलाई 1918 को Mwezo, साउथ अफ्रीका में हुआ। उनके पिता का नाम Henry Mphakanyiswa था जो Mwezo टाउन के लोकल चीफ़ और काउंसिलर थे। Mandela उनके पिता के 13 बच्चों में से तीसरे नंबर पर थे, उनके नाम के आगे Mandela उनके दादाजी के नाम से आया। Mandela ने अपनी स्टार्टिंग की पढ़ाई वहाँ के स्थानीय मिशनरी स्कूल से कम्पलीट की और जब Mandela 12 साल के थे तो उनके पिता की डेथ हो गयी।

Mandela ने तीन शादियाँ की जिससे उन्हें कुल 6 बच्चे हुए, अक्टूबर 1944 को उन्होंने उनके फ्रेंड और एक्टिविस्ट Walter Sisulu की बहन Evelyn Mese से शादी कर ली। 1958 में Mandela ने अपनी दूसरी शादी Winnie Madikizela से की और तीसरी शादी Graca Machel से 80 साल की उम्र में कई।

1943 में अपनी BA की डिग्री पूरी करने के बाद Mandela अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस में कार्यकर्ता के रूप में काम करने लग गए और 1944 में ANC यूथ लीग के को-फाउंडर बने, उसके बाद Mandela अपने दोस्त Oliver Tambo के साथ जोहानिसबर्ग अपनी लॉ की पढ़ाई करने चले गए और वहाँ जाकर रंगभेद के खिलाफ आवाज़ भी उठाई और इसी क्रम से 1956 में Mandela और उनके साथ 155 कार्यकर्ताओं के खिलाफ मुकदमा भी चलाया गया, जो चार सालों बाद क्लोज़ किया गया।

1960 में उनकी पार्टी ANC पर प्रतिबंध लग गया, लेकिन वो अकेले ही अपने काम में लगे रहे और वित्तीय संकट को लेकर अभियान चलाया और 5 अगस्त 1962 को वहाँ के स्थानीय मजदूरों को स्ट्राइक के लिए उकसाने के लिए उन्हें अरेस्ट कर लिया गया।

Mandela पर उस केस पर आखिरी सुनवाई 1964 में हुई जिसमें उन्हें मौत की सज़ा सुनाई गई और बाद में अपना डिसीज़न बदलकर उम्र क़ैद की सज़ा सुनाई गयी और इसी के चलते उन्हें अपने देश मे रंगभेद के खिलाफ लड़ते हुए अपनी लाइफ़ के 27 साल जेल में बिताने पड़े।

उनको 1990 तक जेल में रहना पड़ा और जेल में बाकी कैदियों की तरह उन्हें मज़दूरी का काम करना पड़ा, उस वक़्त वो अपने जीवन पर एक बुक भी लिख रहे थे और वो बुक Mandela के जेल से बाहर आने के चार साल बाद 1994 में पब्लिश हुई जिसका नाम "Long Walk To Freedom" है।

27 साल जेल में रहने के बाद भी उनके इरादे नहीं बदले थे, उनके दिमाग़ में सिर्फ़ देश मे रंगभेद के खिलाफ अहिंसा के साथ लड़ना था। जेल से आने के बाद Mandela ने अफ्रीका के कई देशों की यात्रा की और गोरों की सरकार से

समझौता करके डेमोक्रेटिक अफ्रीका की नींव रखी, अंत में 10 मई 1994 को Mandela अपने देश के पहले प्रेज़िडेंट बने।

महात्मा गाँधी की अहिंसा की विचारधारा ने Mandela पर काफ़ी असर डाला था और वो अपने जीवन मे गाँधी के प्रभावक विचारों की बात किया करते थे। 2007 में नई दिल्ली में हुए सम्मेलन में उन्होंने बताया कि अफ्रीका को अश्वेत लोगों से आज़ाद और रंगभेद खत्म करने में गाँधीजी की विचारधारा का अहम रोल है और उनकी वजह से ही इन समस्या का सॉल्यूशन हो सका है, शायद इसीलिए उन्हें दुनिया के दूसरे गाँधी के रूप में जाना जाता है।

5 दिसंबर 2013 को 95 साल की उम्र में लंग्स में इम्फेक्शन के कारण उनके रेज़ीडेंस जोहानिसबर्ग में उनकी डेथ हो गयी।

Mandela ने अफ़्रीका के लोगों के लिए अपनी ज़िंदगी के 67 साल दे दिए और उनमें से 27 साल जेल में बिताए, उसके बाद भी अपने विचारों को इतना तीव्र और हिंसा का सहारा न लेकर उन्होंने वहाँ की पब्लिक के लिए वो कर दिखाया जो आज़ादी के बाद किसी ने नहीं किया, उनके इस काम के लिए उन्हें 1993 में नोबेल पीस प्राइज़ से सम्मानित किया गया जो दुनिया का सर्वोच्च पुरुष्कार है।

उन्हें अमेरिका में प्रेज़िडेंशियल मेडल ऑफ फ़्रीडम से भी नवाज़ा गया और 1990 में उन्हें भारत रत्न दिया गया, Mandela दूसरे नॉन इंडियन है और पहले अफ़्रीकन है जिन्हें भारत रत्न से नवाज़ा गया, जो भारत का सबसे बड़ा पुरुष्कार है।

"It always seems impossible until it's done."
- Nelson Mandela

#35. Arnold Schwarzenegger

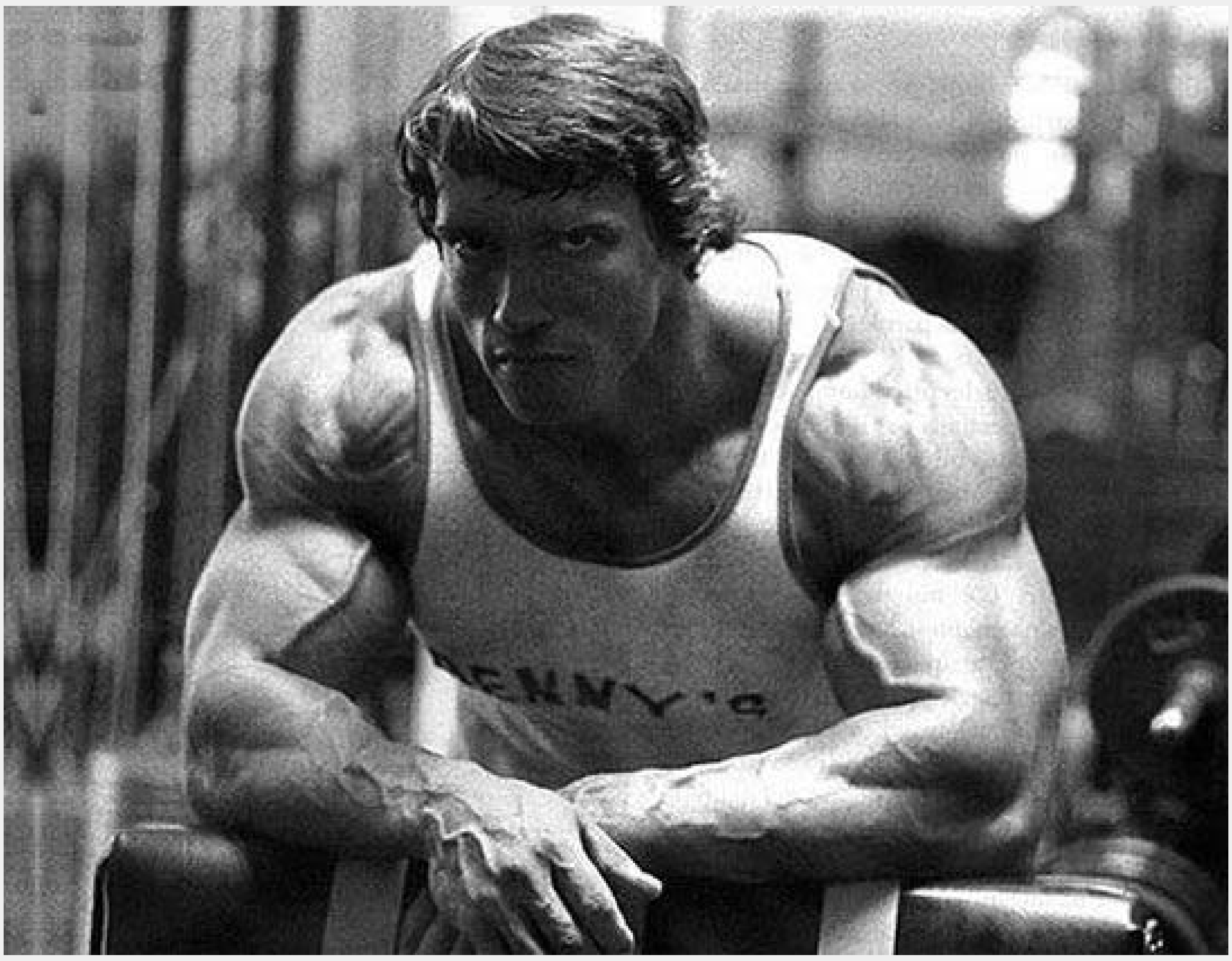

एक इंसान अपनी ज़िन्दगी में कितना कुछ हासिल कर सकता है इसका जीता-जागता एक्ज़ाम्पल Arnold Schwarzenegger है। एक छोटे से देश Austria जिसमें Arnold ने बॉडीबिल्डिंग, एक्टिंग और पॉलिटिक्स

तीनों में बड़ी सफ़लता हासिल की है, जितना बड़ा उनका करियर रहा है उनकी जर्नी भी उतनी ही इंटरेस्टिंग रही है।

Arnold (बॉडी बिल्डर, एक्टर, पॉलिटिशियन, फिलॉन्ट्रोपिस्ट, एक्टिविस्ट, इन्वेस्टर, ऑथर) का जन्म 30 जुलाई 1947 को Thal, Austria में हुआ था। Arnold के पिता का नाम Gustav था जो पुलिस में थे, उनके पिता काफ़ी स्ट्रिक्ट थे, जिनको Arnold का बॉडीबिल्डिंग करना पसंद नहीं था क्योंकि वो Arnold को आर्मी जॉइन करवाना चाहते थे। लेकिन Arnold ने अपनी बॉडीबिल्डिंग का पैशन नहीं छोड़ा और अपने पेरेंट्स से छुप-छुपकर बॉडीबिल्डिंग किया करते थे।

2004 को फार्च्यून मैगज़ीन के इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि उनके पिता ने उनके साथ ऐसा बर्ताव किया जिसे आज के टाइम में बाल शोषण (Child Abuse) कहते हैं।

Arnold ने 15 साल की उम्र से अपनी बॉडी पर काम करना शुरू कर दिया था और 1965 में 18 साल की उम्र में उन्होंने ऑस्ट्रियन आर्मी एक साल के लिए जॉइन की क्योंकि उस टाइम में आदमियों को आर्मी जॉइन करना ज़रूरी होता था।

आर्मी जॉइन के दौरान उन्होंने Mr. Europe जूनियर का ख़िताब जीता जिसके लिए उन्होंने आर्मी की सर्विस बीच में छोड़ दी जिसकी वजह से उन्हें 7 दिन तक आर्मी जेल में रहना पड़ा। उसके बाद 1967 में 20 साल की उम्र में Mr. Universe का खिताब अपने नाम किया।

1968 में Arnold अमेरिका चले गए तब उन्हें इंग्लिश बोलना बहुत कम आता था जिसके चलते स्टार्टिंग में उन्हें कम्युनिकेशन में काफ़ी तक़लीफ़ आई लेकिन उन्होंने अपना फ़ोकस बॉडीबिल्डिंग पर बनाये रखा, 1969 में

न्यूयॉर्क में हो रहे Mr. Olympia कंपटीशन में हिस्सा लिया और सेकंड नंबर पर आए।

उनके दिमाग़ में सिर्फ़ एक ही सपना था दुनिया का सबसे बेस्ट बॉडीबिल्डर बनना, मतलब उन्हें Mr. Olympia बनना था, 1970 में वो फिर से पूरे जोश के साथ आये और Mr. Olympia का खिताब जीता, उस टाइम उनकी उम्र 23 साल थी, जिससे उन्होंने सबसे कम उम्र के Mr. Olympia के रिकॉर्ड अपने नाम किया, जो आज तक कायम है, उसके नाद उन्होंने रेगुलर 6 Mr. Olympia के खिताब अपने नाम किये।

बॉडीबिल्डिंग के बाद Arnold एक्टिंग को अपना करियर बनाना चाहते थे, 1970 में Mr. Olympia जीतने के बाद Hercules In New York नाम की मूवी में उन्हें काम मिल गया, बॉडी ज़्यादा होने की वजह से उनकी आवाज़

सही से नहीं आ पा रही थी तो उस मूवी में उनकी वौइस् डबिंग किसी ओर ने की थी।

उसके बाद 1973 में उन्होंने The Long Goodboy और 1976 में Stay Hungry में काम किया जिसके लिए उन्हें गोल्डन ग्लोब अवार्ड भी मिला। Arnold को हॉलीवुड में अच्छे मुक़ाम पर 1977 में आई उनकी फ़िल्म Pumping Iron ने पहुँचाया और उसके बाद हॉलीवुड में एक एस्टाब्लिश एक्टर के रूप में उनका करियर चल पड़ा।

1983 में उन्हें अमेरिका की सिटीज़नशिप मिली और अप्रैल 1986 को Arnold टेलीविज़न रिपोर्टर Maria Shiver से मिले जिनसे बाद में उन्होंने शादी कर ली, जिनसे उन्हें चार बच्चे हुए, 2011 को उनका किसी कारण डिवोर्स हो गया।

Arnold अपनी स्टार्टिंग की फ़िल्म्स में काम करके एक्टर तो बन गए लेकिन उन्हें स्टार उनकी फ़िल्म Canon The

Barbarian ने बनाया जो 1982 में रिलीज़ हुई थी और ब्लॉकबस्टर साबित हुई। जिसके बाद में Sequel बना और उसमे भी उन्होंने काम किया। 1984 में आई फ़िल्म The Terminator में उनके रोल को पूरी दुनिया ने पहचान लिया और उसके बाद Arnold ने हॉलीवुड में पीछे मुड़कर नहीं देखा।

इसके बाद उन्होंने Cammando 1985, Raw Deal 1986, The Running Man 1987, Predator 1987 और Red Heat 1988 जैसी सुपर हिट फ़िल्म्स में अपनी एक्टिंग का जादू दिखाया और अपने आप को हॉलीवुड का बड़ा सुपरस्टार बनाया। 1990 में उन्हें Total Recall मूवी के लिए 10 मिलियन डॉलर मिले और फ़िल्म की पूरी कमाई में से 15% भी मिला।

Terminator 2- Judgement Day 1991 और Terminator 3- Rise Of The Machines,

Arnold के करियर की सबसे सफल फ़िल्म साबित हुई है, Terminator 3 ने 433 मिलियन का बिज़नेस किया था, 2005 में उन्होंने Liberty Kids नाम की सिरीज़ में अपनी आवाज़ (Dubbing Artist) भी दी।

पहले बॉडीबिल्डिंग फिर हॉलीवुड करियर में अपना नाम कमाने के बाद Arnold अब राजनीति में अपना हाथ जमाने वाले थे, पॉलिटिक्स में आने के टाइम उन्हें काफ़ी लोगों ने सक्सेस न होने की बात कही लेकिन एक बार फिर से उन्होंने उन लोगों को ग़लत साबित किया।

Arnold 2003 से 2011 तक कैलिफ़ोर्निया के गवर्नर पद पर रहे, पॉलिटिक्स में आने के बाद उनकी पॉपुलैरिटी और भी बढ़ गयी, उनके रिज़ाइन देने के बाद वो अभी-भी हॉलीवुड फ़िल्म में आते रहते हैं और आज हर कोई उन्हें अपना आइडियल मानता है।

1977 में Arnold की बायोग्राफी Arnold-The Education Of Bodybuilder पब्लिश हुई जिसे बहुत सफ़लता मिली, एक बच्चा जिसके पिता ने उसके साथ बचपन में शोषण किया, बिना सपोर्ट के अपने सपने को छुप-छुपकर पूरा किया, अपने सपनों के खातिर आर्मी जेल में रहे, इंग्लिश अच्छी तरह न आने के बाद भी अमेरिका गए, जैसे-तैसे करके लोगों से कम्युनिकेशन किया और वहाँ अपार सफ़लता हासिल की।

Arnold का जीवन काफ़ी परेशानियों से भरा होने के बाद भी अपने आप को 7 बार Mr. Olympia बनाया और एक सफ़ल पॉलिटिशियन भी जिनके पास 400 मिलियन डॉलर की संपत्ति है और सैकड़ो अवाड्र्स भी है। आज हर बॉडी बिल्डर के लिए Arnold उनके आइडियल पर्सन है और एक लिविंग लीजेंड भी है।

“Strength does not come from winning.
Your struggles develop your strengths.
When you go through hardships and decide not to surrender, that is strength.”
- Arnold Schwarzenegger

#36. Nikola Tesla

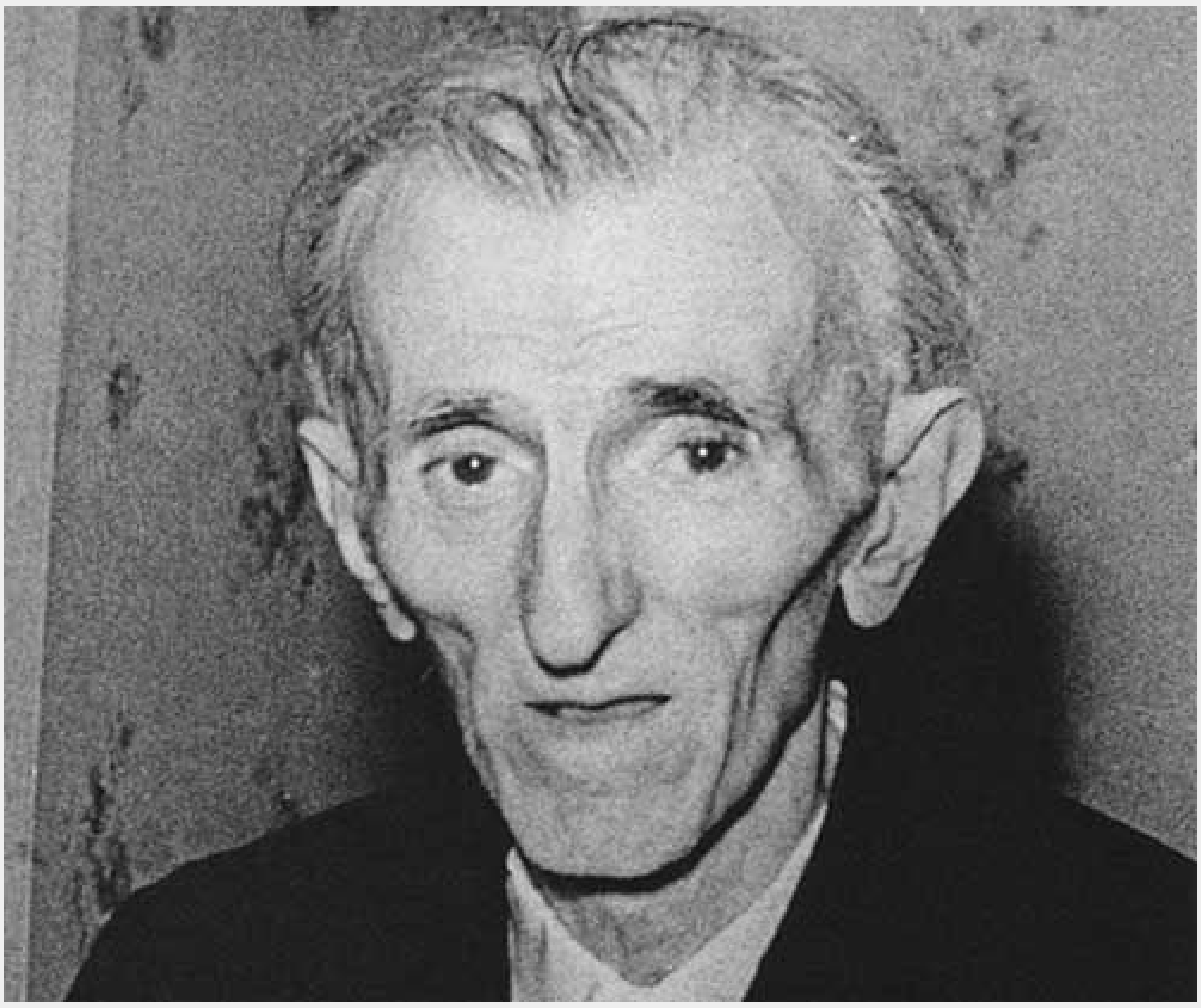

Nikola Tesla एक ऐसे साइंटिस्ट थे जिन्होंने अल्टरनेटिंग करंट का आविष्कार किया और साथ में कई अविष्कार किये, आज हम हमारे घर में जिस लाइट का यूज़ कर रहे है वो भी Nikola Tesla की ही देन है, एक ऐसे वैज्ञानिक जिन्होंने अपनी लाइफ़ में कभी फ़ेम नहीं देखा और हमेशा क्रिटिसाइज़ हुए लेकिन उनके इन्वेंशन ने आज

21वी सदी में उतना ही फ़ेम दिया जो उन्हें उस वक़्त मिलना चाहिए था।

Nikola Tesla का जन्म 10 जुलाई 1856 को Croatia में हुआ था, उनके पिता का नाम Milutin Tesla और माँ का नाम Duk Mandic था, उनके पिता एक चर्च में प्रीस्ट थे। Tesla पाँच भाई-बहनों में से चौथे नंबर पर थे और जब वो पाँच साल के थे तब उनके भाई की डेथ हो गयी थी।

Tesla ने हमेशा अपने बुद्धिमान होने का श्रेय अपनी माँ को दिया, उनके पिता चाहते थे कि वो भी उनकी तरह ही चर्च में प्रीस्ट का काम करे लेकिन उनका जीवन तो साइंस के लिए बना था।

Tesla पढ़ाई में इतने इंटेलिजेंट थे कि उनके टीचर के द्वारा दी गयी इकुएशन को अपने माइंड में ही सॉल्व करके उसके जवाब टीचर्स को देते थे, जिस पर यकीन कर पाना टीचर्स के लिए मुश्किल होता था। उन्होंने अपनी इंटेलीजेंस से

अपनी चार साल की ग्रेजुएशन तीन साल में ही कम्पलीट कर ली थी। वो सर्बियन और इंग्लिश के साथ-साथ जर्मन और फ्रेंच जैसी कुल आठ लैंग्वेज को बोलना और लिखना जानते थे।

1873 में जब Tesla 17 साल के थे तब वो हैजा की बीमारी से पीड़ित हो गए थे, वो इतने ज़्यादा बीमार हुए की उनकी मौत होने वाली थी लेकिन 9 महीने तक बीमारी से लड़ने के बाद वो फिर से स्वस्थ हो गए। बीमारी के टाइम उनके पिता ने उन्हें खुश करने के लिए कहा कि अगर वो ठीक हो गए तो उनका एडमिशन किसी बड़े इंजीनियरिंग कॉलेज में करवा देंगे।

1875 में Tesla ने ऑस्ट्रिया के Graz में एक पॉलिटेक्निक कॉलेज में एडमिशन लिया। 1878 में Tesla कॉलेज पूरा होने के बाद Maribor गए और वहाँ ड्राफ्ट्समैन की जॉब पर लग गए और एक साल बाद उनके

पिता की डेथ के बाद वो फिर से Gospic आ गए और वहाँ अपने पुराने स्कूल में टीचर की नौकरी करने लग गए।

1881 में Tesla बुडापेस्ट, हंगरी में Tivadar Puskas (इन्वेंटर ऑफ टेलीफोन एक्सचेंज) के अंडर में टेलीग्राफ़ कंपनी में काम करने लग गए, लेकिन उन्हें वो कंपनी ठीक न लगने की वजह से वो बुडापेस्ट में फिर से ड्राफ्ट्समैन की नौकरी करने लग गए।

एक साल बाद 1882 में Tivadar Puskas ने उन्हें पेरिस में कॉन्टिनेंटल एडिसन कंपनी में नौकरी दिलवा दी, जहाँ Tesla ने इलेक्ट्रिक पॉवर से रिलेटेड काफ़ी नॉलेज लिया और जब मैनेजमेंट को Tesla के पोटेंशियल का पता चला तो वो Tesla को फ्रांस और जर्मन में प्रोब्लेम्स को ट्रबलशूट करने भेजते थे।

1884 में Tesla Edison के मैनेजर के साथ एडिसन मशीन वर्क्स न्यूयॉर्क में गए, जहाँ उनकी मुलाकात

इन्वेंटर/बिज़नेसमैन Thomas Alva Edison से हुई, कुछ टाइम बाद Edison को ये बात पता चल गयी थी कि Tesla के साथ काम करने से उन्हें कितना फ़ायदा हो सकता है, Edison Tesla को जाने नहीं देना चाहते थे लेकिन Tesla को उनके AC करंट के आईडिया पर काम करना था इसलिए उन्होंने एडिसन मशीन वर्क्स से रिज़ाइन कर दिया।

एडिसन मशीन वर्क्स के बाद Tesla अपने AC करंट के आईडिया को इम्प्लीमेंट करने लग गए और Robert Lane और Benjamin Vali नाम के इन्वेस्टर्स ने Tesla के इस आइडिया पर इन्वेस्ट किया और Tesla ने अपनी खुद की कंपनी Tesla Electric Light And Manufacturing बना दी। उसके बाद Tesla ने AC इंडक्शन मोटर और टेस्ला कॉइल पर भी काम किया।

Tesla में अपने इन्वेंशन और रिसर्च के बेस पर कई प्रेडिक्शन की, जो आज सच साबित हो रही है, उन्होंने कहा था कि एक दिन हम सिर्फ़ सिग्नल की मदद से मैसेज और बात कर सकेंगे और इस डिवाइस के उन्होंने पॉकेट टेक्नोलॉजी का नाम दिया। सेंचुरी के अंत में Tesla ने उनके इन्वेंशन टेस्ला कॉइल का पेटेंट करवाया, जो वायरलेस टेक्नोलॉजी पर आधारित था और आज बहुत-सी एडवांस टेक्नोलॉजी इस पर आधारित है। इन्ही सब इन्वेंशन के दौरान 1891 में Tesla को अमेरिका की सिटीज़नशीप मिल गयी थी।

Tesla और Edison के किस्से आज पूरी दुनिया में फ़ेमस है, Tesla को Edison के मुकाबले इतना नाम नहीं मिला और उनकी मौत भी गुमनामी और ग़रीबी के बीच हुई थी। Tesla चुप-चाप रहने वाले साइंटिस्ट थे, अपनी अकेले

रहने की इस आदत से शायद वो एक बिज़नेसमैन नहीं बन सके और उन्हें ग़रीबी में जीवन जीना पड़ा।

Edison ने Tesla को 50 हज़ार डॉलर ऑफर किये थे ताकि वो उनकी DC मोटर को और भी ज़्यादा बेहतर बना सके, Tesla ने उनकी मोटर को और भी बेहतर तरीके से डिज़ाइन किया लेकिन बाद में Edison अपने 50 हज़ार डॉलर के वादे से मुकर गए और उसे अमेरिकन ह्यूमर नाम के मज़ाक का नाम दे दिया।

Tesla के आख़िरी साल बहुत अकेले और ग़रीबी में गुज़रे थे, वो अपने अंतिम दिनों में अपने कमरे में अकेले अपने कबूतरों के साथ रहते थे, 7 जनवरी 1943 को उनकी मौत भी एक होटल में हुई जहाँ वो बिल्कुल अकेले रहते थे।

उन्होंने अपनी लाइफ़ साइंस के नाम कर दी और अपनी इंटेलिजेंस का राज़ अपना ब्रह्मचारी होना बताया था शायद यही वजह थी कि उन्होंने कभी शादी नहीं की, उनके

अंतिम समय में लोग उनका बिहेवियर देखकर उन्हें पागल भी बताते थे।

Tesla ने अपने जीते जी कभी फ़ेम नहीं देखा और उनके जाने के लगभग 60 साल बाद अब उनकी की गई प्रिडिक्शन सच साबित होने लगी तब जाकर उनके काम काफ़ी आगे आने लगे हैं, उनके किये गए इन्वेंशन आज भी न्यू टेक्नोलॉजी का आधार है।

उनके टाइम में उनके इन्वेंशन इतने ज़्यादा एडवांस थे कि उन्हें कोई समझ नहीं सका, लेकिन अब जाकर ये समझ आ रहा है कि वो असल में पागल नहीं बल्कि एक बुद्धिजीवी थे, जिनको समझ पाना नॉर्मल इंसान के बस की बात नहीं थी, शायद यही वजह है लोगों के द्वारा उनको पागल ठहराये जाने की।

“The present is theirs; the future, for which I really worked, is mine.”

- Nikola Tesla

#37. Isaac Newton

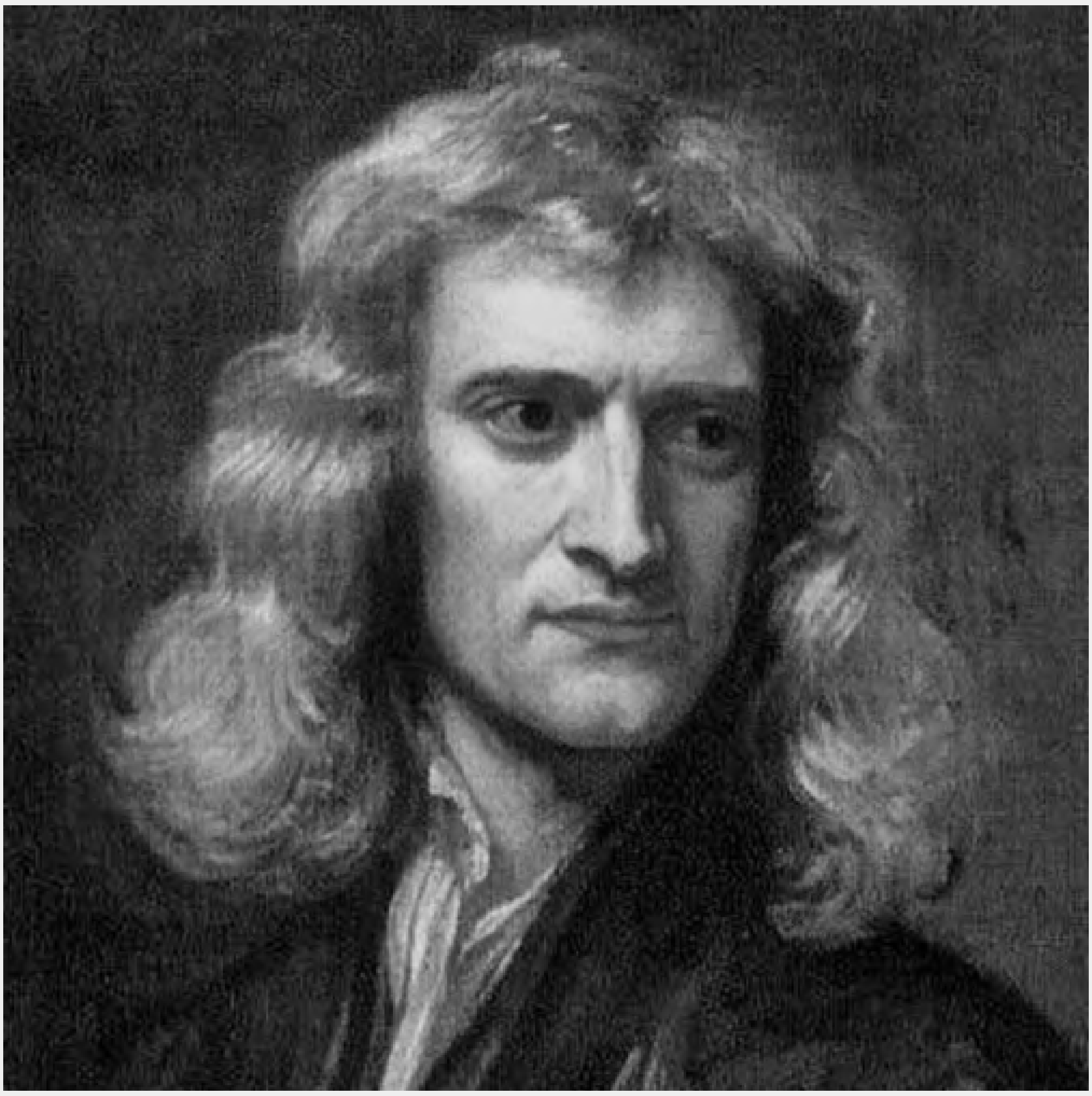

Isaac Newton एक महान फिज़िसिस्ट, मैथेमेटिशियन, एस्ट्रोनॉमर और ऑथर थे, जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण की थ्योरी को दुनिया के सामने लाया। उन्हें इतिहास के सबसे प्रभावशाली साइंटिस्ट में से एक माना जाता है। 1685 में

लिखी प्रिंसिपल मैथेमेटिशियन से उन्होंने साइंस में जो योगदान दिया है वो उन्हें सबसे महान बनाता है।

सर Isaac Newton का जन्म 4 जनवरी 1643 को Lincolnshire, इंग्लैंड में हुआ, कई लोगों का मानना है कि उनका जन्म क्रिसमस के दिन 25 दिसंबर 1642 को हुआ था। उनके पिता की डेथ उनके जन्म लेने के दो महीने पहले हो चुकी थी। जब Newton तीन साल के थे तब उनकी माँ उन्हें उनकी दादी के पास छोड़ कर चली गई और दूसरी शादी कर ली।

जब Newton के सौतेले पिता की डेथ हुई तब उनकी माँ उनके पास वापस आयी और उन्हें फार्मिंग करने के लिए कहा गया लेकिन Newton का मन तो शुरू से पढ़ाई और नई चीज़ों को सीखने में था, इसलिए उन्होंने अपनी गाँव की प्राइमरी स्कूल में एडमिशन लिया और बाद में 12 साल से

17 की उम्र तक उन्होंने The King's School Grantham में पढ़ाई की।

Newton की पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी देख उनके अंकल जो ट्रिनिटी कॉलेज, कैंब्रिज से पढ़े थे, उन्होंने Newton की माँ से Newton को ट्रिनिटी कॉलेज भेजने को कहा और Newton ने ट्रिनिटी कॉलेज, कैंब्रिज में एडमिशन लिया। उस टाइम Newton वहाँ कॉलेज की फ़ीस के लिए पियोन का काम भी करते थे।

उस टाइम कॉलेज की पढ़ाई Arastu की थ्योरी पर आधारित थी लेकिन Newton मॉडर्न फिलॉसॉफ़र्स को पढ़ना चाहते थे। पढ़ाई में अच्छे होने के कारण उनके कॉलेज से उनको स्कॉलरशिप मिली जिससे उनके पढ़ाई के खर्च निकल सके।

पढ़ाई के दौरान ही Newton ने 1665 में Binomial Theorem की खोज की और एक मैथेमैटिकल कांसेप्ट

पर काम करना शुरू किया जो बाद में जाकर Calculous बना। Newton ट्रिनिटी कॉलेज में 1668 तक रहे उस दौरान उन्होंने BA और MA की डिग्री कम्पलीट कर दी थी। उसी बीच 1665 में प्लेग नाम की बीमारी फैली थी और उस कारण उनका कॉलेज अस्थायी रूप से बंद हो गया था, सभी स्टूडेंट्स आस-पास के गाँवो में चले गये और Newton भी अपने फ़ार्म पर अपनी माँ के पास चले गए।

उसी पीरियड में एक दिन Newton एक सेव के पेड़ के नीचे बैठे थे और ऊपर से एक सेव आकर गिरा और तब ग्रेविटेशनल फ़ोर्स नाम की थ्योरी पहली बार Newton के माइंड में आई। Newton ने ये भी बताया कि ग्रेविटेशनल फ़ोर्स दूरी बढ़ने के साथ-साथ कम हो जाता है, इसलिए पृथ्वी हर चीज़ को अपनी तरफ खिंचती है और पृथ्वी कितनी ताक़त से उनको खिंचती है ये उसके मास और वैल्यू पर डिपेंड करता है।

Newton ने अपनी पूरी लाइफ़ ग्रेविटी मैकेनिक्स की खोज में दे दी, उन्होंने Principia Mathematica नाम की एक बुक लिखी, Newton ने इसमें मोशन के तीन लॉ को समझाया। जिसमें उन्होंने प्लेनेटरी मूवमेंट्स को भी एक्सप्लेन किया। साइकिल से लेकर एरोप्लेन, जिन रूल्स को ध्यान में रखकर बने वो रूल असल में Newton ने ही खोजे हैं।

उन्होंने 1670 से 1672 तक ऑप्टिक्स थ्योरी पर काम किया, उन्होंने बताया कि जो सनलाइट हम देखते हैं असल में वो वाइट नहीं बल्कि अलग-अलग कलर से मिलकर बनती है। उन्होंने दो लेन्सेस का यूज़ करके टेलीस्कोप इंवेंट किया जिसे Newton Telescope कहा जाता है और उन्होंने Reflecting Telescope भी बनाया।

1675 में उन्होंने Molecules के बीच में होने वाले Repulsion और Attraction को समझाया, उन्होंने

बताया कि Molecules के बीच के फ़ोर्स को Trasmitted करने से हम ईश्वर तक पहुँच सकते हैं, वो बहुत धार्मिक किस्म के इंसान थे इसलिए उन्होंने हमेशा अपनी खोज में ईश्वर को मैन सोर्स माना, बाद में इसी थॉट को उन्होंने एक्शन और रिएक्शन के रूप में डिफ़ाइन किया।

इसी दौरान Newton एक विवाद में भी फ़ँसे थे जब Newton कैलकुलस थ्योरी पर काम कर रहे थे, जो Newton और Gottfried Wilhelm Leibniz के बीच हुआ था। Newton के अनुसार उन्होंने 1666 में कैलकुलस थ्योरी पर काम करना शुरू किया था लेकिन Gottfried Wilhelm Leibniz ने 1674 में इस थ्योरी पर काम करना शुरू किया था, फिर भी Gottfried को लग रहा था कि उन्होंने पहले इस थ्योरी को दिया है।

हालाँकि Newton ने बाद में 1687 में अपनी बुक Principia में कैलकुलस के बारे में सब बता दिया था।

ऐसा माना जाता है कि Newton ने कभी शादी नहीं की, उन्होंने अपनी पूरी लाइफ़ रिसर्च और इन्वेंशन में दे दी। Newton ने बाइबिल पर अपनी रिलीजियस रिसर्च भी लिखी। Newton 1701 में यूनाइटेड किंगडम पार्लियामेंट के मेंबर भी रहे और 1705 में उन्हें नाइट बैचलर की उपाधि भी मिली।

20 मार्च 1727 को 84 साल की उम्र में नींद में Newton की डेथ हो गयी, जिन्हें Westminster Abbey में दफ़नाया गया, आज हम जिन सुविधाओं को भोग रहे हैं, उनके पीछे इसी महान आविष्कारी की सालों की तपस्या छुपी है, जिनके लिए हमें हर वक़्त ग्रेटफुल रहना चाहिए।

“Errors are not in the art but in the artificers.”

- Isaac Newton

#38. Napoleon Hill

Napoleon Hill अमेरिका के एक फ़ेमस राइटर थे जिन्होंने, पर्सनालिटी डेवलपमेंट के ऊपर कई बुक्स लिखी। Napoleon Hill को उनकी बुक "Think And Grow Rich" के लिए बहुत जाना जाता है। उनकी इस बुक ने करोडों लोगों की लाइफ़ को प्रभावित किया है, जो अब तक दुनिया की टॉप सैलिंग बुक्स में से एक है।

Napoleon Hill का जन्म 26 अक्टूबर 1883 को एक कैबिन (एक लकड़ी का बना छोटा सा घर) में हुआ, उनके पिता का नाम James Monroe Hill और माँ का नाम Sarah Sylvania था। जब Napoleon 9 साल के थे तब उनकी माँ की डेथ हो गयी थी। फिर उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली और उनकी सौतेली माँ का बिहेवियर Napoleon को लेकर सही नहीं होने की वजह से 13 साल को उम्र से उन्होंने माउंटेन रिपोर्टर नाम के न्यूज़पेपर के लिए आर्टिकल लिखना शुरू कर दिया।

रिपोर्टर की जॉब से उन्होंने जो भी अर्न किया वो उन्होंने अपनी लॉ की पढ़ाई में स्पेंड करना शुरू किया और कुछ ही सालों में उन्होंने एक राइटर और लॉयर के रूप में बड़ी सफ़लता हासिल की।

1907 में Alabama में उन्होंने Acree-Hill नाम की कंपनी बनाई और अक्टूबर 1908 में कंपनी पर मेल फ्रॉड

का आरोप लगा और कंपनी दिवलिया हो गयी। 1908 में Napoleon को उस टाइम के दुनिया के सबसे अमीर इंसान Andrew Carnegie का इंटरव्यू करने का मौका मिला।

वो इंटरव्यू असल में तीन घंटे का होना था लेकिन वो पूरे तीन दिन तक चला, Carnegie से सक्सेसफुली इंटरव्यू लेने के बाद Hill को Carnegie में 500 और अमीर और हाइली सक्सेसफुल लोगों का इंटरव्यू करने को कहा और उनके सक्सेस के पीछे के सीक्रेट्स पता करने को कहा कि हाइली सक्सेसफुल लोग ऐसा क्या करते हैं कि वो हमेशा नॉर्मल लोगों से बेहतर लाइफ़ जीने में इतने कामयाब हो पाते हैं।

तभी से Hill की जर्नी की स्टार्टिंग हुई और उन्होंने एक-एक करके सभी सक्सेसफुल लोगों का इंटरव्यू लेना

स्टार्ट किया जिसमें Thomas Edison, Henry Ford, John D. Rockefeller जैसे लोग शामिल हैं।

उन सभी के इंटरव्यू के दौरान उन्होंने काफ़ी मुश्किलों का सामना भी किया। 1909 में उन्होंने वाशिंगटन डी सी में ऑटोमोबाइल कॉलेज ऑफ़ वाशिंगटन खोली जिसमें वो स्टूडेंट्स को कार बेचना और बनाना सिखाते थे। जो कार्टर मोटर कॉरपोरेशन के लिए कार असेम्बल करते थे, 1912 में कार्टर मोटर कॉरपोरेशन दिवालिया हो गयी और उसकी वजह Hill की कंपनी ऑटोमोबाइल कॉलेज ऑफ़ वाशिंगटन को बताया और 1913 में उनकी कॉलेज भी बंद हो गयी।

पर्सनल लाइफ़ की बात करे तो ऑटोमोबाइल कॉलेज के दौरान उन्होंने Florence Elizabeth Horner से शादी की जिनसे उन्हें तीन बच्चें हुए। अपनी कॉलेज बंद होने के बाद Hill शिकागो चले गए और Lasalle Extension

University में जॉब पर लग गए और बाद में उन्होंने Betsy Ross Candy Shop नाम की कैंडी की दुकान खोली।

1915 में Hill George Washington Institute Of Advertising में डीन के पद पर रहे, जहाँ वो स्टूडेंट्स को प्रिंसिपल्स ऑफ़ सक्सेस और सेल्फ़ कॉन्फिडेंस पर लेक्चर देते थे। जून 1918 में Hill पर एक और आरोप लगा कि उन्होंने कॉलेज के शेयर को बेचने की कोशिश की और उनके नाम का अरेस्ट वारंट आया और कुछ टाइम बाद एडवरटाइजिंग स्कूल भी बंद हो गयी।

George Washington Institute बन्द होने के बाद Hill कई बिज़नेस स्टार्ट कर चुके थे लेकिन उन्हें कहीं भी सक्सेस नहीं मिली और उसके साथ-साथ उन्होंने "Hill's Golden Rule" और Napoleon Hill's

Magazine की मैगज़ीन भी पब्लिश की लेकिन उनके हाथ बड़ी सक्सेस नहीं लगी।

Napoleon ने Andrew Carnegie के उस प्रोपोज़ल को इसलिए एक्सेप्ट किया क्योंकि उस टाइम Hill के पास खोने के लिए कुछ नहीं था और उनकी फ़ाइनेंसियल कंडीशन भी ठीक नहीं थी, Hill ने आने वाले 20 सालों तक लोगों का इंटरव्यू और रिसर्च की और 20 साल की मेहनत के बाद Hill ने अपने 45 सक्सेसफुल लोगों के इंटरव्यू पर Base Law Of Success बुक लिखी जो 1925 में पब्लिश हुई थी। उसके साथ-साथ Ladder To Success बुक भी पब्लिश की, उन्होंने अपना होम स्टडी कोर्स भी बनाया जिसका नाम "Mental Dynamite" है।

"Law Of Success इतनी हिट साबित हुई जिसने Hill की ज़िंदगी को बदल दिया, 1929 तक Hill ने इतना पैसा

कमा लिया कि उन्होंने Rolls Royce कार खरीद ली और Castkill Mountains नाम की जगह पर 600 एकड़ की प्रॉपर्टी खरीद ली और एक साल बाद जब Great Depression (world wide economical depression जो 1930 में स्टार्ट हुआ था) का दौर शुरू हुआ और 1929 में Hill को अपनी Castkill Mountains वाली ज़मीन बेचनी पड़ी।

1930 में उन्होंने "The Magic Ladder To Success" नाम की बुक पब्लिश की जो बुरी तरह से फ़्लॉप हुई, उसी पीरियड में 1935 में उनका उनकी वाइफ़ Florence से डिवोर्स हो गया।

1947 में Hill की किस्मत फाइनली बदल जाती है जब उनकी बेस्ट सेलिंग बुक "Think And Grow Rich" इतनी फ़ेमस होती है कि Hill को वर्ल्डवाइड सक्सेस मिलती है। जिसको एडिट करने और लिखने में उनकी

सेकंड वाइफ़ Rosa Lee Beeland ने उनकी हेल्प की। ये बुक आज तक की सबसे सक्सेसफुल बुक्स में से एक है जिसकी आज तक 100 मिलियन से ज़्यादा कॉपीज़ बिक चुकी है।

इस बुक की सक्सेस की वजह से Hill अपनी बुक "The Law Of Success" से मिली सक्सेस से भी ज़्यादा अमीर बन गए लेकिन 1940 में उनका उनकी सेकंड वाइफ़ से भी डिवोर्स हो गया, जिसके कारण उनकी इनकम का काफ़ी हिस्सा उनकी वाइफ़ के पास चला जाता था और Hill को फिर से अलग-अलग जगह लेक्चर देने का काम करना पड़ा।

8 नवंबर 1970 को 87 साल की उम्र में Hill की डेथ हो गयी, उनकी डेथ को 50 साल पूरे होने बाद भी उनकी बुक "Think And Grow Rich" आज तक की बेस्ट

सेलिंग बुक्स में से एक है और सेल्फ़ हेल्प बुक ने भी अपनी जगह टॉप 10 बुक्स में बनाये रखी है।

मॉडर्न रीडर Rhonda Byrne की 2006 में लिखी "The Secret" बुक ज़्यादा फैमिलियर है लेकिन उसका कॉन्सेप्ट Napoleon Hill की लिखी बुक "Think And Grow Rich" से लिया गया है। Hill ने अपनी पूरी लाइफ़ लोगों की हेल्प की और सक्सेस के लिए लोगों को कई फ़ॉर्मूला दिए है जिसके लिए उन्होंने अपनी लाइफ़ के 30 साल दिए हैं, सक्सेस के उतार-चढ़ाव देखने के बावजूद उन्होंने अपने काम को डिटरमिनेशन के साथ शुरू रखा और उनकी इसी मेहनत का रिज़ल्ट आज तक लोगों को सक्सेसफुल होने के लिए हेल्प किये जा रहा है।

"Whatever the mind of man can conceive and believe, it can achieve."

- Napoleon Hill

#39. Lionel Messi

पूरे स्पोर्ट्र्स की दुनिया में वैसे तो कई लोग है जिनके नाम लिए जाते है लेकिन Lionel Messi का नाम उस लिस्ट के टॉप प्लेयर्स में आता है, कम उम्र से फुटबॉल की दुनिया में अपना जादू दिखाने वाले Messi को अपनी जनरेशन

का सबसे बेस्ट प्लेयर माना जाता है, जिनकी लाइफ़ किसी डिमोटिवेट इंसान को मोटीवेट करने के किये काफ़ी है।

Lionel Messi का जन्म 24 जून 1987 को Rosario, Argentina में हुआ था, उनके पिता का नाम Jorge Messi और माँ का नाम Celia Cuccittini है, उनके पिता एक स्टील कंपनी में काम करते थे। Messi को उनके पिता ने ही फुटबॉल खेलने के लिए मोटिवेट किया, जब वो 11 साल के थे तब उन्हें ग्रोथ हार्मोन डेफिशियेंसी नाम की बीमारी होने का पता लगा, जिससे उनकी ग्रोथ होनी रुक गयी थी।

उस टाइम उनको ह्यूमन ग्रोथ हार्मोन की दवाइयों की ज़रूरत पड़ी, जो काफ़ी महँगी होने के कारण एक टाइम ऐसा आया कि उनका इलाज सही से करवाने में भी वो एबल नहीं थे।

Messi ने इस बीमारी के होने के बाद भी फुटबॉल खेलना नहीं छोड़ा, 13 साल की उम्र में Messi के परफॉर्मेन्स को देखते हुए Barcelona के कोच Carles Rexach ने Messi को एक नैपकिन पर कॉन्ट्रैक्ट लिख कर दिया कि वो उनके ट्रीटमेंट का सारा खर्चा उठायेंगे, Messi अर्जेंटीना की जूनियर नेशनल टीम के लिए भी खेलने लग गए थे।

16 की उम्र में Messi FC Barcelona टीम में पहली बार खेले और 1 मई 2005 को Messi ने Barcelona के लिए अपना पहला गोल किया जो उनके लेजेंडरी करियर की की सिर्फ़ एक शुरुआत हुई, वो Barcelona के सबसे कम उम्र के खिलाड़ी थे जिसने गोल किया था। जब मैच के बाद Messi ड्रेसिंग रूम में गए तो सब उनकी हाइट देखकर दंग रह गए क्योंकि उनकी हाइट बहुत कम थी, लोगों ने उन्हें काफ़ी अंडरस्टिमेट किया लेकिन उन्होंने सभी को ग़लत साबित कर दिखाया।

उसी बीच उनका ट्रीटमेंट भी चल रहा था और हर 7 दिन में बारी-बारी से उनके पैरों में इंजेक्शन भी लग रहे थे, लेकिन उनको देखकर कभी लगा नहीं कि उन्हें कोई बीमारी भी है।

देखते ही देखते Messi Barcelona टीम के सबसे फ़ेमस प्लेयर बन चुके थे, 2009 में वो और फ़ेमस हो गए जब उन्होंने चैंपियन लीग में La Liga और स्पेनिश सुपर कप का खिताब जीता और उसी साल उन्होंने अपना पहला फ़ीफ़ा वर्ल्ड प्लेयर ऑफ़ दी ईयर का अवार्ड Ballon D'Or की तरफ से जीता।

Messi की परफॉर्मेंस को देखकर फाइटबॉल दिग्गज़ अर्जेंटीना टीम से रिटायर्ड Diago Maradona ने उनकी तारीफ़ की और उन्हें अपना उत्तराधिकारी बना दिया और कहा कि उनकी जगह अब Messi ने ले ली है।

Messi ने कई मैचों में Barcelona टीम को जीत दिलाई और धीरे-धीरे वो बाकी प्लेयर्स से कई ज़्यादा आगे होते जा रहे थे, Messi ने अपनी स्किल से 2008-09 में Barcelona को तीसरी बार चैंपियन बनाया और साल 2012 में Messi ने सबसे ज़्यादा गोल किये और उनका नाम Guinness Book Of World Record में दर्ज हुआ।

उस साल Messi ने 91 गोल किये थे, 25 की उम्र में Messi ने रेगुलर 4 फ़ीफ़ा अवार्ड्स जीतकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया और वो 3 यूरोपियन गोल्डन अवार्ड्स जीतने वाले पहले प्लेयर बन गए, 16 फ़रवरी 2013 में Barcelona टीम के लिए खेलते हुए 300 गोल पूरे किये और स्पेनिश La Liga के लिए 300 गोल करने वाले पहले प्लेयर बन गए।

2014 के फ़ीफ़ा वर्ल्ड कप में Messi ने अर्जेंटीना टीम को अपनी कैप्टेंसी से फ़ाइनल तक पहुँचाया और Messi को उनकी परफॉर्मेंस के लिए गोल्डन बॉल दी गई। 2009 में Messi को दुनिया के हाईएस्ट पेड एथलीट्स की लिस्ट में 127 मिलियन के साथ फ़र्स्ट पोजीशन पर रखा गया।

Messi एक वर्ल्ड क्लास प्लेयर के साथ-साथ एक अच्छे इंसान भी हैं, 2007 में उन्होंने ग़रीब बच्चों की मदद के लिए Leomessi Foundation भी खोला जिसे वो ग़रीब बच्चों की किसी बीमारी के इलाज के लिए चलाते है। उन्होंने अपनी ग़रीबी को ध्यान में रखते हुए ही चैरिटेबल ट्रस्ट खासकर बच्चों के लिए खोला।

2019 में Messi ने फ्री किक गोल करके अपने करियर के 600th गोल स्कोर किया, जिनमें से 539 गोल्स उन्होंने Barcelona के लिए किए और 61 गोल्स अर्जेंटीना के लिए किए। दुनिया के सबसे पॉवरफुल खिलाड़ी के रूप में

उन्होंने अपने 14 साल के करियर में ओवरऑल 747 मैचेस खेले और उनके माइलस्टोन को टच करना किसी दूसरे खिलाड़ी के लिए बहुत मुश्किल साबित होगा।

Messi एक बड़े खिलाड़ी होने के बाद भी उनकी लाइफ़ बहुत प्राइवेट और मामूली है, वो हमेशा Rasario, जहाँ उनका जन्म हुआ था उस शहर से जुड़े रहते है, Messi यूनिसेफ़ के गुडविल एम्बेसडर भी हैं। Messi को हमेशा बड़े बजट ऑफ़र के साथ दूसरी टीम ने अपनी टीम में शामिल होने के ऑफ़र दिए लेकिन वो हमेशा Barcelona टीम को लेकर ईमानदार रहे हैं। वो दुनिया की टॉप की कंपनीज़ Adidas, Pepsi EA Sports के कमर्शियल फ़ेस भी है।

"You have to fight to reach your dream. You have to sacrifice and work hard for it."
- Lionel Messi

#40. Dalai Lama (14th)

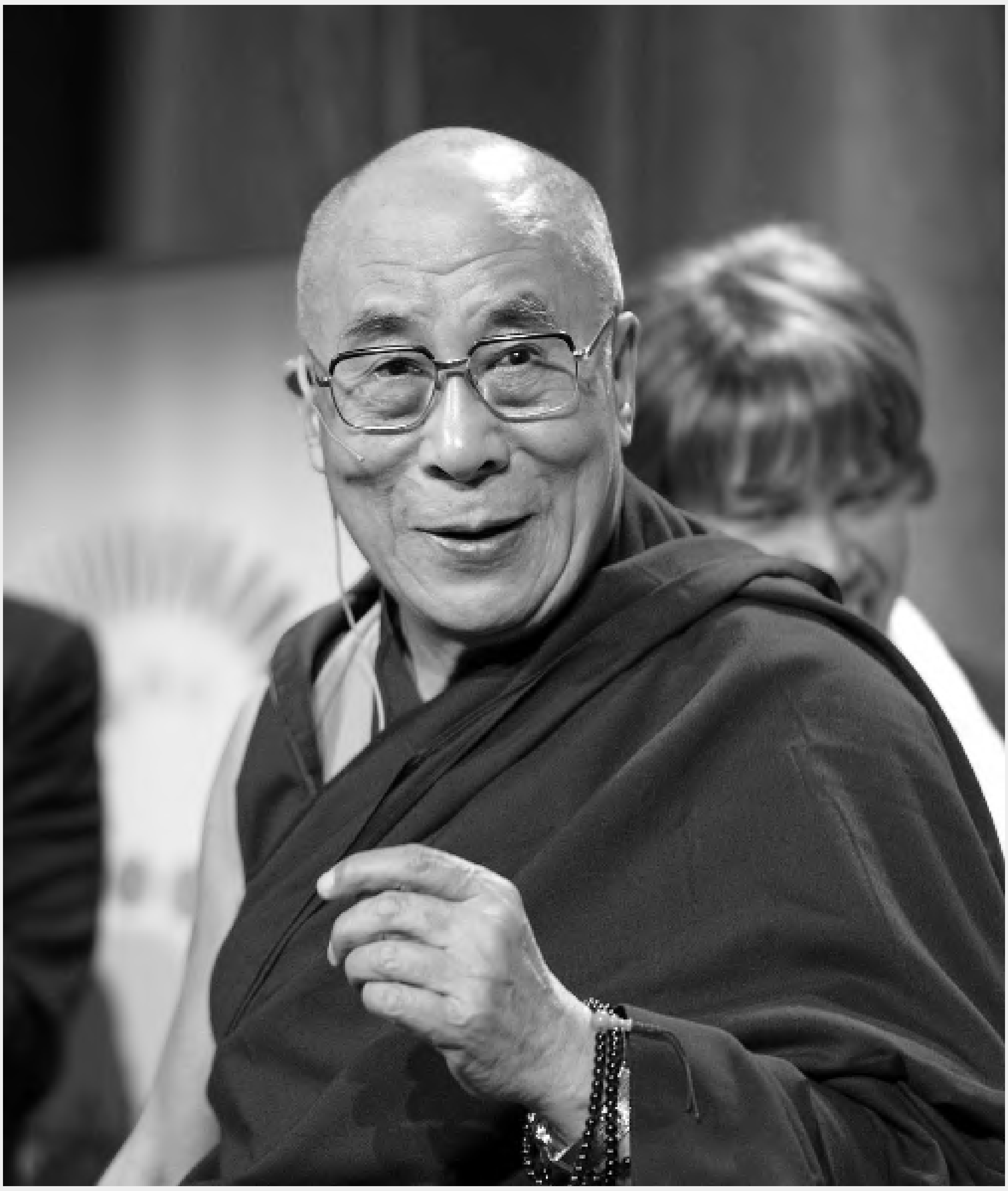

वर्ल्ड पीस के लिए लगातार अपना योगदान देने वाले Dalai Lama पूरी दुनिया के लिए आज सबसे बड़ा एक्ज़ाम्पल है। वर्ल्ड पीस के लिए Dalai Lama ने कई काम किये हैं जिसके लिए उन्हें दुनिया का सबसे बड़ा

अवार्ड नोबेल पीस प्राइज़ से सम्मानित किया गया है, Dalai Lama तिब्बत के 14वे धर्मगुरु हैं।

Dalai Lama का रियल नाम Lhamo Thondup है, उनका जन्म 6 जुलाई 1935 को Taktser, China में एक किसान फ़ैमिली में हुआ था, जब Lhamo Thondup दो साल के थे तभी बुद्ध धर्म के लोगों ने उन्हें Dalai Lama नाम के अवतार के रूप में पहचान लिया था और चार साल के होने से पहले उन्हें गद्दी पर बैठा दिया था।

माना जाता है कि जितने भी Dalai Lama हुए उन्होंने विश्व शांति के लिए पुनर्जन्म की कसम खाई थी और Lhamo Thondup भी उनमें से एक हैं।

Lhamo Thondup ने अपनी एजुकेशन 6 साल की उम्र से शुरू की, उन्होंने संस्कृत, मेडिकल, बौद्ध धर्म, एस्ट्रोलॉजी की पढ़ाई की। 24 साल की उम्र तक उन्होंने

बौद्ध दर्शन की शिक्षा ली, जिसे बुद्धिस्ट फिलोसोफी में डॉक्ट्रेट के समान माना जाता है।

1950 में चीन और तिब्बत के बीच आपसी मतभेद के कारण चीन कई बार तिब्बत पर हमला करते रहते थे और तिब्बत के लोगों पर अत्याचार बढ़ गए थे और यही कारण था कि तिब्बत के लोगों ने Dalai Lama को पॉलिटिक्स में आने के लिए फ़ोर्स किया लेकिन पॉलिटिक्स में आने से पहले Dalai Lama चीन गये ताकि वो शांति से सबके हित में बात कर सके लेकिन बात कुछ बनी नहीं।

1959 में लोगों के अंदर गुस्सा पैदा होने लगा और चीन तिब्बत पर कब्ज़ा करना चाहता था और Dalai Lama की वजह से चीन तिब्बत पर कब्ज़ा नहीं कर पा रहा था, जिसके कारण Lama को चीन के सैनिकों द्वारा विद्रोह का सामना भी करना पड़ा और Lama की ज़िन्दगी पर खतरा आने लगा, जिसके कारण 17 मार्च 1959 को Dalai

Lama तिब्बत छोड़कर भारत के लिए पैदल ही निकल गए।

31 मार्च को वो भारत की सीमा में एंटर हुए और हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में आकर रहने लग गए और Dalai Lama के भारत आने के दौरान उनके साथ 80 हज़ार तिब्बती भी उनके साथ आये थे। चीन ने उनके ख़िलाफ़ इतने रुथलेस बिहेवियर के बाद भी Dalai Lama चीन के प्रति दया भाव रखते हैं।

चीन ने जब तिब्बत पर हमला किया तब People's Republic Of China के अंदर सॉवरेन तिब्बत की स्थापना की उम्मीद में कई एक्शन लिए, 1963 में चीन ने Lama के इतने प्रयासों के बाद एक कॉन्ट्रैक्ट साइन किया जिसमें डेमोक्रेसी को लेकर कई सुधार किए गए।

सितंबर 1987 में Dalai Lama ने चीन की सरकार के साथ यूनियन बनाने और वहाँ की कंडीशन में सुधार करने

की पहल की और तिब्बत के लिए पंचसूत्री शांति योजना (Five-Point Peace Plan) बनाई ताकि तिब्बत को एक सैंक्चुअरी के रूप में कन्वर्ट किया जा सके ताकि वहाँ के लोग शांति से वहाँ रह सके और वहाँ के एनवायरनमेंट को सेफ़ रखा जा सके।

15 जून 1988 को Dalai Lama ने फ्रांस के स्ट्रासबर्ग में यूरोप की पार्लियामेंट के मेंबर को एड्रेस करते हुए चीन और तिब्बत के बीच बात करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन 1991 में Lama के स्ट्रासबर्ग में रखे प्रस्ताव को इनवैलिड बताया गया।

Dalai Lama ने अपनी पूरी ज़िंदगी मानव धर्म के फ़ेवर के लिए दे दी। उन्होंने कई किताबें लिखी और दुनिया की बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटी में जाकर पीस और एनवायरनमेंट के लिए कई सेमिनार और वर्कशॉप की और विश्व शांति के लिए लगभग सभी देशों से मुलाक़ात की।

एक इफेक्टिव पब्लिक स्पीकर के रूप में पहचाने जाने वाले Lama ने हमेशा दो देशों के बीच प्रेम और एक-दूसरे को बेहतर समझ कर साथ रहने को लेकर जोर दिया। 1989 में Lama को तिब्बत को फ्री करने के लिये उनके द्वारा किये गए प्रयासों के लिए नोबेल पीस प्राइज़ से सम्मानित किया जो दुनिया का सबसे बड़ा पुरुष्कार है।

10 मार्च 2011 को तिब्बत ने ये डिक्लेअर किया कि वो तिब्बत के पॉलिटिशियन के रूप में अब कभी सामने नहीं आयेंगे। चीन के इतने बुरे बिहेवियर के बाद भी Lama ने आज तक चीन के खिलाफ एक शब्द नहीं कहा और आज 85 की उम्र में भी वो दुनिया की शांति के लिए शांतिपूर्ण तरीके से लड़ाई लड़ रहे हैं।

Dalai Lama के महान विचारों के कारण आज दुनिया भर में उनके करोड़ों चाहने वाले हैं, जो Dalai Lama के प्रति गहरी आस्था रखते हैं और वो अपनी शांति के प्रचारक

की छवि के साथ-साथ बेहद पेशेंस वाले इंसान हैं, जिनके शब्द जीवन के प्रति नज़रिया बदल देने वाले और आपस में प्रेम भाव रखने के लिए प्रेरित करते हैं।

“The goal is not to be better than the other man, but your previous self.”

- Dalai Lama

#41. Winston Churchill

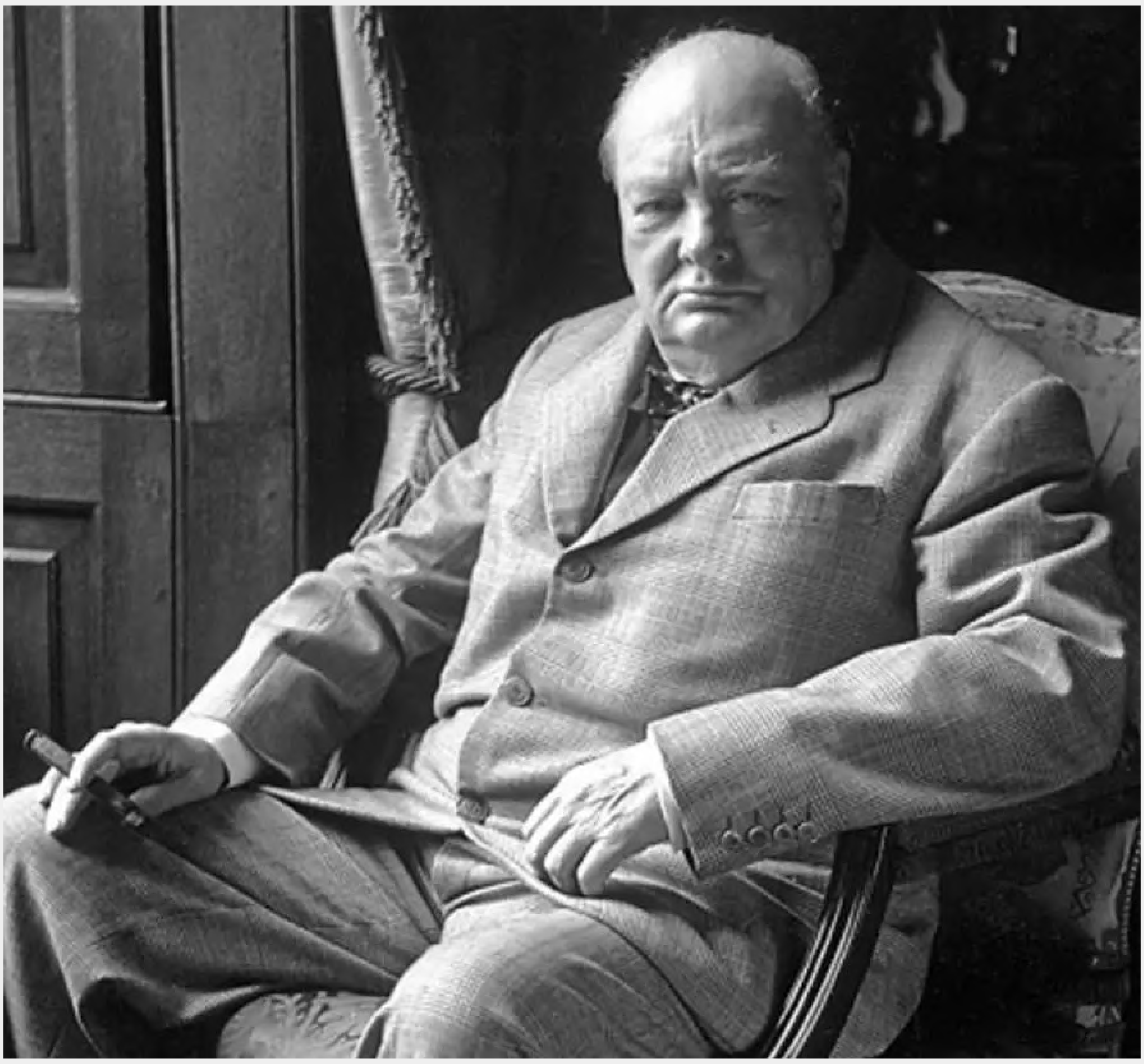

20th सेंचुरी में दुनिया ने जब दो वर्ल्ड वार का विद्रोह झेला और दुनिया के सामने या तो ख़त्म हो जाने या फिर डिक्टेटरशिप का दौर आने की मुसीबत सामने आकर खड़ी हो गयी।

ख़ासतौर पर सेकंड वर्ल्ड वॉर के टाइम Hitler और Musolini के ग़लत इरादे दुनिया पर कब्ज़ा करने की

सोच रहे थे तभी जिन डिप्लोमैटिस्ट ने इन डिक्टेटर का जी-जान से सामना किया, उनमें से Winston Churchill का नाम सबसे ऊपर आता है, अगर Winston नहीं होते तो हम आज किसी न किसी डिक्टेटर के अंडर में एक ग़ुलाम की तरह जी रहे होते या फिर कई देशों का पूरी तरह से अंत हो चुका होता।

Winston Churchill का जन्म 30 नवंबर 1874 को Blenheim Palace, Woodstock में एक सक्सेसफुल फ़ैमिली में हुआ। वो अपने सर्वेन्ट्स के बीच ही बड़े हुए और उनका ज़्यादातर बचपन बोर्डिंग स्कूल में बीता। Winston स्कूल में ज़्यादा इंटेलीजेंट स्टूडेंट नहीं थे और बहुत रिबेलियस स्टूडेंट थे लेकिन वो स्पोर्ट्स में काफ़ी अच्छे थे और स्कू के दौरान उन्होंने कैडेट कॉर्प्स जॉइन (छात्र सेना दल) किया।

स्कूल छोड़ने के बाद Winston ऑफिस की ट्रेनिंग के लिए Sandhurst गए, ऑफिस बनने के बाद Winston मिलिट्री ट्रैंगिन के लिए गए और उनकी माँ की हेल्प से वो नार्थ वेस्ट इंडिया में जॉब पर लग गए। 1899 में Winston ने अपनी मिलिट्री जॉब से रिज़ाइन कर दिया और एक युद्ध संवाददाता (War Correspondent) की जॉब जॉइन की और अफ्रीका चले गये।

अपने काम की वजह से वो अफ्रीका में काफ़ी फ़ेमस हुए, जिसके लिए उन्हें विक्टोरिया क्रॉस का सम्मान भी मिला। 1990 में Winston वापस UK आये और ओल्डहैम सिटी में मेंबर ऑफ पार्लियामेंट के कैंडिडेट के लिए चुनाव लड़ा, जिसमें उन्हें जीत मिली।

1904 में Winston अपनी कंज़र्वेटिव पार्टी को छोड़कर लिबर्टी पार्टी में चले गए, जिसके लिए कई बार उनकी आलोचना भी हुई। लिबरल पार्टी में Winston ने

पॉलिटिक्स फ़ील्ड में काफ़ी तरक्की की, जिसकी वजह से 1908 में उन्हें बोर्ड ऑफ़ ट्रेड का प्रेज़िडेंट चुना गया।

बोर्ड ऑफ़ ट्रेड ब्रिटेन के ग़रीब लोगों के लिए बराबरी और उनके विकास के लिए फण्ड इन्वेस्ट करता था। 1911 में उनको फ़र्स्ट लार्ड ऑफ दी एडमिरेलटी बनाया गया जो फ़र्स्ट वर्ल्ड वॉर के दौरान उनकी पोस्ट थी।

युद्ध के दौरान जब यूरोप पर दबाव आने लगा तब Winston सबसे मैन मेंबर थे जो यूरोप को वॉर में इन्वॉल्व होने पर दबाव बना रहे थे। 1914 में कुछ लोग युद्ध में यूरोप को इन्वॉल्व करने के लिए मना कर रहे थे, लेकिन Winston की युद्ध में इन्वॉल्व होने की इच्छा बहुत प्रबल थी।

उस दौरान Winston ने युद्ध के लिए टैंक बनाने के लिए भी काफ़ी फण्ड रेज़ किया, उनको लगता था कि उनकी

बनाई गई प्लानिंग युद्ध में काफ़ी कामयाब साबित होगी, लेकिन वो एक तरीके से अनसक्सेसफुल साबित हुई।

1915 में Winston ने अपने Dardanelles Campaign के तहत Turkey को वॉर से बाहर कर दिया लेकिन उससे भी उनको फ़ायदा नहीं हुआ और Winston ने अपनी लार्ड ऑफ़ दी एडमिरेलटी कि पोस्ट से रिज़ाइन दे दिया और वापस लंदन चले गए।

1917 में उन्हें युद्ध सामग्री (Munitions) का मिनिस्टर बनाया गया, वर्ल्ड वॉर 1st खत्म होने का बाद उन्होंने रसियन आर्मी को सपोर्ट किया, जो सोवियत यूनियन पर कब्ज़ा कर चुके लोगों का विरोध कर रहे थे, 1924 में Winston को PM Baldwin द्वारा Chancellor चुना गया।

सेकंड वर्ल्ड वॉर के दौरान जब जर्मनी ने पोलैंड पर हमला किया तब ब्रिटेन में हड़कंप मच गई और उस टाइम ब्रिटेन

के PM को दबाव में आकर Winston को वापस फ़र्स्ट लार्ड ऑफ दी एडमिरेलटी का पद देना पड़ा, जो फ़र्स्ट वर्ल्ड वॉर के टाइम उनके पास था। फ़र्स्ट वर्ल्ड वॉर के टाइम उन्हें किसी कार्यवाही की वजह से इसी पद से हटाया गया था।

Winston ने बहुत पहले ही कह दिया था कि Hitler से पूरी दुनिया को खतरा है और 1939 में पोलैंड पर हमला होने के बाद उनका ये दावा सच साबित हो गया और फ़र्स्ट वर्ल्ड वॉर में Winston की असफ़लताओं को भुला दिया गया और युद्ध की कमान 64 साल के Winston को दे दी गयी। दुनिया भर में फ़ैले ब्रिटिश लोग में 'विन्नी इज़ बैक' की खबर फ़ैल गयी और पूरी ब्रिटिश पार्लियामेंट में ऐसा कोई नहीं था जो जर्मनी के बारे में इतनी जानकारी रखता था, जितनी Winston को थी और जो Hitler के ऊपर काबू पा सकते थे।

अगर Winston नहीं होते तो इंग्लैंड जर्मनी से युद्ध में हार जाता और उस टाइम उन्हें वॉर टाइम PM का दर्जा दिया गया क्योंकि अगर वो Hitler को हराकर उस पर काबू नहीं पाते तो आज Hitler की तानाशाही ने पूरी दुनिया को परेशान करके रखा होता।

सेकंड वर्ल्ड वॉर जीतने के बाद Winston ने लेबर पार्टी की तरफ़ से PM के लिए इलेक्शन लड़ा जिसमें वो हार गए, इसके बाद वो फिर से ओपोज़िशन में चले गए और फ़ाइनली 1951 में वो PM का इलेक्शन जीत गए और इंग्लैंड के PM बन गए। Winston को 1954 में लिटरेचर में नोबेल प्राइज़ से सम्मानित किया गया, 24 जनवरी 1965 को 90 जाल की उम्र में Winston की उनके घर मे डेथ हो गयी, उनका अंतिम संस्कार उस टाइम का सबसे बड़ा अंतिम संस्कार था।

“Success is not final, failure is not fatal: it is the courage to continue that counts.”
- Winston Churchill

#42. Martin Luther King Junior

Martin Luther King को अमेरिका का महात्मा गाँधी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अमेरिका में रह रहे काले लोगों को अधिकार दिलवाने के लिए बहुत संघर्ष किया।

उन्हें अमेरिकन सिविल राइट्स मूवमेंट्स का हीरो भी कहा जाता है। उनकी डेथ के टाइम उनकी उम्र सिर्फ़ 39 साल की थी और पोस्टमॉर्टेम में डॉक्टर्स ने बताया कि उनके दिल की हालत तनाव के कारण एक 65 साल के आदमी जैसी हो गयी थी।

Martin Luther King Junior का जन्म 15 जनवरी 1929 को एटलांटा में हुआ, उनके पिता का नाम Martin Luther King Senior था और उनकी माँ का नाम Alberta Williams Kings था। Martin उन्ही अफ्रीकन ग्रुप के वंशज थे जो अमेरिका में पीढ़ियों से मज़दूरी का काम करते आ रहे थे, जिन्हें गोरे अमेरिकन हमेशा मज़दूर बनाकर ही रखना चाहते थे।

गोरे अमेरिकन्स चाहते थे कि काले लोगों को उनके बराबर न माना जाए, उन्हें उनके बराबर के अधिकार नहीं मिलने चाहिए, Luther King की लड़ाई भी उन्ही अधिकार को

लेकर थी। Junior एक ब्राइट स्टूडेंट थे और वो बहुत अच्छे स्पीकर भी थे, वो अपनी बातों से लोगों को अट्रैक्ट करना जानते थे।

एक बार की बात है जब Junior स्कूल में थे और उस वक़्त उनके पिता चर्च में पादरी थे और उनकी माँ भी काम की वजह से बाहर ही रहती थी, ऐसे में उनको कहा गया कि वो घर रहकर उनकी दादी का खयाल रखें लेकिन ऐसा हुआ नहीं Junior अपनी दादी का खयाल रखने की बजाय अपने किसी काम में बिज़ी हो गए, वो अपने काम मे इतने घुस गए कि उन्हें ये पता ही नहीं रहा कि उन्हें उनकी दादी का खयाल भी रखना है।

उसी समय उनकी दादी को हार्ट अटैक आया और उनकी डेथ हो गई और Junior को लगने लगा कि उनकी दादी की मौत के ज़िम्मेदार वो हैं और इसी बीच वो इतने डिप्रेशन में चले गए कि उन्होंने अपने घर के सेकंड फ्लोर से छलांग

लगा दी, लेकिन उनकी जान बच गयी। वो बचपन से ही बहुत गंभीर प्रवर्ती के थे और उनमें हर चीज़ की ज़िम्मेदारी लेने की काबिलियत थी।

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद में उन्होंने राजनीति में कदम रखा और अमेरिका के नीग्रो लोगों के साथ हो रहे भेदभाव को लेकर एक आंदोलन चलाया जो सक्सेसफुल रहा, 1955 में उनकी शादी हुई और उसी साल उनकी लाइफ़ में एक बड़ा मोड़ आया। उस टाइम अमेरिका में ये कानून था कि जब कोई नीग्रो व्यक्ति बस में सफ़र कर रहा होता है और उसी समय कोई गोरा व्यक्ति उस बस में आ जाता है तो नीग्रो व्यक्ति को उठकर गोरे व्यक्ति को सीट देनी पड़ती थी, इसी रूल के कारण एक औरत ने उस कानून का विरोध किया और अपनी सीट से खड़ी नही हुई और इसी कारण से उसको अरेस्ट कर लिया गया।

इस इंसिडेंट से Junior ने बस बॉयकॉट मूवमेंट चलाया, 381 दिन तक चले इस मूवमेंट ने बस में काले और गोरों के बीच में अलग-अलग सीट रखने के कानून को हटा दिया गया। इसी रूल को ख़त्म करने के लोए उन्होंने अमेरिका के दूसरे स्टेट्स में भी रीजनल मिनिस्टर से बात की और नॉर्थ अमेरिका के साइड भी इस कानून को ख़त्म करवाया।

1957 में वो अपने पिता के साथ चर्च में काम करने एटलांटा गए और काले लोगों को वोटिंग का अधिकार, Racism और कई नागरिक अधिकार को दिलाने के लिए 1963 में Birmingham Campaign चलाया, जो 2 महीने तक चला। उसके अलावा उन्होंने 1968 में Saint Augustine, Florida, Selma, Alabama में नीग्रो को अधिकार दिलाने के लिए कई कैंपेन चलाये। इस दौरान हर एक मूवमेंट के लिए Martin Luther King को अरेस्ट किया गया था।

1963 में एक सबसे बड़ा मार्च हुआ जिसे Martin Luther King ने चलाया था, ये मार्च स्कूल में होने वाले भेदभाव और रोजगार दिलाने के लिए चलाया गया था। उस टाइम नीग्रो को गोरे लोगों की तुलना में कम सैलरी दी जाती थी जिसके चलते उन्होंने बराबर सैलरी पाने की मांग रखी, Luther King के प्रयास सफ़ल हुए और उनकी मांग को सरकार ने एक्सेप्ट किया।

Lincoln Memorial पर उन्होंने एक जबरदस्त स्पीच दी, जिसका नाम "I Have A Dream" है जो एक हिस्टोरिकल स्पीच है। उन्होंने नॉर्थ के लोगों को अधिकार दिलाने के लिए शिकागो की यात्रा भी की और वहाँ भी लोगों के लिए कैंपेन चलाये लेकिन वहाँ की कंडीशन ज़्यादा खराब थी और Luther King को मिली धमकियों की वजह से उन्हें वापस लौटना पड़ा।

उन्होंने वियतनाम और अमेरिका के बीच हो रहे युद्ध के ऊपर भी बियॉन्ड वियतनाम नाम का स्पीच दिया क्योंकि Luther King नहीं चाहते थे कि उनके बीच युद्ध हो क्योंकि युद्ध में खर्च होने वाले पैसों को लोगों के हित मे यूज़ किया जा सकता था।

1959 में Martin भारत आये और उन्होंने न्यूज़पेपर में कई आर्टिकल्स लिखे, उन्होंने 1958 में "Stride Towards Freedom" और 1964 में "Why We Can Not Wait" नाम की बुक भी लिखी।

1964 में उन्हें दुनिया में शांति फैलाने के लिए नोबेल पीस प्राइज़ दिया गया और Luther King उस टाइम सबसे कम उम्र के इंसान थे जिन्होंने इस प्राइज़ को जीता था। 1963 में उनके अच्छे कामों को देखकर अमेरिका की टाइम मैगज़ीन ने उन्हें मैन ऑफ़ दी ईयर भी चुना।

उन्हें लोगों को अधिकार दिलाने के लिए काफ़ी पसंद किया जाने लगा था लेकिन उसके विपरीत गोरे लोग उनसे नफरत करते जा रहे थे क्योंकि वो लोग नीग्रो और उनके बीच के अंतर को ख़त्म नहीं करना चाहते थे, 29 मार्च 1968 को Luther Racism की मांग के चलते Tennessee गए और 3 अप्रैल 1968 को उन्होंने वहाँ लोगों को स्पीच दी।

उसी दौरान 4 अप्रैल 1968 की सुबह वो अपनी होटल की बालकनी में खड़े थे और तभी उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी और उनकी मौत के कारण सिविल राइट्स को एक अलग स्पीड मिल गयी, जिसके कारण उनके चलाये गए कैंपेन को दबाव में आकर सरकार को स्वीकार करना पड़ा।

"The time is always right to do what is right."
- Martin Luther King Junior

#43. Pelé

Pelé फुटबॉल के इतिहास के सबसे बेस्ट प्लेयर माने जाते हैं, जिन्हें किंग ऑफ़ फुटबॉल और बैक पर्ल नाम से जाना जाता है, उन्होंने अपने बेहतर गेमप्ले से कई रिकाड्र्स अपने नाम किये हैं और साथ ही ब्राज़ील को फुटबॉल में एक अलग मुकाम दिलाने में Pelé का बहुत बड़ा योगदान है,

जिन्होंने सभी मुश्किलों का सामना करके दुनिया के सबसे बेस्ट फुटबॉलर होने की पहचान बनाई।

Pelé का रियल नाम Edson Arantes Do Nascimento है उनका जन्म 23 अक्टूबर 1940 को Minas Gerais, Brazil में हुआ। उनके पिता का नाम Dondinho था और वो भी एक फुटबॉल प्लेयर थे लेकिन वो अपने करियर में इतने सक्सेसफुल नहीं हो सके।

Pelé जब 10 साल के थे तब से उन्होंने फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया था, उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने बचपन में जूते पोलिश करने का काम भी किया और वो सॉक्स को न्यूज़पेपर से भरकर उसकी फुटबॉल बनाकर खेलते थे।

शुरुआत में उन्होंने फुटबॉल अपने पिता से सीखी, वो पहले Indoor League के लिए खेलते थे। अपनी स्किल की वजह से Pelé को Bauru एथलेटिक क्लब में पहली बार

खेलने का चांस मिला, जहाँ उन्हें Waldemar De Brito ने ट्रेनिंग दी। उस जगह उन्होंने 1953 से 1956 तक खेला और टीम को लगातार तीन जीत दिलाई, इसके अलावा उन्होंने कई फुटबॉल चैंपियनशिप जीती।

Pelé के करियर की बड़ी शुरुआत तब हुई जब उनके कोच Waldemar De Brito को उनके हुनर का अहसास हुआ और उन्होंने Pelé को Santos Football Club में शामिल कर लिया। Pelé ने 1956 में कॉन्ट्रैक्ट साइन किया और 7 सिंतबर 1956 को 15 साल की उम्र में उन्होंने सीनियर टीम में डेब्यू किया।

Corinthians Santo Andre के खिलाफ अपनी परफॉर्मेन्स से उन्होंने 7-1 से अपनी टीम को जीत दिलाई। इसके बाद उन्हें ब्राज़ील की इंटरनेशनल टीम में ले लिया और 1957 में 16 की उम्र में उन्होंने अपना पहला इंटरनेशनल मैच अर्जेंटीना के खिलाफ खेला। इस मैच में

ब्राज़ील हार गई लेकिन Pelé ने अपना पहला इंटरनेशनल गोल कर दिया।

1958 के वर्ल्ड कप में उन्होंने 4 मैचेस में 6 गोल किये और वर्ल्ड कप में कई पुराने रिकॉर्ड तोड़े और 1962 में उन्होंने अपनी टीम को इंटरकॉन्टिनेंटल कप को जीतने में अपनी टीम की काफ़ी हेल्प की।

1962 के वर्ल्ड कप में Pelé को इंजरी के कारण टीम से बाहर होना पड़ा, जिसके कारण वो फ़ाइनल मैच नहीं खेल पाए और ब्राज़ील की टीम दो मैच खेलकर बाहर हो गयी जिसमें Pelé ने 1 गोल किया था। 1966 के वर्ल्ड कप में उन्हें फिर से चोट लगने के कारण टीम से बाहर कर दिया गया। 1969 Maracana Stadium में पेनल्टी किक से वास्को डी गामा टीम के खिलाफ Pelé ने अपना 1000वा गोल किया।

1970 के वर्ल्डकप में Pelé ने और ब्राज़ील ने शानदार वापसी की, जिसमें Pelé ने पूरे टूर्नामेंट में 5 गोल किये और फ़ाइनल में ब्राज़ील में इटली को हराया, फ़ाइनल में भी Pelé ने एक गोल किया, Pelé को अपनी परफॉर्मेन्स के लिए प्लेयर ऑफ़ दी टूर्नामेंट का खिताब दिया गया।

Pelé ने अपना आखिरी इंटरनेशनल मैच 18 जुलाई 1971 को Rio De Janerio में Yugoslavia के खिलाफ खेला। इंटरनेशनल फ़ील्ड में जब Pelé ब्राज़ील की टीम के साथ खेले तब ब्राज़ील की टीम ने 67 मैच जीते, 14 मैच ड्रा हुए और 11 मैच में ब्राज़ील की हार हुई।

ऑफिशियली उन्होंने अपना आखिरी मैच 1 अक्टूबर 1977 को खेला, ये मैच Cosmos और Santos के बीच शो मैच था, उन्होंने आधा मैच Cosmos के लिए खेला और आधा मैच Santos के लिए खेला और Cosmos ने

ये मैच 2-1 से जीता था। उसी साल एक खबर आई थी कि Pelé की राइट किडनी को हटा दिया गया है।

उनका फुटबॉल करियर काफ़ी सक्सेसफुल रहा है, 1992 में उनको इकोलॉजी और एनवायरनमेंट के लिए UN एम्बेसडर के लिए चुना गया। Pelé ने अपनी लाइफ़ में तीन शादियाँ की, उनकी पहली शादी Rosmeri Dos Reis Cholbike के साथ 1966 मे हुई जिनसे उन्हें 2 बेटियाँ भी है, 1982 में उनका तलाक़ हो गया। 1994 में उन्होंने Assiria Lemos Seixas से शादी की जिनसे उन्हें जुड़वा बच्चें हुए और उसके बाद वो अलग-अलग हो गए। 2016 में Pelé ने 76 की उम्र में Marcia Aoki से शादी की।

1999 में Pelé को इंटरनेशनल फ़ेडरेशन ऑफ़ दी फुटबॉल हिस्ट्री एंड स्टेटिस्टिक्स ने फुटबॉल प्लेयर ऑफ़ दी सेंचुरी के रूप में चुना। 2010 में इन्हें कॉसमॉस के प्रेज़िडेंट में रूप में

चुना गया, फुटबॉल के भगवान कहे जाने वाले Pelé की अद्भुत प्रतिभा को देखते हुए 19 नवंबर 1969 को Santos में Pelé Day के रूप में मनाया जाता है।

“Success is no accident. It is hard work, perseverance, learning, studying, sacrifice and most of all, love of what you are doing or learning to do”

- Pele

#44. Rabindranath Tagore

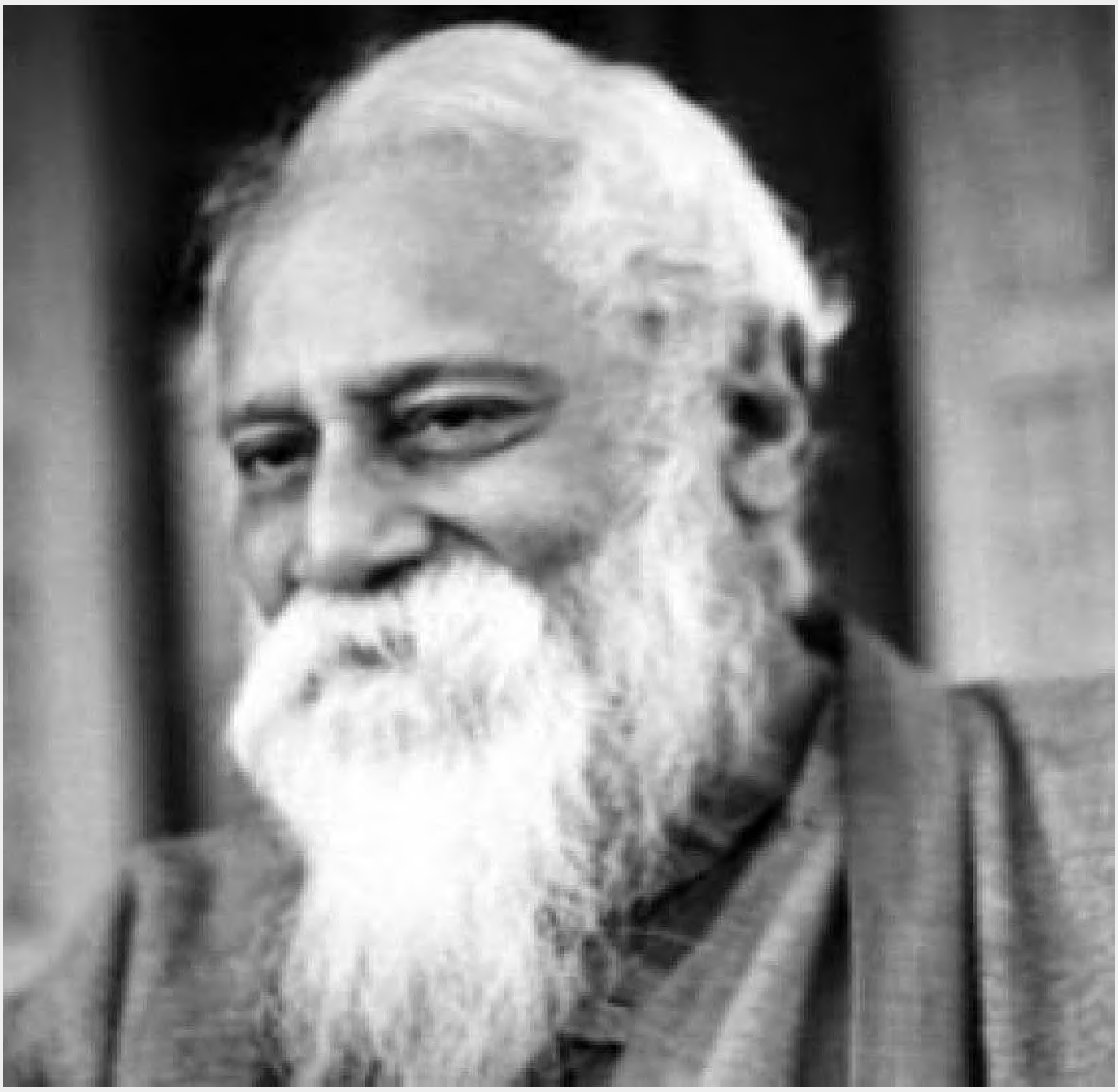

Rabindranath Tagore एक ऐसे इंसान है जिन्हें भारत का बच्चा-बच्चा जनता है क्योंकि भारत में स्कूल की पढ़ाई की स्टार्टिंग में ही उनके बारे में बता दिया जाता है कि भारत के राष्ट्रीय गान के रचियता गुरु Rabindranath

Tagore थे, Tagor भारत के ही नहीं बल्कि बांग्लादेश के राष्ट्रीयगान 'Aamaar Sonar Bangla' के भी रचियता हैं।

Rabindranath Tagore का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता में हुआ था, वो अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। Tagore जब 14 साल के थे तब उनकी माँ की डेथ हो गयी थी, उसके बाद उनके पिता और बड़े भाई-बहनों ने उनकी देखभाल की, वो एक सम्पन्न परिवार से बिलोंग करते थे, उनकी प्राइमरी स्कूल की एजुकेशन Saint Xavier School से हुई।

उनके बड़े भाई भी भारत की फ़ेमस पर्सनालिटी में शामिल है, उनके सबसे बड़े भाई Dwijendranath एक फिलॉसॉफ़र और कवि थे, उनके दूसरे भाई Satyendranath Tagore इंडियन सिविल सर्विस में जाने वाले पहले इंडियन थे, उनके तीसरे भाई

Jyotindranath Tagore म्यूजिशियन और प्ले राइटर थे, उनकी बहन एक कवियत्री और उपन्यासकार थी इसलिए बचपन से ही उन्हें हर तरह का ज्ञान अपने बड़े भाई-बहनों से मिलता रहा।

1878 में Rabindranath Tagore बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए, उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में एडमिशन तो ले लिया लेकिन वो दो साल में वापस इंडिया आ गए। लंदन में रहकर उन्होंने इंग्लिश और स्कॉटिश साहित्य को बहुत गहराई से जाना और इंडिया वापस आकर 1883 में उन्होंने Mrinalini Devi से शादी की।

Tagore राजनीति में काफ़ी सक्रिय थे, वो एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे और ब्रिटिश शासन के बिल्कुल खिलाफ़ थे, उन्होंने राष्ट्र हित के लिए कई कविताएं लिखी, उन्होंने देशभक्ति पर कई गीत लिखे। 1898 में Tagore अपनी पत्नी और बच्चों के साथ Shelaidaha (जो अभी

बांग्लादेश में है) चले गए, जहाँ वो अपने पैतृक घर में रहते थे, वहाँ आकर उन्होंने ग्रामीण जीवन और ग़रीबी को करीब से स्टडी किया और 1891 से 1895 तक उन्होंने रूरल बंगाल से रिलेटेड कई स्टोरीज़ लिखी।

1901 में Rabindranath Tagore शांतिनिकेतन चले गए क्योंकि वो वहाँ एक आश्रम बनाना चाहते थे, जहाँ जाकर उन्होंने लाइब्रेरी, स्कूल और प्रार्थना हॉल बनाया और उसी दौरान उनकी पत्नी और उनके दो बच्चों की मौत हो गयी। 1905 में उनके पिता की भी मौत हो गयी।

पिता के जाने के बाद Tagore को उनके पिता से विरासत में काफ़ी संपत्ति मिली जिससे उनकी काफ़ी इनकम हो रही थी और उनके लिटरेचर भी अब तक उन्हें रॉयल्टी देना शुरू हो गए थे क्योंकि उनके लिखे गए साहित्य (लिटरेचर) इतने फ़ेमस हुए की 14 नवंबर 1913 को उन्हें लिटरेचर में नोबेल प्राइज़ दिया गया, Rabindranath Tagore पहले

एशियाई थे जिन्हें नोबेल प्राइज़ से सम्मानित किया गया था।

एक महान कवि होने के साथ-साथ वो एक संगीतकार और एक पेंटर भी थे, उन्होंने अपने जीवन काल में लगभग 2200 से ज़्यादा गीत लिखे और 60 साल की उम्र से उन्होंने पेंटिंग करना भी शुरू कर दिया।

साहित्य के अलग-अलग शैलियों में महारत हासिल करने वाले Tagore ने साहित्य के हर एक क्षेत्र में में पूरी मेहनत और लगन के साथ काम किया, एशिया के पहले नोबेल प्राइज़ पाने के वो हक़दार थे, वो दुनिया के अकेले ऐसे इंसान थे जिनकी दो कम्पोजीशन को दो देशों के नेशनल एंथम के रूप में चुना गया। (भारत- जन गण मन, बांग्लादेश- आमार सोनार बांग्ला) उनकी फ़ेमस कम्पोजीशन गीतांजलि लोगों को इतना पसंद आई कि

सिर्फ़ भारत नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी इसकी लोकप्रियता उतनी ही थी।

गीतांजलि को जर्मन, फ्रेंच, जापनीज़, रसियन और भी कई भाषाओं में ट्रांसलेट किया गया था और उसी कारण से Tagore का नाम दुनिया के कोने-कोने में फैल गया। उनकी लिखी कहानियाँ काबुलीवाला, मास्टर साहब, पोस्टमास्टर आज भी हमारे एजुकेशन सिस्टम की बुक्स में आती है। उनके साहित्यों में देश को लेकर आजादी की चाह साफ़ नज़र आती है।

साहित्य में Tagore का नाम एक गहरे समुद्र की तरह था, जिसे मापा नहीं जा सकता, उनकी कहानियों और कविताओं ने पूरे विश्व में रहने वाले लोगों को एक अलग रास्ता दिखाया है, उन्होंने अपनी ज़िन्दगी के अंतिम चार साल बहुत मुश्किल और बीमारी में बिताया थे।

1937 के अंत में वो बिल्कुल अनकॉन्शियस हो गए थे लेकिन उस टाइम भी उन्होंने कविताएं लिखना नहीं छोड़ा, 7 अगस्त 1941 को Rabindranath Tagore दुनिया को अलविदा कह गए। उन्होंने साहित्य के लिए 1878 से 1932 तक लगभग 30 देशों की यात्रा की और उनकी अंतिम यात्रा श्रीलंका की थी।

"You can't cross the sea merely by standing and staring at the water."
- Rabindranath Tagore

#45. Chandrasekhara Venkata Raman

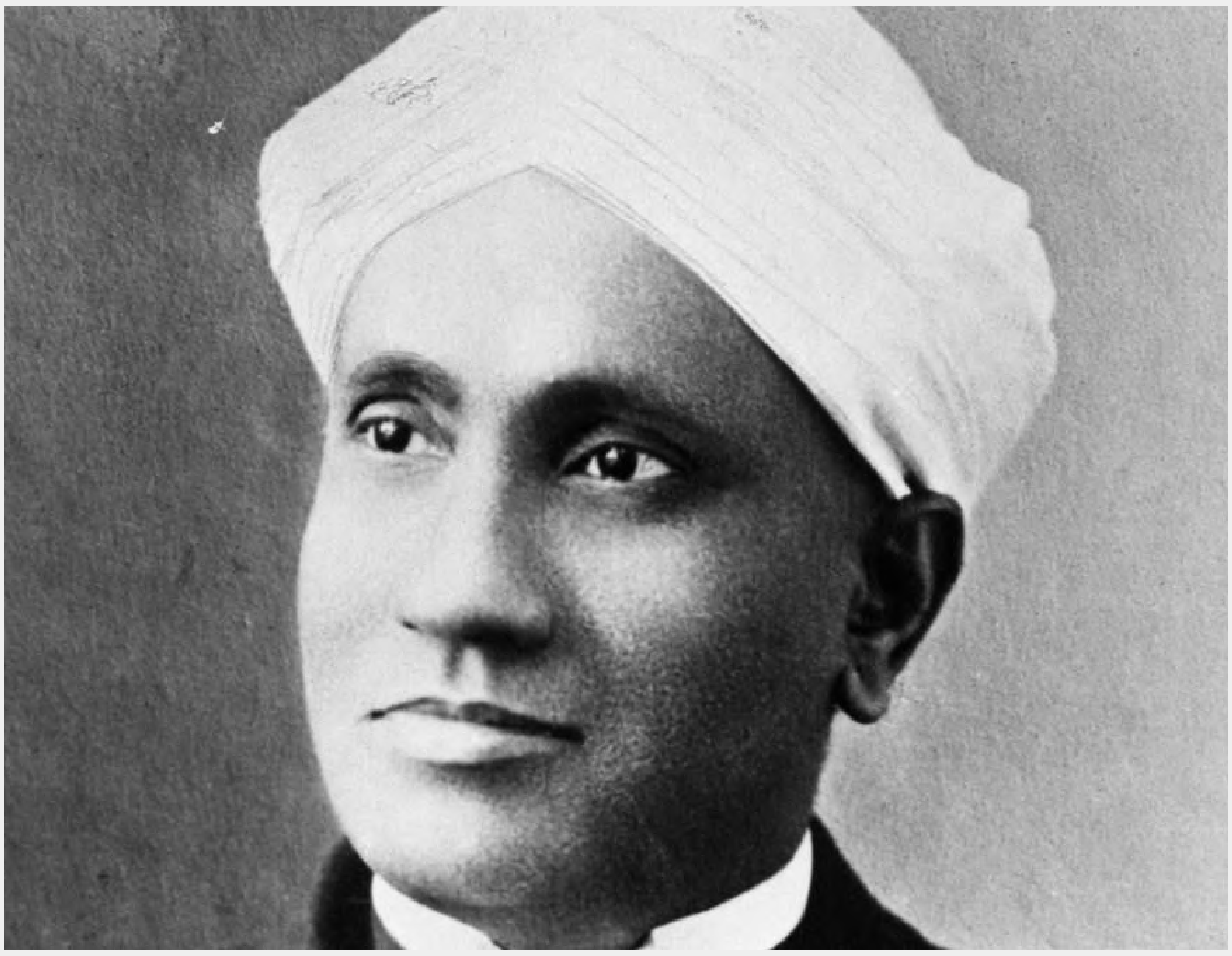

चंद्रशेखर वेंकट रमन (CV Raman) मॉडर्न एरा के एक महान साइंटिस्ट थे, जिन्होंने साइंस के क्षेत्र में अपने योगदान की वजह से भारत को पूरी दुनिया में एक अलग पहचान दिलाई। "Raman Effect" CV Raman की

सबसे अद्भुत खोज में से एक है, जिसके लिए उन्हें फिजिक्स में नोबेल प्राइज़ भी दिया गया था।

CV Raman का जन्म 7 नवंबर 1888 को तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु में हुआ था, उनके पिता का नाम Chandrasekhara Ramanathan Iyer और माँ नाम Parvathi Ammal था। वो अपने 8 भाई-बहनों में से दूसरे नंबर पर थे, उनके जन्म के समय उनके घर की आमदनी बिल्कुल नहीं थी, जब Raman चार साल के हुए तब उनके पिता को नौकरी मिली।

उनके पिता कॉलेज में फिजिक्स प्रोफेसर थे और बचपन से ही उनको पढ़ाई का माहौल मिल गया था इसलिये वो बचपन से ही पढ़ाई में बहुत ज़्यादा इंटेलीजेंट थे, उन्होंने अपनी 10th का एक्ज़ाम सिर्फ़ 11 साल की उम्र में पास किया और 12th के एक्ज़ाम 13 साल की उम्र में पास किये

और दोनों ही एक्ज़ाम में Raman ने आंध्रप्रदेश स्कूल बोर्ड एग्ज़ामिनेशन में टॉप किया था।

12th की पढ़ाई के बाद वो 1902 में प्रेज़िडेंसी कॉलेज मद्रास में गए जहाँ से उन्होंने 1904 में ग्रेजुएशन की डिग्री फ़र्स्ट क्लास से कम्पलीट की और उन्हें फ़िजिक्स में गोल्ड मेडल भी मिला। 1907 में उन्होंने MA की डिग्री कम्पलीट की और पूरी यूनिवर्सिटी में टॉप किया, कॉलेज के दौरान उनका ज़्यादातर समय लैब में एक्सपेरिमेंट्स करने में जाता था।

सिर्फ़ ग्रेजुएट होने के बाद उन्होंने "Unsymmetrical Diffraction Bands Due To A Rectangular Aperture" नाम का साइंटिफ़िक रिसर्च पेपर लिखा जो लंदन की "Philosophical Magazine" में प्रिंट हुआ था और आपको बता दूँ उस समय Raman की उम्र 18 साल भी होनी थी।

मास्टर डिग्री के दौरान 6 मई 1907 को Raman की शादी Lokasundari Ammal से हो गयी जो बहुत अच्छा वीणा बजाती थी और उनकी वीणा बजाने की इस कला से प्रभावित होकर ही Raman ने उन्हें शादी का प्रस्ताव भेजा। Raman के दो बेटे हुए जिनका नाम Chandrasekhara Raman और Venkatraman Radhakrishnan था। Venkatraman Radhakrishnan भी एक साइंटिस्ट थे।

मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद उनकी इंटेलिजेंस को देखते हुए, उनके कॉलेज के प्रोफेसर ने उन्हें हायर स्टडी के लिए फॉरेन कंट्री भेजने को कहा लेकिन Raman की तबीयत ठीक न होने की वजह से वो फॉरेन तो नहीं जा सके लेकिन उस टाइम ब्रिटिश गवर्मेंट की तरफ़ से एक एक्ज़ाम हुआ था और उन्होंने ये एक्ज़ाम बहुत अच्छे मार्क्स के साथ क्लियर किया और बाद में उन्हें फाइनेंसियल डिपार्टमेंट में

काम करने का मौका मिला और उन्हें कोलकाता में असिस्टेंट अकाउंटेंट की नौकरी मिली।

नौकरी के बाद भी उन्होंने अपनी रिसर्च और एक्सपेरिमेंट्स करना जारी रखा और विज्ञान में अपने इंटरेस्ट को देखते हुए उन्होंने 1917 में अपनी जॉब छोड़ दी और Indian Association For The Cultivation Of Science में Honorary Secretary के पद पर जॉइन किया और उसी साल उन्हें कलकत्ता यूनिवर्सिटी में फ़िजिक्स प्रोफेसर की जॉब भी मिली और वो वापस विज्ञान के फ़ील्ड में आ गए।

1924 में Raman को अपने ऑप्टिक्स में दिए गए योगदान के लिए लंदन की रॉयल सोसाइटी का मेंबर बना दिया। उसी दौरान Raman अपनी लाइफ़ की सबसे बड़ी खोज Raman Effect में काम करने में लगे हुए थे। Raman Effects ने भारत को विज्ञान जगत में एक

अलग पहचान दिलाई और 1928 में उन्होंने अपने सालों की रिसर्च करने के बाद Raman Effect की खोज की।

उन्होंने इस खोज में बताया कि जब लाइट किसी पारदर्शी माध्यम से होकर गुज़रती है तो लाइट के नेचर में फ़र्क आता है, उन्होंने समुद्र के पानी का रंग नीला होने के पीछे की साइंस को भी सिद्ध की।

उनकी इस खोज की खबर कुछ ही दिनों में पूरी दुनिया में फ़ैल गयी और फ़ेमस साइंस मैगज़ीन नेचर ने भी इसके ऊपर आर्टिकल लिखा। बाद में इस खोज का नाम Raman Effect रखा गया और उनकी इस खोज के कारण Raman को 1930 में फ़िजिक्स में नोबेल प्राइज़ दिया गया। 28 फरवरी को Raman Effect की वजह से ही भारत में इसी दिन साइंस डे मनाया जाता है क्योंकि Raman Effect 28 फरवरी 1928 में खोजा गया था।

1934 में Raman को बेंगलुरु के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस का डायरेक्टर बनाया गया और वहाँ 14 साल नौकरी करने के बाद 1948 में Raman रिटायर हो गए, रिटायर होने के बाद उन्होंने Raman Research Institute, Bengaluru की स्थापना की।

1954 में विज्ञान में अपने योगदान के लिए Raman को भारत के सबसे बड़े पुरुष्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया और 1957 में उन्हें लेलिन पीस प्राइज़ से सम्मानित किया गया।

82 साल की उम्र में Raman, Raman Research Institute, Bengaluru में लैब में एक रिसर्च के सेंटर में काम कर रहे थे और अचानक उन्हें हार्ट अटैक आया और 21 नवंबर 1970 को उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया, उनका विज्ञान के क्षेत्र में भारत को अलग पहचान दिलाने के लिए हमेशा याद किया जायेगा।

"Treat me right and you will see the light…Treat me wrong and you will be gone."
- Chandrasekhara Venkata Raman

#46. Jack Ma

दुनिया की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनी में से एक अलीबाबा के फाउंडर Jack Ma की कहानी काफ़ी संघर्ष से भरी है, Jack Ma दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों की लिस्ट में 19वे नंबर पर आते हैं (जनवरी 2021 के

अनुसार), एक नॉर्मल टीचर से एक बिलेनियर बनने की Jack Maa की कहानी काफ़ी इंस्पायरिंग है।

Jack Ma का जन्म 10 सितंबर 1964 को चीन में एक छोटे से गाँव Hangzhou में हुआ था। Jack Ma के माता-पिता ट्रेडिशनल सॉन्ग गाने का काम करते थे, इंग्लिश के प्रचलन को देखते हुए Jack Ma ने भी बचपन से ही इंग्लिश सीखनी शुरू की, बहुत कम उम्र में ही Hangzhou International Hotel जो उनके नज़दीक ही था, वहाँ वो उन होटल में आये हुए टूरिस्ट से इंग्लिश में बात करने जाते थे।

वो रोजाना 9 साल तक उनके घर से 27 किलोमीटर दूर एक टूरिस्ट स्पॉट पर टूरिस्ट्स को गाइड करने जाते थे, ताकि वो पूरी तरह से इंग्लिश सीख सके, वहाँ उन्हें एक टूरिस्ट मिला था उसी ने उन्हें Jack नाम दिया, असल में उनका नाम Ma Yun था।

Jack Ma ने जब कॉलेज में एडमिशन लेने के लिए एंट्रेंस एक्ज़ाम दिया तो उन्होंने तीन साल बाद उस एक्ज़ाम को क्लियर किया क्योंकि चाइनीज़ एंट्रेंस एक्ज़ाम एक साल में एक बार ही होते हैं,उन्हें दूसरा चांस नहीं मिलता और तीन साल बाद उन्होंने Hangzhou Teacher's Institute में एडमिशन ले लिया।

1988 में 24 की उम्र में Jack Ma ने BA से ग्रेजुएट किया और ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने Hangzhou Dianzi University में इंग्लिश लेक्चरर के तौर पर जॉइन कर लिया। Jack Ma ने एक इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल में एडमिशन लेने के लिए 10 बार अप्लाई किया था लेकिन वो हर बार फैल हो गये थे।

एक बायोग्राफिकल स्पीच में Jack Ma ने कहा था कि ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने 30 अलग-अलग जगहों पर जॉब के लिए अप्लाई किया था लेकिन उन्हें कहीं भी सेलेक्ट नहीं

किया गया। एक बार वो KFC में जॉब के लिए गए थे जहाँ 24 लोग इंटरव्यू के लिए आये थे और उनमें से 23 लोगों को सेलेक्ट कर लिया गया और Jack Ma को वहाँ से भी रिजेक्शन मिला। उन्होंने पुलिस फ़ोर्स जॉइन करने के लिए अप्लाई किया लेकिन उन्हें वहाँ से भी रिजेक्शन मिला।

1994 में Jack Ma ने अपनी पहली कंपनी Hangzhou Haibo Translation Agency को रजिस्टर किया, जो लैंग्वेज ट्रांसलेशन कंपनी थी। 1995 में Jack Ma ने अपने दोस्त के साथ मिलकर China Pages नाम की कंपनी खोली और तीन सालों में उन्होंने 5,000,000 Renminbi ($800,000) कमाए।

वो chinapages.com खोलने से पहले अमेरिका गए थे क्योंकि उन्हें इंटरनेट की कुछ खास जानकारी नहीं थी और वो चाइना बेस्ड कंपनी के लिए वेबसाइट बनाने के काम करते थे। उन्होंने 2010 में एक इंटरव्यू में कहा कि वो न तो

कोडिंग करना जानते थे और न ही कस्टमर से बात करते थे, उनका सब काम अमेरिका में रहने वाले उनके फ्रेंड्स ही करते थे।

1988 में Jack Ma ने चाइना इंटरनेशनल इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स सेंटर में काम किया और 1999 में रिज़ाइन देकर उन्होंने खुद की ई-कॉमर्स कंपनी बनाने की सोची और अपनी पुरानी कंपनी के 17 साथियों के साथ मिलकर अलीबाबा ग्रुप नाम से कंपनी बना डाली। यह एक B2B वेबसाइट थी जो बड़े और व्होलसेल ट्रेडर से रिटेलर को सामान प्रोवाइड करने का काम करती थी। उसके बाद अलीबाबा ने पूरे वर्ल्ड में अपना नाम बना लिया।

आज अलीबाबा ग्रुप alibaba.com, Alibaba Cloud, Aliexpress, AliOS, Alipay जैसे मल्टीनेशनल कंपनीज़ को चलाते हैं। उनकी नेट वर्थ 59.8 बिलियन डॉलर है और वो दुनिया के अमीर लोगों की लिस्ट

में टॉप 20 में आते हैं, ये वही इंसान है जिन्होंने इतनी रिजेक्शन के बाद भी हार को कभी एक्सेप्ट नहीं किया और अपने न्यू आईडिया के साथ दुनिया में ऐसा बिज़नेस बिल्ड किया जो दुनिया के लगभग हर देश में अपनी सर्विस प्रोवाइड करता है।

"When people think too highly of you, you have the responsibility to calm down and be yourself."
- Jack Ma

#47. Nick vujicic

अगर किसी इंसान को लगता है कि वो अपनी पर्सनल प्रॉब्लम से ज़िन्दगी में कुछ कर नहीं पा रहा है या लाइफ़ में आने वाली प्रॉब्लम से जल्दी ही हार मान लेते हैं तो Nick Vujicic की ये शॉर्ट बायोग्राफी ऐसे लोगों को इंस्पायर करने के लिए काफ़ी है, Nick Vujicic जिनके हाथ-पैर

न होने का बाद भी आज अपने आप को एक सक्सेसफुल इंटरप्रेन्योर और एक्टर के रूप में दुनिया के सामने लाया है।

Nick Vujicic का जन्म 4 दिसंबर 1982 को Melbourne, Australia में हुआ था, उनके पिता एक अकाउंटेंट है और उनकी माँ एक नर्स है। जब Nick का जन्म हुआ था तब वो बिना हाथ-पैर के पैदा हुए क्योंकि उन्हें Tetra-Amelia Syndrome नाम की बीमारी है। जब वो पैदा हुए तो उनकी माँ ने उन्हें हाथ में लेने से मना कर दिया था लेकिन आखिर में उन्हें अपने बेटे को स्वीकार तो करना ही था।

Nick की स्टार्टिंग की लाइफ़ काफ़ी मुश्किलों से भरी थी, Nick ने बताया कि हाथ-पैर न होने की वजह से उन्हें रोज़ के काम में दिक्कत तो आती ही थी लेकिन वो कभी अपने फ्रेंड्स के साथ खेल नहीं पाते थे। कई बार उनका मज़ाक भी बनता था और इन्ही सब प्रॉब्लम की वजह से वो

डिप्रेशन में चले गए और उन्होंने सुसाइड एटेम्पट किया, वो पानी से भरे एक टैंक में जाकर कूद गए लेकिन उन्हें बचा लिया गया और ये बात तब की है जब वो सिर्फ़ 10 साल के थे।

Nick के जन्म के टाइम उनके एक पैर की जगह सिर्फ़ अंगुलियाँ थी और वो भी आपस मे जुड़ी हुई थी, जिसे डॉक्टर ने बाद में आपरेशन से अलग कर दिया था ताकि वो उनकी मदद से कुछ छोटे-मोटे काम कर सके।

Nick की लाइफ़ का टर्निंग पॉइंट तब आया जब उनकी माँ ने उनको एक आर्टिकल दिखाया जो विकलांग लोगों पर था और उसी समय उनको अहसाह हो गया था कि दुनिया में वो अकेले ऐसे इंसान नहीं है जो विकलांग हैं और Nick ने उस दिन से अपने आप को बेहतर बनाने में काम शुरू कर दिया। उन्होंने शुरुआत कंप्यूटर स्टार्ट करने जैसे छोटे-छोटे कामों से की।

Nick अगर नीचे गिर जाते थे तो वो बिना किसी की मदद के खड़े नहीं हो पाते थे लेकिन आज Nick स्विमिंग कर सकते हैं, वो अपनी प्रैक्टिस के कारण काफ़ी इज़ीलि लिख सकते हैं, स्काइडाइविंग, ड्रम बजाना जैसे कई काम उन्होंने कर दिखाए हैं।

जब Nick 19 साल के हुए तब उन्होंने इतनी सब एक्टिविटी सिख कर मोटिवेशनल स्पीकर के तौर पर अपना करियर स्टार्ट किया और मोटिवेशनल स्पीकिंग के दौरान उन्होंने B.COM (Accounting And Finance) में अपनी ग्रेजुएशन भी कम्पलीट कर दी।

24 की उम्र में आते-आते Nick ने Life Without Limbs Organization नाम की एक NGO की स्थापना की, जिसमें वो विकलांग लोगों को लाइफ़ में कुछ करने के लिए मोटीवेट करते हैं।

2007 में 26 की उम्र में Nick ने Attitude Is Altitude नाम की कंपनी खोली जो कि मोटिवेशनल स्पीकिंग सिखाने का काम करती है। 2009 में Nick ने "The Butterfly Circus" नाम को शार्ट फ़िल्म में मैन एक्टर के तौर पर काम किया, जिसके लिए 2010 में Nick को मेथड फ़ेस्ट इंडिपेंडेंट फ़िल्म फ़ेस्टिवल की तरफ़ से बेस्ट एक्टर का अवार्ड दिया गया, जिसमें उन्होंने Will नाम का किरदार निभाया था।

2010 में Nick ने "Life Without Limits: Inspiration For A Ridiculously Good Life" नाम की बुक लिखी जो दुनिया भर में 30 भाषाओं में ट्रांसलेट हो चुकी है और अब तक Nick कुल 9 बुक्स लिख चुके हैं और लोगों ने Nick की लाइफ़ से इंस्पायर होकर Nick पर भी काफ़ी बुक्स लिखी है।

बिना हाथ-पैर के पैदा हुए Nick आज दुनिया के सबसे सक्सेसफुल मोटिवेशनल स्पीकर में से एक हैं, सक्सेसफुल से मतलब पैसा कमाने से नहीं है बल्कि लोग उनकी बातों से कितना मोटिवेट होते है उससे है। अब तक वो 40 से ज़्यादा देशों में अपने लेक्चर दे चुके हैं, जिन्हें देखने के लिए कभी-कभी लाखों की तादात में ऑडियंस जमा होती है।

Nick फ़िलहाल कैलिफ़ोर्निया में अपनी बीवी और बच्चों के साथ में रहते हैं, उनकी बीवी से वो 2008 में अपने एक सेमिनार में मिले थे और बाद में 2012 में दोनों ने शादी कर ली थी।

1990 में उन्हें ऑस्ट्रेलियन यंग सिटीज़न नाम का अवार्ड मिला और 2005 में उन्हें यंग ऑस्ट्रेलियन ऑफ़ दी ईयर के अवार्ड से सम्मानित किया गया।

“If you can't get a miracle, become one.”
- Nick Vujicic

#48. Mark Zuckerberg

दोस्तों अगर काम को सही अंजाम देने का पूरा नॉलेज आप में है तो इसमें उम्र का महत्व कहीं भी बीच में नहीं आता, दुनिया भर को आपस मे जोड़ने में फेसबुक का बहुत अहम योगदान है और फेसबुक के पीछे अगर किसी का योगदान

है तो वो हैं Mark Zuckerberg, जिन्होंने ये कारनामा तब कर दिखाया जब वो सिर्फ़ 20 साल के थे।

Mark Zuckerberg का जन्म 14 मई 1984 को न्यूयॉर्क में हुआ था, उनके पिता का नाम Edward Zuckerberg हैं, जो एक डेंटिस्ट हैं और उनकी माँ Karen जो एक साइकेट्रिस्ट है। Mark को बचपन से ही कंप्यूटर का शौक था और उन्हें बेसिक प्रोग्रामिंग की ट्रेनिंग उनके पिता ने ही दी थी और बाकी की ट्रेनिंग David Newman ने दी थी जो उनके ट्यूटर थे।

Mark ने 12 साल की उम्र में एक सॉफ़्टवेयर बनाया जो उनके पिता के क्लीनिक और उनके घर को कनेक्ट करता था। Mark ने एक इंटरव्यू में कहा था कि उनके आर्टिस्ट फ्रेंड उन्हें कई बार आईडिया देते थे और वो उनके आइडिया पर बेस गेम भी बनाते थे।

जब Mark हाई स्कूल में थे तब उन्होंने इंटेलीजेंट मीडिया नाम की कंपनी को जॉइन किया और वहाँ वो एक मीडिया प्लेयर बनाने पर काम कर रहे थे। Mark ने 2002 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी जॉइन की, जहाँ वो साइकोलॉजी और कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई कर रहे थे, कॉलेज में एडमिशन के टाइम से ही उनकी रेपुटेशन एक अच्छे प्रोग्रामर के तौर पर थी।

2003 में Mark ने Facemash नाम की एक वेबसाइट बनाई जो एक फ़न वेबसाइट थी, जिसमें कॉलेज के स्टूडेंट्स के फोटोज़ को ब्यूटी के बेस पर वोट किया जाता था और वेबसाइट के लिए जितने स्टूडेंट्स के फ़ोटो थे वो सब Mark ने हार्वर्ड की वेबसाइट को हैक करके लिए थे। Facemash का आइडिया इतना हिट साबित हुआ कि उनके कॉलेज का सर्वर क्रैश हो गया था।

Facemash के आइडिया के दौरान उनके एक कॉलेजमेट Divya Narendra एक सोशल नेटवर्क वेबसाइट का आइडिया उनके पास लेकर आये, Divya Narendra के साथ उनके दो पार्टनर भी थे (Tyler और Cameron)। Divya Narendra उस वेबसाइट को कॉलेज स्टूडेंट्स के लिए बनाना चाहते थे, जिसका नाम उन्होंने हार्वर्ड कनेक्शन सोचा था, लेकिन बाद में उसका नाम कनेक्ट यु रखा गया, Divya ने बताया कि इस साइट से जुड़े स्टूडेंट्स एक-दूसरे के फोटोज़ लाइक कर सकेंगे और उस पर कमेंट भी कर सकेंगे, Mark को ये आईडिया इतना पसंद आया कि उन्होंने तुरंत इस पर काम शुरू कर दिया।

Mark को उस आइडिया पर काम करने के दौरान ही सोशल मीडिया वेबसाइट शुरू करने का आइडिया आया था और उन्होंने 2004 में thefacebook.com नाम के डोमेन को रजिस्टर किया और thefacebook बाद में

Facebook बनकर दुनिया के सामने आया, उन्होंने thefacebook.com बना दी, जिसका यूज़ पहले कॉलेज के स्टूडेंट्स कर रहे थे।

कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि दूसरे कॉलेज के स्टूडेंट्स का ट्रैफिक भी उनकी इस वेबसाइट पर आ रहा है और 2005 तक वेबसाइट पूरे अमेरिका में पॉपुलर हो गयी और बस उसी वक़्त Mark ने पूरी दुनिया को Facebook के ज़रिए कनेक्ट करने का सोचा और उस पर काम करने लगे, जिसके चलते उन्होंने अपनी कॉलेज डिग्री को भी बीच में ही छोड़ दिया।

2006 में Mark Palo Alto चले गए और एक घर रेंट पर ले लिया ताकि वहाँ से वो Facebook को हैंडल कर सके, वहाँ वो Sean Parker (Founder Of Napster) से मिले,असल में thefacebook से the हटाने का आइडिया Sean Parker ने ही दिया था और 1 साल की

कड़ी मेहनत के बाद 24 मई 2007 को उन्होंने Facebook को वर्ल्डवाइड लॉन्च करने की घोषणा की और आज Facebook जिस मुकाम पर है वो आप देख ही सकते हैं। 2010 में उन्हें वैनिटी फ़ेयर मैगज़ीन में IT फ़ील्ड में फ़र्स्ट पोजीशन पर रखा गया था।

Mark ने 19 मई 2012 को Priscilla Chan से शादी कर ली, जिन्हें वो हार्वर्ड कॉलेज के टाइम से डेट कर रहे थे। 2015 में उन्हें बेटी हुई जिसका नाम Maxima Chan Zuckerberg है और अगस्त 2017 में उन्हें दूसरी बेटी हुई जिसका नाम August Zuckerberg है।

2013 में Mark ने internet.org नाम का प्रोजेक्ट शुरू किया जिसकी हेल्प से वो दुनिया के हर एक इंसान तक इंटरनेट पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसमें कई कंपनीज़ उनका साथ दे रही है। 2014 में Facebook ने दुनिया की सबसे बड़ी पर्सनल मेसेजिंग एप व्हाट्सएप्प को भी ख़रीद

लिया। वो Chan Zuckerberg Initiative नाम से एक चैरिटेबल ट्रस्ट भी चलाते हैं।

Mark ने जब Facebook बनाई तब वो सिर्फ़ 19 साल के थे लेकिन उनके आईडिया ने पूरी दुनिया को जोड़ रखा है और 23 की उम्र तक आते-आते वो एक बिलेनियर बन चुके थे। Mark की लाइफ़ पर The Social Network नाम की मूवी भी बन चुकी है, जिसमें उनकी Facebook की जर्नी को बताया गया है।

By giving people the power to share, we're making the world more transparent.
- Mark Zuckerberg

#49. Andrew Carnegie

Andrew Carnegie स्कॉटलैंड में जन्मे एक इंदुस्ट्रियालिस्ट थे, जिन्होंने अपनी ग़रीबी में अमेरिका आकर दुनिया का सबसे अमीर इंसान बनकर दिखाया।

Andrew Carnegie का जन्म Dunfremline Scotland में हुआ था, उनके पिता का नाम William

Carnegie और माँ का नाम Margaret Morrison Carnegie था। Dunfremline लिनेन का कपड़ा बनाने के लिए फ़ेमस था लेकिन किसी रीज़न से लिनेन का काम धीरे-धीरे कम होने लगा और कपड़े का काम कम होने की वजह से Andrew के पिता का काम भी बंद हो गया।

Andrew के पिता का काम बन्द होने की वजह से चार्टिस्ट आंदोलन जॉइन किया लेकिन 1848 में वो आंदोलन विफ़ल हो गया, तभी Will और Margaret ने अपना सारा सामान बेच दिया ताकि वो अपने बेटे Andrew और Tom को लेकर अच्छे फ़्यूचर के लिए अमेरिका जा सके उस वक़्त Andrew की उम्र सिर्फ़ 13 साल थी।

1848 में ही Andrew के पिता Will ने Allegheny, Pennsylvania में बसने का फ़ैसला किया जहाँ उनके

दोस्त और रिश्तेदार रहते थे और Andrew और उनकी फ़ैमिली अमेरिका शिप से गये थे जो न्यूयॉर्क पहुँचाता था, Andrew बड़े शहर में आकर वहाँ के लोगों और हलचल को देखकर अचंभित थे, न्यूयॉर्क से Andrew की फ़ैमिली एक स्टीम बोट से Pennsylvania अपने रिलेटिव्स के यहाँ चले गए और वहाँ एक बुनाई की दुकान पर जाकर काम करने लग गए लेकिन कुछ टाइम बाद उनके पिता का बुनाई का काम भी फ़ैल हो गया।

13 साल की उम्र में Andrew ने Pennsylvania की एक कपड़ा बनाने की फैक्ट्री में बोबिन बॉय का काम किया, जहाँ से उन्हें एक हफ़्ते का 1.20 डॉलर मिलता था। 1 साल बाद Andrew ने वहाँ की एक टेलीग्राफ कंपनी में मैसेंजर का काम किया और कुछ टाइम बाद उन्होंने काम सिख लिया और उन्हें टेलीग्राफ ऑपरेटर की जॉब मिल गयी।

लगभग 10 साल वहाँ काम करने के बाद Andrew टेलीग्राफ ऑपरेटिंग में इतने मास्टर हो गए की उन्हें Pennsylvania Railroad में Superintendent के पद पर नौकरी मिल गयी, उस टाइम उनकी उम्र 24 साल थी और उसी जॉब के दौरान वो James Anderson की खोली गई लाइब्रेरी में पढ़ाई भी कर रहे थे।

Railroad की नौकरी के दौरान Andrew के बॉस Homas A. Scott ने Andrew को एडम्स एक्सप्रेस कंपनी के 10 शेयर्स खरीदने की सलाह दी और Andrew की माँ Margaret ने अपने घर का सामान बेच कर Andrew को 500 डॉलर दिए, जो Andrew की लाइफ़ का पहला इन्वेस्टमेंट था और जल्द ही उन्हें उसमें प्रॉफिट होने लगा।

Railroad के काम से जुड़े रहने के दौरान Andrew में कहीं और भी काम देखना शुरू किया, कुछ समय बाद

Theodore Woodruffne Andrew को स्लीपिंग रेल कार का आईडिया दिया और Andrew ने उसमें इन्वेस्ट करके उसमें अपना हिस्सा ले लिया, जिसका नाम Woodruff Sleeping Car Company था। Andrew ने उसमें इन्वेस्ट करने के लिए बैंक लोन लिया था जो Andrew की लाइफ़ बदल देने वाला एक सौदा था।

30 की उम्र में Andrew ने लोहे के काम, लेक पर स्टीमर और ऑयल के काम में इंटरेस्ट लेना शुरू कर दिया, बाद में वो फाइनली लोहे के काम में ज़्यादा इंटरेस्ट दिखाने लगे और उन्होंने अपनी खुद की कंपनी Carnegie Steel Corporation बनाई और फिर Andrew अपनी मेहनत की वजह से दिन ब दिन अमीर होते गए।

Andrew को मॉडर्न Philanthropy का जनक कहा जाता है, उन्होंने 1870 के बाद Philanthropy का

काम करना शुरू कर दिया, Andrew को ज़्यादातर अपने द्वारा खोली गयी फ्री लाइब्रेरी के लिए जाना जाता है, अपने philanthropy के काम के दौरान ही उनकी मुलाक़ात Louise Whitfield से हुई जिनसे वो न्यूयॉर्क में मिले थे।

बाद में वो भी Andrew के काम में उनका साथ देने लगी, उसके 2 साल बाद उन्होंने Gospel Of Wealth बुक लिखी जिसमें उन्होंने अमीर लोगों को अपने धन को दान देने और दुनिया में अच्छा काम करने के लिए कई विचार रखे।

1901 में Andrew ने अपनी कंपनी को 480 मिलियन डॉलर में J.P Morgan को बेच दिया और रिटायर हो गए, रिटायरमेंट के बाद Andrew ने अपने धन को लाइब्रेरी के अलावा चर्च बनवाने में यूज़ किया, उन्होंने अपने धन से कई देशों में स्कूल, कॉलेज और NGO बनाये। उन्होंने

अपने नाम से कई ट्रस्ट बनाये जिससे वो लोगों की मदद कर सके जैसे Carnegie Museum Of Pittsburg, The Carnegie Trust For The Universities Of Scotland, Carnegie Institution For Science, Carnegie Foundation (supporting the peace places), Carnegie Dunfermline Trust, Carnegie Foundation For The Advancement Of Teching, Carnegie Endowment For International Peace और The Carnegie UK Trust।

Carnegie ने अपनी Philanthropy के ज़रिए 2509 लाइब्रेरीज़ बनवाई, जिसमें से 1679 लाइब्रेरीज़ सिर्फ़ अमेरिका में थी, जिसमें उन्होंने 55 मिलियन डॉलर दान दिए थे। उन्होंने लाइब्रेरी बनाने पर अपना ध्यान इसलिए दिया क्योंकि वो खुद एज़ुकेटेड नहीं थे और वो ऐसे लोगों तक

एजुकेशन पहुँचाना चाहते थे जिनके पास पढ़ने-लिखने के लिए प्रयाप्त धन नहीं हैं।

11 अगस्त 1919 को Carnegie की मौत हो गयी, उन्होंने अपनी डेथ के टाइम जितना भी धन कमाया था सब-कुछ लोगों की भलाई और दुनिया में शांति फैलाने के लिए दान दे दिया था लेकिन वर्ल्ड वॉर की वजह से वो आखिरी समय में भी खुश नहीं थे क्योंकि उनके द्वारा इतना सब कुछ किये जाने के बाद भी दुनिया में इस तरह की घटनाएं होती जा रही थी।

Do your duty and a little more and the future will take care of itself.
- Andrew Carnegie

#50. Dhiru Bhai Ambani

जो बड़े सपने देखते हैं उनके ही सपने साकार हुआ करते हैं, ऐसा कहने वाले Dhirubhai Ambani भारत के सबसे बड़े बिज़नेसमैन में से एक थे, जिनकी लाइफ़ की जर्नी और बातें आज भी लोगों को बहुत इंस्पायर करती है क्योंकि

पेट्रोल पंप पर नौकरी करने वाले Dhiru Bhai Ambani ने वो कर दिखाया था जितना सोच पाना भी हर किसी के बस में नहीं होता।

Dhirubhai Ambani का रियल नाम Dheeraj Heeralal Ambani था, उनका जन्म 28 दिसंबर 1932 को गुजरात के जूनागढ़ के एक छोटे से गाँव चोरवाड़ में हुआ था, उनके पिता का नाम Heerachand Gordhanbhai Ambani था जो अपने गाँव के स्कूल में टीचर थे। किसी वजह से Dhirubhai Ambani को पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी और ऐसा कहा जाता है कि वो उनके घर के पास के धार्मिल स्थल पर पकौड़े बनाकर भी बेचते थे। कुछ समय बाद अपना वो काम बंद करके Dhirubhai अपने बड़े भाई के साथ Aden, यमन चले गए।

यमन जाने के बाद Dhirubhai में एक पेट्रोल पंप पर नौकरी की और 2 साल काम करने पर अपनी एलिजिबिलिटी की वजह से वो पंप के मैनेजर बन गये। Dhirubhai ने एक बार कहा था कि जब यमन में नौकरी कर रहे थे तब उनके साथी कर्मचारी जिस जगह चाय पीने जाते थे, Dhirubhai उनके साथ जाने के बजाय पास के बड़े होटल में जाते थे ताकि वहाँ पर आने वाले बड़े बिज़नेसमैन की बातें सुन सके। इस बात से आप उनके बिज़नेस को लेकर जुनून का अंदाज़ा लगा सकते हैं।

जब Dhirubhai यमन में थे तब वहाँ चाँदी के सिक्के चलते थे और उन सिक्कों के चाँदी के दाम सिक्कों के दाम से ज़्यादा थे, तभी उन्होंने लंदन की किसी कंपनी से कॉन्टैक्ट करके सिक्कों को गलाकर उन्हें बेचना शुरू किया, जब तक वहाँ की सरकार को इसकी खबर लगी तब तक Dhirubhai काफ़ी प्रॉफ़िट कमा चुके थे।

कुछ टाइम बाद यमन में चल रहे आज़ादी के आंदोलन के कारण 1958 में Dhirubhai को वापस भारत आना पड़ा। भारत वापस आकर उन्होंने अपने चचेरे भाई Champaklal Damani के साथ मसालों का काम शुरू किया और उन्होंने अपनी कंपनी का नाम Reliance Commercial Corporation रखा, जो एक 350 sq. फ़ीट जगह के साथ 1 टेलीफोन, 1 टेबल और 3 चेयर्स के साथ मस्ज़िद बुंदेर बॉम्बे में शुरू हुई।

उसके बाद Dhirubhai ने अपने कुछ रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ मिलकर एक टीम बनाई ताकि वो अपने काम को आगे बढ़ा सकें। 1965 में उनके भाई Champaklal के साथ उनकी पार्टनरशिप टूट गयी और Dhirubhai ने खुद उस बिज़नेस को संभाला। Dhirubhai अपने काम को बढ़ाना चाहते थे इसलिए उन्होंने 1966 में नरोदा गुजरात मे पॉलीस्टर मटेरियल

बनाने का काम शुरू किया, जिसका नाम विमल रखा गया और कुछ ही सालों में विमल एक बड़ा भारतीय ब्रांड बन चुका था।

टेक्सटाइल मार्केट में अपनी पकड़ बनाने के बाद Dhirubhai ने 1977 में Reliance IPO जारी किया जिसमें 58 हज़ार से ज़्यादा इन्वेस्टर्स ने अपना पैसा इन्वेस्ट किया, रिलायंस इंडस्ट्रीज़ के प्रोडक्ट्स ने मार्केट में इतना विश्वास बना लिया कि जो भी उनकी कंपनी में पैसा इन्वेस्ट करेगा उनको मुनाफ़ा होगा ही होगा। IPO जारी करने के बाद ही उन्हें अपने बिज़नेस के लिए काफ़ी बड़ा इन्वेस्टमेंट मिल चुका था।

उसके बाद Dhirubhai ने हर फ़ील्ड में अपने बिज़नेस को बढ़ाना शुरू किया, Dhirubhai ने पेट्रोकेमिकल्स, टेलीकॉम, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रिसिटी और

कपड़े के साथ-साथ कई क्षेत्र में अपने बिज़नेस को बढ़ाया।

अपनी सफ़लताओं के बीच Dhirubhai पर सरकार की पॉलिसी को न मानकर अपने अनुसार बदलने का आरोप भी लगा था क्योंकि उनके पास इतना पैसा था कि पॉलिसीज़ को बदलना आलोचना करने वालो की नज़रों में आसान बात लग रही थी, आलोचना और बिज़नेस के तनाव के कारण उन्हें ब्रेन स्ट्रोक का सामना करना पड़ा और उसके बाद Dhirubhai ने अपने काम से रिटायरमेंट ले लिया और बिज़नेस की डोर अपने दोनों बेटों Mukesh Ambani और Anil Ambani के हाथों में दे दी।

जून 2002 को उन्हें दूसरी बार ब्रेन स्ट्रोक हुआ जिसके कारण उन्हें मुम्बई के ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में एडमिट करवाया और 12 दिन एडमिट रहने के बाद 6 जुलाई को Dhirubhai Ambani ने आख़िरी साँस ली।

उनकी डेथ के वक़्त उनकी नेट वर्थ 2.9 बिलियन डॉलर थी, 1988 में Dhirubhai की बायोग्राफी "The Polyster Prince" लिखी गयी जो बाद में कानूनी कार्यवाही के बाद बेन करवा दी गयी। 2007 में उनकी जीवनी पर आधारित "Guru" नाम की मूवी भी बन चुकी है, 2016 में उन्हें मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

"Only when you dream it you can do it."

- Dhiru Bhai Ambani

#51. Amancio Ortega

Amancio Ortega एक बिलेनियर हैं जो दुनिया की सबसे बड़ी क्लोथिंग कंपनी ZARA के फाउंडर हैं, जिन्होंने दर्जी का काम करके आज ख़ुदको दुनिया के सबसे अमीर लोगों की लिस्ट में पहुँचाया और अपनी कंपनी ZARA को दुनिया की सबसे वैल्युएबले क्लोथिंग कंपनी बनाया।

Amancio Ortega का जन्म 28 मार्च 1936 को Busdongo De Arbas, स्पेन में एक ग़रीब परिवार में हुआ, उनके पिता Antonio Ortega रेलवे में मजदूर थे, जब Amancio 14 साल के थे तब उनके पिता के ट्रांसफर के कारण उन्हें स्कूल छोड़नी पड़ी और वो Gala नाम के एक शर्ट बनाने वाले के यहाँ काम करने लगे, जहाँ से उन्होंने हाथ से शर्ट बनाना सीखा।

Amancio अपने खाली समय मे अपनी बहन की दुकान पर आए कपड़ो के ऑर्डर्स को बनाकर अपने टाइम को पूरा करते थे और कुछ साल काम करने के बाद उन्होंने 1972 में शहर की कुछ औरतों का ग्रुप बनाकर Confecciones Gao नाम को फर्म बनाई जो स्टार्टिंग में Bathrobes बनाने के काम करती थी, लगभग 3 साल तक Bathrobe का काम करने के बाद Amancio ने काम को एक्सपैंड करने के लिए 1975 में अपनी वाइफ़

Rosalia Mera के साथ Galicia, स्पेन में ZARA नाम से एक स्टोर खोली, जिसमें वो फैशनेबल Apparel सेल करते थे।

उन्होंने Zorba The Greek नाम की मूवी से इंस्पायर होकर पहले अपनी स्टोर का नाम Zorba रखना चाहा, लेकिन उनकी स्टोर से कुछ ही दूरी पर Zorba नाम से एक Bar था इसलिए उन्होंने Zorba के कांसेप्ट को ZARA में चेंज कर दिया।

1980 का दौर आते-आते Amancio ने बिज़नेस में कई चेंजेज़ किये, उन्होंने डिज़ाइनिंग और मैन्युफैक्चरिंग में कई तरह के बदलाव किए, उन्होंने फ़ैशन डिज़ाइनर के ग्रुप को हायर करना शुरू किया जो पहले उनकी सिस्टर और वाइफ़ किया करती थी।

1985 में Amancio ने ZARA को वर्ल्डवाइड फैलाने के लिए इंडिटेक्स नाम की कंपनी बनाई। ZARA ने स्पेन से

बाहर अपना पहला स्टोर 1988 में Porto, Portugal में खोला। उनकी ब्रांड दिनों-दिन फ़ेमस होती जा रही थी और Amancio ने ZARA में कपड़ो के साथ फुटवियर, एक्सेसरीज़ और किड्स कैटेगिरी में भी प्रोडक्शन शुरु किया।

1986 में उनका Rosalia Mera से तलाक हो गया, जिनसे उन्हें एक बेटा और दो बेटियाँ हुई थी और 2013 में Rosalia की 69 की उम्र में मौत हो गयी, 2001 में Amancio ने Flora Perez Marcote से शादी कर ली।

सन 2000 तक ZARA दुनिया की सबसे बड़ी ब्रांड में से एक बन चुकी थी लेकिन अब तक Amancio Ortega के बारे में किसी को ज़्यादा पता नहीं था क्योंकि वो कभी भी पब्लिक अपीयरेंस में नहीं आये थे। 2001 में जब

इंडिटेक्स ने IPO जारी किया तब पहली बार Amancio को लोग जानने लगे।

Amancio की लाइफ़ काफ़ी इंस्पायरिंग है लेकिन उनकी स्टोरी ज़्यादा लोगों को न मालूम होने के पीछे उनकी प्राइवेट लाइफ़ है। अपनी जर्नी स्टार्ट होने से लेकर बिलेनियर बनने तक उन्होंने सिर्फ़ तीन बार जर्नलिस्ट को अपना इंटरव्यू दिया। 2016 में Amancio कुछ दिनों के लिए दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति भी बन गए थे।

"Die of success? Give me a break! We've only just started!"
- Amancio Ortega

#52. Carl Benz

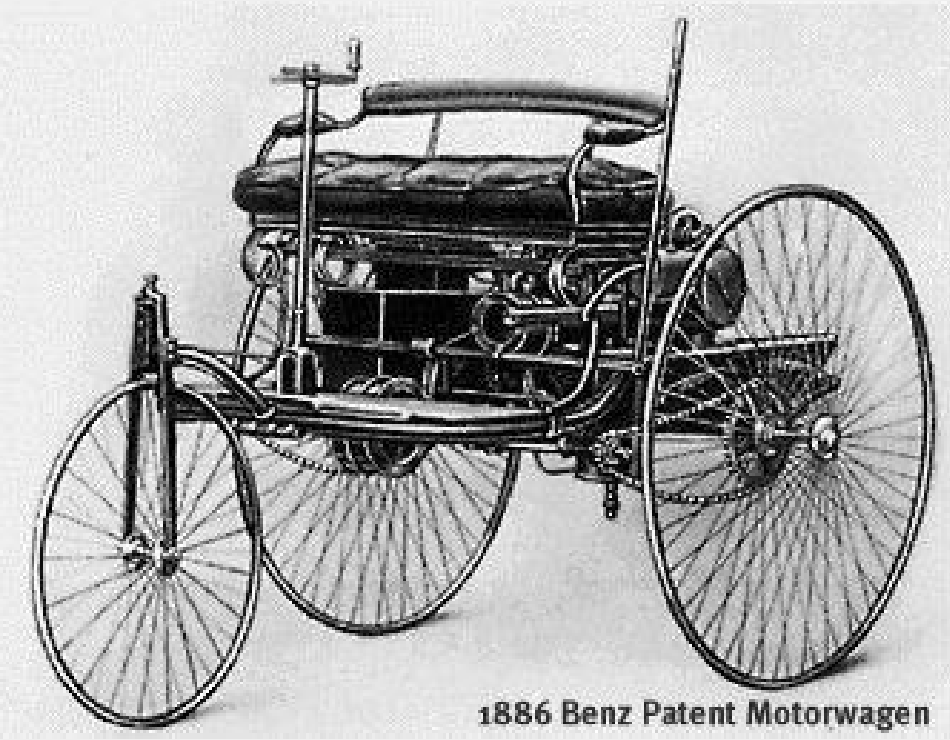

Carl Benz को गाड़ियों का जनक माना जाता है, जिन्होंने 1885 में पहली बार ऐसी Tricycle बनाई जो हॉर्सलेस थी (बिना घोड़े की) जिसे एक गैसोलीन इंजन की हेल्प से चलाया गया था। आज के दौर की लक्ज़री कार ब्रांड Mercedes-Benz भी 1926 में Carl Benz ने ही फाउंड की थी।

Carl Friedrich Benz का जन्म 25 नवंबर 1844 को Baden-Wurttemberg, Germany में हुआ था, जब Carl 2 साल के थे तब उनके पिता की डेथ हो गयी थी

और वो उनकी माँ के साथ ग़रीबी में ही बड़े हुए। 1859 में उन्होंने Carlsruhe Polytechnic जॉइन किया और 1864 में उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन कम्पलीट किया।

1872 में Carl Benz ने Bertha Ringer से शादी की, Bertha एक अमीर घर से बिलोंग करती थी, जो Carl को शादी से पहले फाइनेंशियल सपोर्ट करती थी, शादी के बाद उन्होंने Bertha से कुछ धन लेकर पार्टनरशिप में एक फैक्ट्री डाली लेकिन लेकिन पार्टनर्स के साथ कुछ डिस्प्यूट्स को लेकर 1883 में Carl ने वो कंपनी छोड़ दी।

उसी साल उन्होंने Bertha के दहेज की मदद से Mannheim में Benz & Co. की स्थापना की, उनकी कंपनी स्टार्टिंग में सिर्फ़ गैसोलीन इंजन बनाती थी लेकिन उनके माइंड में कुछ ऐसा इन्वेंशन चल रहा था जो दुनिया को पूरी तरह से बदल देने वाला था।

1885 में उन्होंने दुनिया की पहली कार बनाई, जो गैसोलीन से चलती थी। Carl को साइकिल चलाने का बहुत शौक था इसलिए उन्होंने अपनी पहली कार एक Tricycle को लेकर बनाई। Carl के इस Tricycle Automobile को Motorwagen नाम दिया गया, जिस पर एक बार में दो लोग सवारी कर सकते थे लेकिन इस कार को बनाने से पहले Carl ने Tricycle में यूज़ होने वाली दूसरी चीज़ों को भी इन्वेंशन किया जैसे इलेक्ट्रिक इग्निशन, स्पार्क प्लग्स और क्लच।

जब Carl अपने Tricycle के इन्वेंशन में लगे थे उसी दौरान बाकी के इन्वेंटर भी "हॉर्सलेस कैरिज" बनाने में लगे थे लेकिन Carl ने तेज़ी दिखाते हुए अपने काम को उनसे काफ़ी जल्दी अंजाम दिया। बाकी इन्वेंटर एक पहले से बने कार्ट (घोड़ा बग्घी) पर इंजन को जोड़कर उसे कार का रूप दे रहे थे लेकिन Carl ने अपनी कार को पूरा अपने

हिसाब से डिज़ाइन किया था। 29 जनवरी 1886 को Carl को अपनी गाड़ी का पेटेंट नंबर 37435 मिला।

1888 में Carl ने अपनी कार की फर्स्ट सैलिंग स्टार्ट की 1893 में उन्होंने फोर व्हील कार सेल करना शुरू किया, ये वही थ्री व्हील वाली कार थी जिसे बाद में फोर व्हील में अपग्रेड करके बेचा गया। 1894 से 1901 के बीच Carl ने 1200 कार का प्रोडक्शन किया और ये दुनिया की फर्स्ट प्रोडक्शन कार थी।

हालांकि 1900 के दौर में दूसरे मैन्युफैक्चरर मार्केट में आ गए थे जो Carl की कार से काफ़ी सस्ती और ताक़तक़र गाडियाँ मार्केट में बेच रहे थे। 1903 में Carl ने अपनी बनाई कंपनी में ध्यान देना बंद कर दिया और अपने बेटों के साथ उन्होंने न्यू डिज़ाइन कार डेवेलोप करना शुरू किया।

1926 में Benz & Company, Gottlieb Daimler Company के साथ मर्ज हो गयी, जो जर्मनी की लीडिंग

मैन्युफैक्चरिंग कार कंपनी थी और कंपनी का नाम Mercedes-Benz पड़ गया (Mercedes नाम Daimler कंपनी के एक डीलर को बेटी का नाम था)। Daimler और Benz की कंपनी आपस में मर्ज तो हो गयी और दोनों जर्मनी में ही रहते थे लेकिन दोनों एक दूसरे से कभी नहीं मिले थे।

Mercedes के Daimler में मर्ज होने के तीन साल बाद Carl Benz की 84 साल की उम्र में 4 अप्रैल 1929 को Ladenburg, Germany में मौत हो गई।

जब Carl ने शुरुआत करनी चाही तब उनके पास कुछ भी नहीं था, Carl ने अपनी वाइफ़ के बारे में लिखा था कि " जब मैं अपने करियर में नीचे गिरता जा रहा था तब एक ही इंसान ने मुझ पर भरोसा किया था और वो Bertha थी और ये Bertha का साहस था जो उसने मुझे नई आशा खोजने में सक्षम बनाया"।

Bertha ही थी जिसने Carl के इन्वेंशन पर भरोसा किया और अगस्त 1888 में Carl के इन्वेंशन मॉडल थ्री को 66 मील के रूट पर पहली बार लेकर गयी थी, इस ड्राइव ने Carl की हिम्मत को बहुत बढ़ावा दिया। आज के टाइम में Carl को ज़्यादा लोग नहीं जानते लेकिन हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि Carl की वजह से ही आज ट्रांसपोर्टेशन इतना आसान हो चुका है, उनका इन्वेंशन दुनिया को एक नए आयाम तक लेकर गया था।

"The Best or Nothing At All"
- Carl Benz

#53. Usain Bolt

Usain Bolt दुनिया के सबसे तेज़ दौड़ने वाले व्यक्ति हैं, जिन्होंने ओलिंपिक और बाकी चैंपियनशिप में 21 बार हिस्सा लेकर 19 में गोल्ड मेडल जीता है। उनकी इस जीत ने उन्हें दुनिया का सबसे तेज़ और महान स्प्रिंटर बना दिया।

Usain Bolt का जन्म 21 अगस्त 1986 को Montego Bay Jamaica में हुआ था। उनके पिता Jamaica में

एक छोटे से गाँव में एक ग्रोसरी स्टोर चलाते हैं, वो अपनी जवानी के टाइम लोकल क्रिकेट टीम में फ़ास्ट बॉलर थे। वो बचपन से फुटबॉल टीम में जाना चाहते थे लेकिन उनके कोच ने कभी उन्हें रेस ट्रैक से दूर हटने ही नहीं दिया।

उन्होंने अपनी सबसे पहली रेस 2002 वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में की और 200 मीटर की रेस में गोल्ड मेडल जीता और दुनिया के यंगेस्ट मेल वर्ल्ड जूनियर चैंपियन बन गए उस टाइम उनकी उम्र 15 साल थी।

Bolt जब 16 साल के हुए तब उन्होंने अंडर 19 में 200 मीटर की रेस में रिकॉर्ड बनाया जो 20.13 सेकंड था और 17 की उम्र में 19.93 सेकंड का रिकॉर्ड बनाया और वो 20 सेकंड का रिकॉर्ड तोड़ने वाले दुनिया के पहले टीनएजर बन गए। 2004 में एथेंस ओलंपिक में वो अपने पैर की चोट के कारण आगे नहीं आ सके और 2005 में वर्ल्ड ट्रैक-एंड-फ़ील्ड चैंपियनशिप में सबसे लास्ट आये लेकिन

उनकी इस चोट से उनके करियर के प्रति डेडिकेशन में ज़रा भी कमी नहीं आयी।

रेस के फ़ील्ड में एक अवधारणा थी कि लंबा स्प्रिंटर एक रेस को अच्छे से शुरू नहीं कर पाता और Bolt की हाइट भी लंबे स्प्रिंटर में आती है लेकिन उन्होंने इस अवधारणा को तोड़ दिया और अपनी प्रैक्टिस के दम पर वर्ल्ड चैंपियनशिप में 200 मीटर रेस में सिल्वर मेडल जीता। उससे पहले बोल्ट 200 मीटर की रेस में ज़्यादा हिस्सा लिया करते थे लेकिन फिर उन्होंने अपने कोच को 100 मीटर की रेस करने के लिए मना लिया और प्रैक्टिस शुरू कर दी।

उन्होंने अपनी पहली प्रोफेशनल रेस में 100 मीटर की रेस 10.03 सेकंड में कम्पलीट की और 3 मई 2008 को उन्होंने 100 मीटर की रेस को 9.76 सेकंड में पूरा कर दिखाया हालांकि उन्होंने 10 सेकंड बैरियर तोड़ दिया था लेकिन उन्होंने अभी भी फ़ास्टेस्ट पर्सन का रिकॉर्ड नहीं

तोड़ा था (10 सेकंड बैरियर एक माइंड बैरियर था कि 100 मीटर की रेस को 10 सेकंड से कम समय में पार नहीं किया जा सकता)।

फ़ाइनली उसके 4 हफ़्तों बाद Bolt ने वर्ल्डस फ़ास्टेस्ट पर्सन का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया, उन्होंने 100 मीटर की रेस 9.72 सेकंड में पूरा करके वर्ल्ड चैंपियन Tyson Gay को हरा दिया

फ़ाइनली 2008 ओलंपिक गेम्स के दौरान Bolt अमेरिका के Carl Lewis के बाद पहले व्यक्ति बन गए थे जिन्होंने 100 मीटर (9.69 seconds), 200 मीटर (19.30 seconds) और 4×100 मीटर (37.10 seconds) में दौड़ कर एक वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। उनका 200 मीटर की रेस जीतने का मार्जिन 0.66 का था जो आज तक का सबसे बड़ा विनिंग मार्जिन है।

2009 की वर्ल्ड चैंपियनशिप में उन्होंने 100 मीटर की रेस 9.58 सेकंड में पूरा करके अपना ही बनाया हुआ रिकॉर्ड तोड़ दिया और उसके 4 दिन बाद 200 मीटर की रेस में 0.11 सेकंड के अंतर से अपना ही 200 मीटर का पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया।

2011 की वर्ल्ड चैंपियनशिप में सबसे ज़्यादा पसंद किए जाने वाले स्प्रिंटर Usain Bolt ही थे, हालांकि वो किसी कारण से 100 मीटर की रेस से बाहर हो गए थे लेकिन उन्होंने 200 मीटर और 4×100 मीटर की रेस में गोल्ड मेडल पर कब्ज़ा कर लिया 2013 में उन्होंने 100 मीटर, 200 मीटर और 4×100 मीटर को तीनों रेस में गोल्ड मेडल जीता।

2015 वर्ल्ड चैंपियनशिप में Bolt ने फिर से 100, 200 और 4×100 मीटर की रेस में गोल्ड मेडल जीता। 2016 Rio De Janeiro ओलंपिक गेम्स में उन्होंने अपने आप

को दुनिया का सबसे बेस्ट ओलंपिक स्प्रिंटर बना दिया क्योंकि उन्होंने उससे पहले हुए 2 ओलंपिक में भी गोल्ड मेडल जीता था और 2016 में उन्होंने 3rd बार गोल्ड मेडल जीता था।

अपनी मेहनत के बल पर एक ग़रीब परिवार से आने के बाद अपने आप को एक वर्ल्ड चैंपियन बनाया, 2010 में Bolt ने *"My Story: 9:58 The Worlds Fatstest Man"* लिखी जिसे 2012 में *"The Fastest Man Alive:The True Story Of Usain Bolt"* नाम से दुबारा निकाला गया।

उन्हें अपने करियर और काबिलियत को देखते हुए Fastest Man Alive का दर्जा दिया गया, 2017 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में 100 मीटर की रेस में उन्होंने ब्रॉन्ज़ मेडल जीता और वो उनके करियर की आखिरी रेस थी उसके बाद उन्होंने सन्यास ले लिया।

“The difference between the impossible and the possible lies in determination.”

- Usain Bolt

#54. Che Guevara

Che Guevara एक मार्क्सवादी (supporter of theories of Karl Marx's) क्रांतिकारी थे, जिनका क्यूबा की क्रांति के दौरान एक मैन रोल था। अपनी पढ़ाई

के दौरान साउथ अमेरिका की ग़रीबी को देखकर उन्होंने अपनी पुरी लाइफ़ राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दी, जिन्हें लोगों के हित में लड़ते हुए एक दर्दनाक मौत मिली।

Che Guevara का जन्म 14 जून 1928 Rosario, Argentina में एक मिडिल क्लास फ़ैमिली में हुआ था, बचपन में वो अस्थमा से पीड़ित थे, लेकिन फिर भी वो अपने आप को एक एथेलेट के रूप में दुनिया के सामने लाये और अपनी जवानी से ही उन्होंने पॉलिटिक्स में इंटरेस्ट लेना शुरू कर दिया और एक पॉलिटिक्स ग्रुप में शामिल हो गए जो Juan Perón के ख़िलाफ़ था। अपनी हाईस्कूल में आनर्स की पढ़ाई के करने के बाद Che ने Univerisity Of Buenos Aires में मेडिसिन्स की पढ़ाई की।

1951 में Che ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और अपने दोस्त के साथ साउथ अमेरिका टूर पर चले गए, साउथ अमेरिका में लोगों की ग़रीबी और उनकी बुरी हालत देखकर उन्होंने

कॉलेज डिग्री कम्पलीट करने की ठान ली ताकि वो डॉक्टर बनकर लोगों की मदद कर सके और 1953 में उन्होंने फिर से कॉलेज जॉइन की और अपनी डिग्री कम्पलीट की।

डिग्री के बाद उनका इंटरेस्ट मार्क्सवादी की और बढ़ने लगा और उन्होंने मेडिसिन का काम छोड़ दिया क्योंकि उनको अब तक ये लग चुका था कि सिर्फ़ क्रांति ही साउथ अमेरिका के लोगों को न्याय दिला सकती है और वो 1953 Guatemala एक यात्रा पर चले गए।

1955 में उनकी शादी Hilda Gadea से हुई और वो मैक्सिको रहने चले गए, जहाँ उनकी मुलाक़ात Fulgencio Batista की गवर्नमेंट गिराने का प्लान बनाने वाले क्यूबा के दो क्रांतिकारी भाई Fidel Castro और Raúl से हुई। 2 दिसंबर 1956 को Che और बाकी के क्रांतिकारी क्यूबा के लिए निकले तो उन पर हमला हुआ जिसमें बहुत लोगों की जान गई लेकिन Che बच गए,

हमले के बाद उन्होंने Fulgencio Batista के ख़िलाफ़ हमला करने वाली उनकी गोरिल्ला आर्मी का नेतृत्व किया और उनके सलाहकार बनकर रहे।

जनवरी 1959 में Fidel Castro ने क्यूबा पर अपना कब्ज़ा कर लिया और Che को La Cabaña जेल का चार्ज दे दिया, जब Che उस जेल के इंचार्ज थे तब उन्होंने एक्स्ट्रा जुडिशल आर्डर से (खुद के दम पर फैसला लेना) 144 लोगों को मार दिया था, बाद में Che क्यूबा के नेशनल बैंक के प्रेज़िडेंट बने और अमेरिका के साथ जितने भी ट्रेड रिलेशन थे उन्हें सोवियत यूनियन में शिफ़्ट किया।

11 दिसंबर 1964 को Che ने यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली को संबोधित किया और Puerto Rico के लोगों के प्रति पूरा समर्थन दिखाया और गोरिल्ला वॉर के लिए लोगों को तैयार करने के लिए Congo देश की यात्रा की और लोगों को वॉर के लिए प्रशिक्षित किया लेकिन

उनका ये प्रयास असफल रहा। 1960 के दशक में वो क्यूबा के एम्बेसडर भी थे ताकि वो दूसरे देशों की यात्रा कर सके और क्यूबा के रिलेशन दूसरे देशों के साथ अच्छे कर सके।

क्यूबा वापस आने के बाद 1966 में वो Bolivia के लिए अपने एक गोरिल्ला आर्मी के साथ लोगों को क्रांति के लिए उकसाने के लिए निकल गए लेकिन उसमें उन्हें ज़्यादा सक्सेस नहीं मिली क्योंकि उनके साथ बहुत कम सपोर्टर थे।

9 अक्टूबर 1967 को Che और उनकी गोरिल्ला आर्मी के कुछ लोगों को Bolivia आर्मी के द्वारा पकड़ लिया गया, उनको पकड़ने के बाद उनके दोनों हाथों को काट दिया गया और बहुत टाइम तक टॉर्चर करने के बाद उनकी हत्या कर दी गयी।

Che की मौत के बाद उन्हें एक लीजेंडरी पोलिटिकल फिगर माना गया, उनके नाम को हमेशा विरोध, क्रांति और समाजवाद के साथ जोड़ा जाता है, उन्होंने जेल में जिस तरह से 144 लोगों को मरवाया था उसके कारण वो कुछ लोगों के लिए बुरे व्यक्ति भी माने गए।

हालांकि उनके कदम हिंसक और आक्रामक थे लेकिन Che ने अपने जीवन मे जो भी किया वो लोगों की आज़ादी और लोगों के हक़ के लिए किया, उनकी लाइफ़ के ऊपर कई मूवीज़ और बुक्स लिखी गयी, जिसमें से The Motorcycle Diaries काफ़ी फ़ेमस है।

"The revolution is not an apple that falls when it is ripe. You have to make it fall" - Che Guevara

#55. Neil Armstrong

Neil Armstrong एक एयरोस्पेस इंजीनियर, नेवी ऑफिसर, टेस्ट पायलट और प्रोफेसर थे जो चाँद की सतह पर पहला कदम रखने वाले पहले इंसान थे, जिनका इंटरेस्ट उन्हें एविएशन से नेवी तक और नेवी से सीधा चाँद तक ले गया।

Armstrong का जन्म 5 अगस्त 1930 को Wapakoneta, Ohio में हुआ था, वो Stephen Koenig Armstrong और Viola Louise Engel के तीन बच्चों में सबसे बड़े थे, उनके पिता Stephen एक स्टेट ऑडिटर थे। Niel का एविएशन के प्रति इंटरेस्ट तब पैदा हुआ जब उन्होंने 6 साल की उम्र में पहली बार प्लेन का सफर किया था।

वो अपनी स्कूल बॉयज़ स्काउट में भी काफ़ी एक्टिव थे जहाँ उन्हें ईगल स्काउट की रैंक मिली थी, जब Neil 16 साल के थे तब वो लाइसेंस्ड पायलट बन चुके थे और 17 साल की उम्र में नावल एयर कैडेट थे।

1950 में जब Neil Purdue University, Indiana में एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे तब कोरियन वॉर के दौरान उन्हें पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी और युद्ध के लिए जाना पड़ा, जहाँ उन्हें तीन गोलियाँ लगी

थी और उनकी बहादुरी के लिए उन्हें तीन मेडल्स भी मिले थे।

वॉर से वापस आने के बाद उन्होंने फिर से अपनी कॉलेज जॉइन की और 1955 में उन्होंने अपनी डिग्री कम्पलीट की और वो National Advisory Commitee For Aeronautics (NACA) के लिए सिविलियन रिसर्च पायलट बन गए (NACA को अभी NASA के नाम से जाना जाता है), जहाँ उन्होंने 1100 घंटे से भी ज़्यादा की फ्लाइट की।

1962 में Armstrong ने एस्ट्रोनॉट्स का ग्रुप जॉइन किया, 16 मार्च 1966 को Armstrong Gemini 8 के कमांडर पायलट के तौर पर David R. Scott के साथ स्पेस डॉकिंग कर रहे थे और कुछ ख़राबी के कारण उन्होंने Gemini 8 की इमरजेंसी लैंडिंग करवाई और David R. Scott के साथ प्रशांत महासागर में छलांग लगाई।

16 जुलाई 1969 को Neil Armstrong अपने दो साथी Edwin E. Aldrin Jr. और Michael Collins के साथ अपोलो 11 में चाँद पर जाने के लिए रवाना हुए और उसके 4 दिन बाद रात के 10:56 बजे (ईस्टर्न डेलाइट टाइम) उन्होंने चाँद की सतह पर कदम रखा और चाँद पर कदम रखने वाले पहले इंसान बन गए।

चाँद पर पहुँचने के बाद वो इतने एक्साइटेड थे कि उन्हें वहाँ जाकर एक बयान देना था लेकिन वो उस बयान में से एक वर्ड भूल गए थे और वो बयान ये था - "That's one small step for [a] man, one giant leap for mankind".

21 जुलाई 1969 को चाँद पर 21 घंटे 36 मिनट्स बिताने के बाद Armstrong अपने साथियों के साथ पृथ्वी के लिए रवाना हुए और 24 जुलाई को दोपहर 12:51 बजे वो प्रशांत महासागर में उतरे, वायरस से अफ़ेक्ट होने की

संभावना के कारण Armstrong और उनके दो साथियों को 18 दिन के लिए क्वारंटाइन किया गया। उसके बाद उन्होंने 21 देशों की यात्रा की जहाँ उनका खूब स्वागत किया गया।

1971 में Armstorng ने NASA से रिज़ाइन ले लिया था, अपोलो 11 के मिशन के बाद Armstrong खुद को पब्लिक लाइफ़ से दूर ले गए और 1971 से 1979 तक University Of Cincinnati (Ohio) में एयरोस्पेस इंजीनियर के प्रोफेसर के पद पर रहे।

1979 के बाद Armstrong कुछ कंपनीज़ में डायरेक्टर के पद पर रहे और 1982 से 1992 तक एविएशन कंपनीज़ में रहे, उसी समय के दौरान वो 1977 से 2002 तक AIL सिस्टम्स के भी डायरेक्टर थे जो मिलिट्री के लिए इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट्स बनाती थी। 2002 में रिटायरमेंट के बाद वो Ohio अपने घर ही रह रहे थे और 25 अगस्त

2012 को दिल का दौरा पड़ने से 82 साल की उम्र में उनकी मौत हो गयी।

उन्हें अपने बेहतरीन काम और राष्ट्र की सेवा के लिए 1969 में प्रेज़िडेंशियल मेडल ऑफ फ़्रीडम से नवाज़ा गया था जो अमेरिका का सर्वोच्च पुरुष्कार है। 1978 में उन्हें स्पेस की दुनिया मे अपने कॉन्ट्रिब्यूशन के लिए Congressional Space Medal Of Honor और 2009 में Congressional Gold Medal से सम्मानित किया गया।

“That's one small step for a man, one giant leap for mankind.”
- Neil Armstrong

इस बुक को लिखने में, अच्छे से रिसर्च करके, सोच कर लिखने में 6 महीने से ज़्यादा लगे, अगर आपको ये मेहनत पसंद आई तो निचे लिंक पर क्लिक करके रिव्यु देकर मेरा हौसला बढ़ा सकते हो

>>Review this book<<

Follow writer on Instagram:
@indian_entrepreneur